रजत जयन्ती और हमारा कर्तव्य.

आज दिवाली का पवित्र दिन है। प्रत्येक कुलवासी का हृदय शुद्ध संकल्पों, पवित्र भावनाओं और नवीन मनोरथों से भरपूर है। इस अवसर पर हम अपने पाठकों का ध्यान उस ओर आकर्षित करना चाहते हैं — जिस ओर आज काल के आरम्भ से हमारी शक्तियां लगी हुई हैं — गुरुकुल रजत जयन्ती की ओर। रजत-जयन्ती में ४, ५ मास शेष हैं। इस उत्सव की सफलता बहुत कुछ हमारे पर ही निर्भर है। यदि सम्मेलनों की सफलता से उत्सव सफल कहलाता है तो अधिकांश सम्मेलनों का भार हमारे पर है। हमारी सभायें भी अलग अलग अपने अधिवेशन करेंगी पर उनको सफल बनाने के लिये आवश्यक होगा कि हम अभी से तय्यारी करें क्योंकि परीक्षाओं के बाद फिर छुट्टियों में हमें जाना होगा अतः समय तैयारी का अवसर ही न मिलेगा। विशेषतः हम २, ३ बातों की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

I. गुरुकुल के उत्सव पर प्रदर्शिनी होगी और अवश्य होगी। उसमें क्या वही पुराना सामान रखकर दिखलाया जावेगा या कुछ नया भी। नया सामान न लाइये आयेगा नहीं तो नवीनता कैसे लाई जावेगी। इसके लिये हमें अपने हाथों को हिलाना चाहिये अपने ज्ञान को, दस्तकारी को और अपने विज्ञान के पाण्डित्य को दिखलाना चाहिये।

II. इस अवसर पर विविध सम्मेलनों की आयोजना होगी अतः कवियों को — निबन्ध लेखकों को और वक्ताओं को अभी से तैयारी करनी चाहिये। आज हमारा कुल वक्ताओं और कवियों से दरिद्र हो रहा है, आवश्यकता है कि कुल के भावुक व कवि इधर ध्यान दें। हमारा प्रत्येक भाई से अनुरोध है कि वक्ता बनने की कोशिश करे और दूसरों को सहायता प्रदान करे।

अन्त में हम एक प्रस्ताव करना चाहते हैं कि उत्सव पर — उत्सव के दिनों में नहीं — ऐसेम्बली का अधिवेशन किया जाय। मार्च के मास में दिल्ली में ऐसेम्बली का अधिवेशन होगा अतः ऐसेम्बली के प्रमुख सदस्यों को भी आसानी से निमन्त्रित किया जा सकेगा। क्या वार्षिक समिति के कार्यकर्ता इधर ध्यान देंगे?

पत्र लेख और चित्र संग्रह के काम चल रहे हैं इसलिये इनके बारे में कुछ कहना व्यर्थ होगा। ये पंक्तियां लिखते हुए हम उस महालक्ष्मी देवी को नहीं भूलते — जिसकी पूजा का यह दिन है। इसीलिये हम आपका ध्यान इधर खींच रहे हैं। कुल का गौरव हम में है यह यदि हम अनुभव करेंगे तब इन दोनों कठिनाइयों को तर सकेंगे

डायरी के पत्रे

(२)

दीनापुर स्टेशन से आते ही वर्षा ऋतु ने स्वागत किया। घर पहुंचते ही इसने विकराल रूप धारण किया। दो मिनिट पहिले की सूखी सड़कें जलमग्न होगईं। सड़क के साथ नालियां भी बह उठीं। इस ऋतु में स्वभावतः आदमी का मन शान्त होता है फिर बिहार के लोगों के दिलों के संबन्ध में यह आशा करना कि ये शान्त होंगे यह अनुचित न था। इस आशा का कारण था पत्रों के कालम जो अन्तःस्थिति न देखकर जो ऊपर का चेहरा मात्र देखते हैं। ज़मीन के नीचे बारूद छिपी हो और पर ऊपर साफ़ मैदान होना चाहिये, ज़मीन ऊँची नीची और कंकरीली न होनी चाहिये। पत्रों के अध्ययन से असली हाल का ज्ञान प्राप्त करना कठिन है। क्योंकि शेक्सपीयर के शब्दों में शब्दों का लिखना हृदय के आन्तरिक भावों का छिपाना है।" यह वचन किसी और जगह के लिये सत्य हो या नहीं पर बिहार के लिये सर्वथा सत्य है।

× × × ×

कलकत्ते के विस्फोट की चिनगारियां पटने पहुंचीं। पटना जब सब प्रकार का माल कलकत्ते से मंगाता है तब अशान्ति की चिनगारियों को भी लिया तो क्या आश्चर्य। कलकत्ते की लाठियों की आवाज़ और छूरे की चमक का उच्चारण के पटने पहुंचने की देर थी कि बेशपर मारे गये आये हुए मुसलमान नौकर हिन्दू मालिकों के घर, दुकान और मिलों से निकाल दिये गये। यदि किसी प्रकार ने किसी मुसलमान कम्पाउण्डर को रक्खा तो इसलिये कि मुसलमान रोगी भी उस की दुकान में आवें। यहां हृदय की शुद्धता या भावों की उच्चता काम नहीं कर रही थी अर्थनीति काम कर रही थी। हिन्दुओं ने मुसलमानों के त्यौहार में और मुसलमानों ने हिन्दुओं के त्यौहारों में भाग लेना बन्द कर दिया। यदि कोई हिन्दू किसी मुस्लिम त्योहार को देखने जावे तो जाने से पहिले अपने सजातियों की लाड़ और डांट डपट सुनने के लिये तैयार रहना चाहिये। दुर्भाग्य वश इस नियम की जानकारी न होने से मुसलमानों की 'ताज़िया' देखने मैं गया। उसी दिन मुहर्रम क्योंकि त्यौहार था। मुझ को वहां खड़ा देखकर वहां से गुज़रने वाले समाजी परिचित सज्जनों ने समाज में चलने के लिये कहा उनके इस कथन का अभिप्राय मैं उस दिन समझ नहीं सका था अतः मैं वहां ही खड़ा रहा। उन लोगों ने भी ज़्यादा आग्रह करना उचित न समझा क्योंकि मैं थोड़े दिनों का मेहमान था। मैंने कभी इसको पहिले कभी न देखा था। थोड़े दिनों के बाद इसका रहस्य मुझे पता लगा। पर इसके बाद से इसका मौका नहीं आया जब मैं भी इस नियम का पालन करता।

इन भावों ने एक कारण उत्पन्न किया है वह यह है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा अपने जातीय त्यौहारों में सम्मिलित होता है। सम्मिलित ही नहीं होता पर क्रियात्मक भाग भी लेता है। बड़े बड़े रईस गतका, बनेठी इन त्यौहारों में छोटे २ आदमियों के साथ खेलते हैं। बिहार में मुसलमान केवल २० प्रतिशत हैं

अज्ञात

बापूजी के चरणों में

मेरी तीन [illegible]

(श्री. उपा. देवराज जी सेठी. M.A.)

(३)

बापूजी की जयन्ती के उपलक्ष्य में एक विशाल खादी प्रदर्शनी की आयोजना की गई थी। उस में सब प्रान्तों के भिन्न २ प्रकार के चर्खे, खिलौने, बेलन और लड्डी इत्यादि के नमूने उपस्थित किए गए थे। एक अलमारी में महात्मा जी तथा देश के अन्य नेताओं के हाथ का काता हुआ सूत रखा गया था। पर विशेष उल्लेखनीय भाग छात्रालय के विद्यार्थियों के कार्यों का था। उस में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित एक छोटे आकार का हवाई जहाज रखा हुआ था जिस के अन्दर के सब कल पुरजों का काम घड़ी के पुरजे कर रहे थे। आगे के दो पंख घड़ी को चाबी देने से फिरते थे। एक बार चाबी देने से हवाई जहाज़ २५ चक्कर लगाता था। एक कमरे में तारबर्की का सामान सजा कर रखा गया था। अपनी नई बनाई अक्षरमाला द्वारा दूसरे कमरे में स्थित व्यक्तियों से बातचीत करते थे। इस यंत्र के सब पुरजे विद्यार्थियों के हाथ के बने हुए थे। एक पनडुब्बी बनाने का भी यत्न उन्होंने किया था पर सफल मनोरथ न हो सकने के कारण उस को प्रदर्शनी में नहीं दिखाया गया था। इसी प्रकार और भी चीज़ें विद्यार्थियों की बनाई हुई वहां प्रदर्शित की गई थीं।

सत्याग्रह आश्रम केवल चरखे के पुजारियों का आश्रम नहीं है। यहां पर अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञ तथा शिक्षार्थी और जिज्ञासु यहां विद्यमान हैं। देहरादून निवासी पं. [illegible]जी दस साल से यहां निवास कर रहे हैं। प्रातः ही दोनों समयों के लिए दलिया बना लेते हैं इसी दलिये पर गुज़ारा करते हैं। आश्रम का स्थिर निवासी होने के इच्छुकों को ३ मास तक टट्टियां साफ़ करने की शिक्षा बाधित तौर पर लेनी होती है। परन्तु आप आज तक इस काम को प्रेम से सम्पादन कर रहे हैं। वे इस काम में बड़ा आनन्द अनुभव करते हैं।

गतवर्ष से यूनाइटेड किंगडम के सेनाविभाग के लेफ्टिनेंट कर्नल की पुत्री मिस स्लेड (मीरा बहन) आश्रम में रहती हैं। नवम्बर को उनका एक साल पूरा हो जायगा। और उसी दिन मीरा बहन हिन्दी का उत्तम अभ्यास करने के लिए कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान कर देंगी।

सम्भावना की जाती है कि जनवरी में कुछ दिनों के लिए यहां भी आवे। उस का नाम मीरा बहन ठीक चुन कर रखा गया है। श्रद्धा और भक्ति की वह साक्षात् साकार मूर्ति है। गुजराती और हिन्दी न जानते हुए भी उस की प्रातः चार बजे की और सायंकालीन संध्या में एक भी अनुपस्थिति नहीं रही।

एक गुजराती नवयुवक आश्रम में निवास कर रहे हैं। आप यूरोप खण्ड की यात्रा कर चुके हैं। आप का नाम श्री बालाजी है। आप का नाम विशेष कर उल्लेखनीय है। पहिले आपने पन्द्रह दिन का उपवास रखा था फिर आपने पच्चीस दिन का किया। मेरे वहां होते हुए आपने अपनी आध्यात्मिक उन्नति के उद्देश्य से बापूजी का आशीर्वाद लेकर चालीस दिन का उपवास आरम्भ किया। जिस के खुलने की तिथि पन्द्रह नवम्बर है। उपवास के साथ साथ आपने मौनव्रत भी धारण किया है।

२ अक्तूबर से एक अंग्रेज महिला मिस लेस्टर (Miss Lester) अपने भतीजे मि. हौग (Mr. Hogg) के साथ आश्रम में पधारी हैं। यह महिला अविवाहिता हैं। विगत २५ वर्षों से लन्दन के श्रमजीवियों की आप सेवा कर रही हैं। विद्यापीठ में आप का एक भाषण हुआ था जो कि अत्यन्त प्रभावशाली था। आप अपने को Passivist कहती हैं। यह लण्डन के उस सम्प्रदाय का नाम है जो महात्मा जी के निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) के सिद्धान्त के अनुसार दूसरे से मार खा लेते हैं पर दूसरे पर आप हाथ नहीं उठाते। इस महिला का मेरे पास एक पत्र आया है कि आप २८ अक्तूबर को आश्रम से चल कर दो एक दिन दिल्ली में ठहर कर २ या ३ नवम्बर को गुरुकुल पहुंचेंगी। (आप अपने भतीजे के साथ ४ नवम्बर को यहां आ गई हैं)

एक चीनी युवक जो अब शान्ति नाम से आश्रम में प्रसिद्ध है- जिस का असली नाम मुझे ज्ञात नहीं, पहिले शान्ति निकेतन में रहता था- कुछ मास से बापूजी के पास आश्रम में रहता है। चीनी भाषा का प्रकाण्ड पण्डित है, आश्रम में रह कर हिन्दी और संस्कृत सीख रहा है। खद्दर की भिन्न २ क्रियाओं का भी अभ्यास करता है। उस ने मेरे जाने से पूर्व २० दिन का अनशन व्रत और मौन व्रत धारण किया हुआ था जिस को उस ने मेरे वहां होते हुए ही समाप्त किया। समाप्ति पर महात्मा जी से मिल कर उस ने निम्न मंत्र का जाप किया—

असतो मा सद् गमय, मृत्यो र्मा अमृतं गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। और

उस समय से उस युवक ने

मनसा वाचा और कर्मणा सत्य पालन का व्रत धारण किया। एक पट्टिका पर सुन्दर शब्दों में सुलेख में इस व्रत को लिखकर उसके नीचे अपने हस्ताक्षर किए और साक्षी के तौर पर महात्मा जी ने भी अपने हस्ताक्षर किए। बापू जी का [illegible] सम्भवतः आगामी जनवरी मास में इसे हिन्दी सीखने के लिए गुरुकुल भेजेंगे।

आश्रम का विद्यालय उन का मुख्य कार्य नहीं है। वह तो केवल आश्रम के कार्यकर्ताओं के बच्चों की शिक्षा के लिए चल रहा है। लेकिन विद्यालय में पढ़ने वाले उन बच्चों का भी अधिकांश समय चर्खा चलाने तथा उस की अन्य क्रियाओं को सीखने में लगता है। आश्रम में जितने व्यक्ति रहते हैं उन के कार्य (Activities) दो भागों में विभक्त हैं। i. यंग इण्डिया, गुजराती नवजीवन, हिन्दी नवजीवन के सम्पादन तथा प्रबन्ध में कुछ व्यक्ति लगे हुए हैं। लेकिन यह भी उन का प्रधान कार्य नहीं कहा जा सकता। आश्रम वासियों का अधिकांश समय खद्दर और उन की भिन्न २ क्रियाओं का विकास, संगठन और संचालन में लगता है। अखिल भारतीय चर्खा संघ का दफ़्तर यहीं पर है। इस के द्वारा ही सारे देश की खद्दर संस्थाओं का संचालन होता है। नए चरखे, तकुियां तथा धुनकने के नए नए यंत्रों के आविष्कार में यद्यपि अनेक दिमाग लगे हुए हैं। अभी हाल ही में बम्बई के एक मिल मालिक ने एक नए प्रकार का चर्खा महात्मा जी के पास भेजा है। इस से चार पांच गुना सूत कातने का दावा किया जाता है। यहां के विशेषज्ञ इस पर परीक्षण कर रहे हैं। देखें क्या परिणाम निकलता है। महात्मा जी इतने से ही सन्तुष्ट होने वाले नहीं हैं। नई किस्म के चर्खे के आविष्कार के निमित्त वे जर्मनी और अमेरिका के बड़े बड़े वैज्ञानिकों से पत्र व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार खद्दर को सस्ता करने के लिए जितने अन्य साधन और उपाय हैं उन सब के आविष्कृत करने और उन से लाभ उठाने का सतत प्रयत्न हो रहा है। उदाहरणार्थ पिञ्जन, तकुी, सूत को पाक करने के नई नई विधियां सोची जा रही हैं। इस की अन्तिम और निश्चित सफलता में मुझे रत्ती भर भी सन्देह नहीं है।

यह तो मैं ऊपर ही कह आया हूं कि आश्रम की सारी जमीन पर खड़कों को छोड़ कर कपास ही कपास उग रही है। [illegible] छात्रावास का आंगन भी इस से नहीं बच सका है। उसमें भी बारहमासी देवकपास के ऊंचे २ पौदे झूम रहे हैं। महात्मा जी अपना सारा समय इसी को अर्पण किए हुए हैं। देश के अन्य राजनैतिक विषयों पर

यदि कोई उन से बात करे तो उस की बात तो सुन लेते हैं। लेकिन न तो उत्तर देते हैं और न दिलचस्पी दिखाते हैं। रात को जब कभी स्वप्न आते होंगे तो खद्दर के ही आते होंगे। उन के पास प्रतिदिन अखबारों का ढेर लग जाता है। कुछ तो जैसे आते हैं वैसे ही बिना खोले बोरी में भर दिए जाते हैं। कुछ अखबार आश्रम के अन्य निवासी पढ़ते हैं। बापू जी भोजन करते करते केवल पन्द्रह मिनट के लिए दो तीन अखबारों को सरसरी नजर से देख जाते हैं। हिन्दु मुसलिम समस्या, कौंसिल-आंदोलन तथा देश के अन्य आन्दोलनों में कोई भाग नहीं लेते। महात्मा जी की तन्मयता का एक और ज्वलन्त उदाहरण यह है कि उन्हों ने अपने समीप और दूर के सब सम्बन्धियों को भी इसी काम में लगा रखा है। महात्मा जी के चार लड़के हैं। उन में से सब से बड़े श्रीयुत हीरालाल गांधी स्वतंत्र रूप से व्यापार करते हैं किन्तु उनके दो लड़के (महात्मा जी के पोते) इसी काम में लगे हुए हैं। महात्मा जी के चचेरे भाई (जो स्वयमेव आश्रम में रहते हैं) तीन प्रौढ़ वयस्क पुत्र हैं। उन में से श्रीयुत मगनलाल चर्खा संघ के सर्वे सर्वा हैं। दूसरे भाई छगनलाल पर आश्रम के प्रबन्ध का भार है। तीसरे भाई नारायणदास खद्दर के कार्यालय में काम करते हैं। इन तीनों कार्यकर्ताओं के लड़के भी खद्दर की विभिन्न क्रियाओं में लगे हुए हैं। एक बार महात्मा जी ने बात करते २ सुनाया कि चर्खा तो मेरे पास अनायास आया है। मेरे तो अब यही इष्ट देव है। मैं जितना अधिक इस के लिए काम करता जाता हूं उतना ही मेरा विश्वास और आनन्द अधिकाधिक बढ़ता जाता है। मैंने उन से विनयपूर्वक पूछा कि आपके आश्रम में स्थिर रहने से जो खद्दर विषयक काम हुआ है उस से क्या आप को सन्तोष है? उन्हों ने फौरन जल्दी से विश्वास और दृढ़ता युक्त वाणी से कहा कि "इस में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। लोग अभी इस की कार्य क्षमता, उपयोगिता, महत्व और इस वर्ष की सफलता को नहीं समझ सके हैं। जो कार्य हुआ है वह मकान की नींव के समान आंखों से ओझल है। लेकिन उसके ठोस स्थिर तथा उपयोगी होने में मुझे जरा भी सन्देह नहीं है। वह समय जल्दी आने वाला है जब कि लोग इसकी उपयोगिता को अनुभव करते हुए इसे स्वभावतः अपनाएंगे और अपने जीवन का अंग बना लेंगे।

भावी कार्य क्रम — कानपुर कांग्रेस के समय उन्होंने निश्चय किया था कि वे दिसम्बर १९२६ तक अहमदाबाद के अहाते से बाहर नहीं निकलेंगे। इसके अनुसार दिसम्बर मास में आश्रम से चलेंगे। यहां से चल कर वर्धा के सत्याग्रहाश्रम में विश्राम करके आसाम कांग्रेस के लिए गोहाटी जायेंगे। वहां से लौट कर गत वर्ष की प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हुए गुरुकुल की रजत जयन्ती में सम्मिलित होने के लिए १५ या १६ मार्च को हरिद्वार पहुंचेंगे। गत वर्ष से चीन से भी उनको निमंत्रण आया हुआ है। अप्रैल में वहां जाने का भी वे विचार कर रहे हैं। पर यह अभी अनिश्चित है। ईश्वर उन को शक्ति और स्वास्थ्य दे जिससे कि देश के कल्याण में सहायक हो सकें।

आँधी के बाद

आंधी के बाद इन शब्दों में कितनी असह्य वेदना और करुणा का समुद्र बंधा हुआ है। इन शब्दों में विश्व-विजयी-वीर की अतीत असहायावस्था छिपी हुई है। जो वीर आँख की पुतलियों में बसा हुआ है जिसके चरणों की वन्दना संसार अपने हृदय की माला अर्पित कर कर रहा है वह कह रहा है कि अभी नहीं जब यह विषाक्त धुंआ दूर हो जायगा तब बाल सूर्य की किरणें जिस प्रकार हिमाच्छादित चोटियों पर, अपने चुम्बन से अनुरंजित करती हैं उसी प्रकार मेरा मधुर हास्य भारतीय गगन को अनुरंजित करेगा। क्या इससे निष्ठुरता नहीं टपकती? पर निष्ठुरता में एक आशा है, एक भावी आनन्द की रेखा है यही भक्तों के लिये सान्त्वना है।

किसके गले में?

माला गूंथी है, पर डालूं कहां, किसको पिन्हाऊं? पारिजात कुसुमों से अधिक सुरभित, कवि कल्पना से अधिक कमनीय, तारों की माला से अधिक बहुमूल्य, तारक माला से अधिक उज्वल, आकाश स्थित बक माला की पंक्ति से भी माला से अधिक सजीव, गंगा की लहरियों की माला से अधिक चंचल, प्रेम से ज्यादा सूक्ष्म और इनमें पिरोई पवित्र भावों की माला क्या यों ही हाथ में पकड़े ही पकड़े सूख जायगी? हृदय को मथ कर बनाई यह माला क्या व्यर्थ जायगी? ढूंढते ढूंढते थक गया पर पता नहीं चला कि यह माला आखिर पिन्हाऊं तो किसके गले में?

तट पर

कितनी देर तक अभी और खड़ा रहना होगा उस पार से तो अब आवाज आनी बन्द हो गई। हमाल हिलोर कर अपने आने की बात कह रहे थे वे भी ओझल हो गये। घाट पर नौकायें वैसी की वैसी बंधी हैं। मल्लाह भी चले आ रहे हैं। इधर नदी में बाढ़ आने वाली प्रतीत हो रही है। जल शीघ्रता से मैला होता जा रहा है। क्या अब वह नहीं आवेंगे? तो लौट चलूं, पर कदाचित आगये तो क्या कहेंगे? अभी तो नावों के चलने का समय बाकी है। अंधकार घना होता जाता है उस पार अभी तक कोई बत्ती भी नहीं जली क्या वो लोग कहीं और चले गये हैं? हां, आवाज तो कुछ आ रही है। तो क्या अभी खड़े रहूं यहीं तट पर।

भावुक

गगनाङ्गण में

खिलाड़ी का आदर्श :— आदर्श खिलाड़ी कौन है ? क्या हमारे खेल उस आदर्श की रेखा को भी छूते हैं ? खेल का आदर्श क्या है ? क्या उस आदर्श के अनुसार अपने जीवनों को हम चलाते हैं ? इन प्रश्नों में से दो का उत्तर श्री प्रेमचन्द के निम्न शब्द देंगे और दो का उत्तर हमारे खेल या खिलाड़ी देंगे। श्री प्रेमचन्द जी सूरदास के मुंह से खिलाड़ी की व्याख्या करते हैं :— "बस बस, अब मुझे क्यों मारते हो, तुम जीते, मैं हारा। यह बाजी तुम्हारे हाथ रही, मुझसे खेलते नहीं बना। तुम मंजे हुए खिलाड़ी हो, दम नहीं उखड़ता, खिलाड़ियों को मिला कर खेलते हो और तुम्हारा उत्साह भी खूब है। हमारा दम उखड़ जाता है, हांफने लगते हैं और खिलाड़ियों को मिलाकर नहीं खेलते, आपस में झगड़ते हैं, गाली गलौज मारपीट करते हैं कोई किसी को नहीं मानता। तुम खेलने में निपुण हो, हम अनाड़ी हैं। बस इतना ही फर्क है। तालियां क्यों बजाते हो, यह तो जीतने वालों का धर्म नहीं ? तुम्हारा धर्म तो है हमारी पीठ ठोकना। हम हारे तो क्या, मैदान से भागे तो नहीं, रोये तो नहीं, धांधली तो नहीं की, फिर खेलेंगे, जरा दम ले लेने दो, हार हार कर तुम्हीं से खेलना सीखेंगे और एक न एक दिन हमारी जीत होगी, जरूर होगी।" क्या कुल के खिलाड़ी उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान देंगे ? क्या यह समझेंगे कि पराजय में हंसने में भी आनन्द है, मार खाकर शान्ति से हंसना और गज की मस्तानी चाल चलने में भी मजा है।

स्वास्थ्य सचिव का संदेश — गुरुकुल का शिष्ट मंडल बिहार के स्वास्थ्य विभाग तथा स्थानीय शासन विभाग के मंत्री बाबू गणेशदत्त सिंह से मिलने गया था। बहुत कुछ बातचीत के अनन्तर चलने के समय श्री॰ वैजयन्ती के संचालक महोदय ने उनसे कुल के लिये संदेश मांगा। आपने कहा कि ब्रह्मचारियों को मेरी ओर से कह देना कि प्रतिदिन कम से कम आध घंटे तक व्यायाम किया करें। दूसरी बात यह कि प्रत्येक ब्रह्मचारी महाभारत का पारायण करे। आपने कहा कि मेरी सम्मति में वाल्मीकि रामायण से पहिले ब्रह्मचारी को लिये महाभारत पढ़नी ही चाहिये। आपने इस प्रसंग में अपनी जीवनी तथा महाभारत पढ़ने के लाभ महाभारत की कहानी से बताया था। लिखित संदेश आपने देना मान लिया था पर जिन सज्जन पर लाने का भार था वह नहीं लाये। अतः हम अपने पाठकों के सामने इस मौखिक संदेश की ओर ही ध्यान दिलाना चाहते हैं।

जरा ध्यान दीजिये — हम अपने पाठकों का ध्यान बापू जी की जयन्ती के अवसर पर होने वाली खादी प्रदर्शनी की ओर खींचना चाहते हैं। यह बड़े परिताप की बात है कि जहां चर्खे की गूंज के सिवाय हमारा मन और कुछ कल्पना नहीं करता था वहां [illegible] तैयार की जाय और जहां स्वावलम्बन के सिद्धान्त के पोषित हों वहां इनके बनाने की ओर यत्न भी न किया जाय। क्या यह हमारे लिये लज्जा की बात नहीं है। इस वर्ष उत्सव पर प्रदर्शनी होगी। हमें यत्न करना चाहिये कि प्रदर्शनी का अधिकांश भाग हमारी हस्त निर्मित वस्तुओं से भरा हो। अपनी साधना के साथ २ अपने वस्त्र भी बनवाने का निश्चय करने की कोशिश करेंगे

करते हैं। उन्होंने भावी कुलमंत्रियों के लिये बहुत सा मार्ग साफ कर दिया है। कुल का नामोत्थान आपके कारण हुआ और सफलता से सम्पन्न हुआ इससे कोई इनकार न करेगा। आप के काल में ही कुलबंधुओं ने अपने ऊपर लिये गये काम को पूरा किया और पूर्ण किया सराहनीय तौर से। परन्तु इतना जोड़ने का और अधिकार चाहते हैं कि कुल का जीवन प्रकार गतवर्ष से भी शिथिल रहा। कुलमंत्री महाशय की ओर से प्रकाशित होने वाला अखबार 'आजकल' के केवल २ अंक प्रकाशित हुए। गुरुकुल के वायुमंडल में राजनीति स्थान वर्तमान आंदोलनों का उतना भी नहीं रहा। एक पराधीन जाति के शिक्षणालय में राजनीतिक भावों का अन्य भावों से ज्यादा होना स्वाभाविक है। पर इस साल इसकी मात्रा कम होगई है। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह कुलमंत्री का दोष नहीं है क्योंकि कुलमंत्री केवल महाविद्यालय के अधिकांश विद्यार्थियों के विचारों की सजीव मूर्ति हैं। आगामी कुल मंत्री अपने काल में - इस काल में जब जागृति पैदा करने वाले सब कारण इकट्ठे करके दूर होते जाते हैं - सफल हुए हैं। हम इस सफलता पर विशुद्ध हृदय से कुलमंत्री महोदय को बधाई देते हैं।

भविष्यवाणी — आगामी कुल मंत्री कौन होगा सबके दिमाग इस बात का उत्तर देने की चेष्टा कर रहे हैं। २८, २९ कर उम्मेदवारों के नाम अपनी अंगुली पर गिनते हैं। इस संबन्ध में भविष्यवाणी करना बड़े साहस का काम है। इस अवस्था में भविष्यवाणी करना भी सहज नहीं। पर अवस्थाओं को दृष्टि में रखकर कहा जा सकता है कि आगामी कुल मंत्री वर्तमान उपकुलमंत्री ही बहुत संभव होंगे। हम अपने अनुमानशील चाई या पाठकों को विश्वास कराने के लिये कहने का साहस नहीं करते।

अंग्रेजी का राज्य — कुल में अंग्रेजी का राज्य प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है। अंग्रेजी का अभ्यास करना उस पर प्रभुत्व संपादन करना मुख्य काम है। पर कुल के वातावरण को अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी से भरपूर करना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। अंग्रेजी के एक दो शब्दों के बिना प्रयोग किये किसी वाक्य का हमारे मुंह से निकलना हमारे लिये उचित नहीं कहा जा सकता। कहां तो पत्रों के पते भी हिन्दी में लिखे जाते थे कहां अब सर्वनाम मित्र-(छुप्पा), दूसरा के नाम सब अंग्रेजी में हो जाते हैं। कहां वह दिन था जब कि स्वा. देवदत्त जी सि. आ. श्री ठाकुर जी से कहा करते थे, कि "आप अपने छपका यह भी हिन्दी में छपवाइये। वरना इनको न दीजिये। यदि कोई आपको लिखने वाला नहीं मिलता तो लाइये मैं लिखके या लिखवाके देता हूं।"

खुशी क्यों मनावें

आज इस खुशी के दिन में एक बार गंभीर होकर विचार करने वाले व्यक्ति के मुंह पर हंसी और आंखों में आंसू आये बिना नहीं रह सकते। हम लोग यह खुशी क्यों मना रहे हैं? वैयक्तिक या पारिवारिक दृष्टि से इस गये गुज़रे ज़माने में भी अपनी इच्छाओं और उद्देश्यों के अनुसार हमारे लिये सुख अथवा दुःख के अवसर आ सकते हैं, परन्तु हमारी हतभाग्य जाति के लिये सामूहिक रूप से आज कौन सा खुशी का अवसर आ उपस्थित हुआ है, यह विचारणीय प्रश्न है। आज जब कि भाई भाई की खून का प्यासा हो रहा है, हम लोग गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं इस प्रकार उत्सव मनाना संगत नहीं कहा जा सकता।

सुनते हैं- आज के दिन हमारे पुरखा अपने अनन्त वैभव की प्रदर्शनी किया करते थे - सुनते हैं - आज के दिन हमारे देश का एक सार्वभौम सम्राट बहुत समय बाद अपनी प्रजा से दिल खोल कर मिलता था। यह सब सत्य है; परन्तु आज इस घड़ी में उस अतीत को याद करने से क्या होगा? भला कभी कोई दिवालिया अपने प्राचीन वैभव को याद करके आठ आठ आँसू गिरा कर खुश हुआ है।

तो फिर क्या हम लोग एक दिवालिया शव को ही सजा रहे हैं, एक खाली सन्दूक पर बड़े २ ताले जड़ कर उसे कुबेर का खज़ाना बनाने का यत्न कर रहे हैं - शुद्ध कागज़ के फूलों पर इतर डाल कर उन्हें सचमुच का प्राकृतिक सजीव फूल बनाने का यत्न कर रहे हैं। नहीं, इन सब का उद्देश्य किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न करने का नहीं है। हमारे आज के इस समारोह का उद्देश्य कुछ और ही है। आज का यह हास्य अपने को खुश करने के लिये नहीं है आज हम लोग सचमुच रोने के लिये ही हंस रहे हैं, आगे वर्ष भर तक आधा पेट खाना खाने के लिये ही हम आज सहभोज कर रहे हैं इस सब का अभिप्राय है।

मूर्ख संसार समझता है कि आज के दिन हम आर्य जाति के लोगों की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहता। दुनिया देखती है कि आज के दिन हम लोग दीये जलाते हैं, अपने घरों को सजाते हैं, अच्छा भोजन करते हैं, नये वस्त्र पहिनते हैं। संसार के ये सब प्रसन्नता के चिन्ह हैं।

परन्तु ये सब प्रसन्नता के चिन्ह उन लोगों के लिये हैं जो साधारण अवस्था में हैं। हम लोग असाधारण दशा में हैं, कभी कभी हमारे रोने का अभिप्राय हंसना होता है और कभी २ हमारी हंसी रोने की अपेक्षा भी अधिक करुणाजनक होती है। आज हमारी दिवाली दिवालिये की सी है जो किसी विशेष अवसर पर स्वयं रोने के लिये अपने २ सन्दूकों की प्रदर्शनी

करता है जिनमें कि एक समय उनका अतुल धन खर्च करता था। ठीक इसी प्रकार आज की दीपावलि का अभिप्राय भी कुछ और ही है। हम लोग भरपेट वंचन करके आज जो वस्त्र पहिनते हैं और भर पेट खाकर आज जो स्वादु पदार्थ खाते हैं, उन सब का उद्देश्य भी केवल अपनी खुशी मनाना ही नहीं है।

दुनिया भर में मुकाबिला हो रहा है। हम लोग एक समय इस मुकाबिले में, हर बड़ी होड़ में, सबसे आगे थे परन्तु आज दुर्भाग्य वश हम लोग पिछड़ गये हैं। तो इस पिछड़ी दशा में जबकि हम में से 80 प्रति शत लोग अजीर्ण से ही नहीं अपितु साधनों की कमी से पेट भर खाना नहीं पाते, जबकि हम में से एक बहुत बड़ी संख्या तपस्या के भाव से नहीं परन्तु वस्त्रों की कमी के कारण सर्दी गर्मी सहती है - अगर हम लोग दीये जलाते हैं, नये वस्त्र पहिनते हैं, उत्तम भोजन करते हैं, तो इसका अभिप्राय खुशी मनाना नहीं परन्तु अपने दिलों में उसी दिवालिये की तरह जलन पैदा करती है।

आज हम भड़की ले साधनों द्वारा हम लोग कि उस दिन जिस दिन कि हमारे पूर्वज लक्ष्मी माता की पूजा किया करते थे जिस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अपनी कठोर प्रतिज्ञा पूरी करके अपने घर वापिस आये थे अपने हृदयों में एक कभी न बुझने वाली जलन पैदा करते चले हैं। ईश्वर करे कि आज का दिन हम सोते हुओं के लिये एक ठोकर का काम करे, हम अनुभव करने लगें कि सच्ची दीपमालिका मनाना गुलाम जाति का काम नहीं है। उस दीप मालिका के दिन की ओर हम तेज़ी से बढ़ें जिस दिन दीपों की -- सचमुच हमारी हार्दिक प्रसन्नता की द्योतक होगी।

स्विट्ज़रलैण्ड का रविवार

मैं भूमि के सौन्दर्य को देखने निकला भूमि रंग बिरंगे उपहार दे रही थी। इस सौन्दर्य मन ही मन सब को तुच्छ समझता था। ये सब अलंघ्य ऊंचाईयाँ, बिल्कुल सीधी ऊंची ज़मीन, उत्तुंग घाटियाँ, अजीब बर्फ़ानी दृश्य, हिमाच्छादित पर्वतीय ऊंची चोटियां ये मानो अविवेक का परिणाम थे।

सारा कौतूहल भरा।

आदित्य वार को उपासकों को बुलाने के लिये सतत नाद करने वाले गिर्जाघर का घण्टा हवा में गूंज उठा। प्रार्थना के रंगीन स्थल में जहाँ गान गाये जाते थे — वहां हमने पुरानी प्यारी गीतिका गाई जो हृदय के गान को स्मरण दिलाती थी। इंगलिश चर्च के संगीत ने हृदय से बाहिर निकल कर विशेषतः इटली तथा स्विटज़रलैण्ड में मुझे बिल्कुल नहीं लुभाया। हमारे गान को सुनकर भूरी आँखों वाले स्विस लोग क्या कहते होंगे जबकि प्रत्येक स्विस और इटालियन अपने स्वर को जानता है। हम अपने को पापी समझते थे पर मैं इसकी तरफ़ इतना ध्यान न देता था, पापी तो मैं हो सकता हूं पर अभागा कभी नहीं। सूर्य जब तक सुनहरे रंग में चमकता है — प्रकृति जब तक प्रसन्न करती है तब तक यह बात नहीं हो सकती है।

तदनन्तर हमने राजकीय परिवार के लिए प्रार्थना की। फिर उस सुंदर संसार के ईश्वर के प्रति कृतज्ञता भरी प्रार्थना करी।

भोजन के अनन्तर वहां का आकाश हीर कान्त-छादित तथा रविवार की पहिली अगस्त के दिन जिस दिन स्विस लोग राष्ट्रीय एकता मनाते हैं लाल सुनहरी लालटेनों द्वारा बड़ा ही जादू भरा था।

सभी उच्च चोटियों पर वनाग्नि के समान वहां के लालटेनों का प्रकाश मालूम पड़ता था। पहाड़ों पर बसने वाले लोग लालटेनों को लेकर गलियों में परेड करते थे। अन्त में वे लोग टाउन हॉल तक आकर ठहर गये और एक उपदेश दिया गया। फिर God save the King। का भजन आकाश भेदी शब्दों में गाया गया पर मुझे यह बहुत दुःखी कर रहा था मैं सोच रहा था क्या कभी लोगों के हृदय के चारों ओर के किनारों पर इसी प्रकार का प्रकाश होगा?

बंगीय रंगमंच

स्टार थियेटर — प्रतापचन्द्र जौहरी ने इस नाटक के व्यापार से बहुत सा लाभ उठाया था इसीलिए गुर्मुख राय भी इसी व्यापार में कूद पड़े. इन्होंने स्टार थियेटर की स्थापना Beadon Street में की जिस स्थान पर अब मोहन थियेटर है। गुर्मुख राय इसके मालिक बने गिरीश चन्द्र इसके व्यवस्थापक बने और इसके अन्य साथी अमृत लाल मित्र और अमृत लाल बोस आदि इसके मुख्य अभिनायक बने। इसका प्रथम खेल 'दक्ष यज्ञ' हुआ। गुर्मुख राय जल्दी ही धर्मचलित हो गए। और इसकी जायदाद के स्वामी ने स्टार थियेटर को अमृत लाल बोस, हरिप्रसाद बोस और अमृत लाल मित्र को दे दिया।

उस समय गिरीश बाबू सरकारी दफ्तर में हेडक्लर्क थे पर इन्होंने इस्तीफा दे दिया और अपने ४ शिष्यों को व्यवस्थापक बना आप मैनेजर बन नीचे रहने लगे। इस प्रकार यह नाटक मंडली सफलता पूर्वक अपना काम करने लगी।

एमेरल्ड नाटक मंडली — कलकत्ता के कोठे रुपयों के मालिक गोपाल लाल सील ने उस समय 'स्टार थियेटर' को खरीदना चाहा और इसके बदले में बहुत बड़ी रकम देनी चाही परन्तु बड़े वाद विवाद के पश्चात् यह तय हुआ कि यह लेकर तो आप परन्तु शुभ संकल्पों को नहीं और वे स्टार थियेटर के नाम से एक और रंगमंच का निर्माण करें। गोपाल बाबू ने इसका नाम एमेरल्ड थियेटर रखा। इसका सबसे प्रथम खेल पाण्डव निर्वासन हुआ। यह खेल बाबू केदार नाथ चौधरी द्वारा उस समय लिखा गया था जब कि अघोर, शेखर मुस्तफी, महेन्द्र नाथ मोतीलाल सूर आदि इसके मुख्य अभिनायक थे।

दुविधा — स्टार नाटक मंडली के पुराने मालिक ने कार्नवालिस स्ट्रीट में भूमि खरीद ली थी परन्तु गिरीश चन्द्र इसी में सम्मिलित होने वाले थे। इस समय गोपाल बाबू ने देखा कि मैं गिरीश चन्द्र के बिना इस व्यापार को चला नहीं सकता अतः उन्होंने २० हजार रुपये देकर भी गिरीश बाबू को लेना चाहा। गिरीश बाबू अब बड़ी दुविधा में पड़े वे अपने शिष्यों को भी छोड़ नहीं सकते थे और दूसरी ओर वे गोपाल बाबू की जिद्द से भी डरते थे। इस समस्या का हल इस प्रकार हुआ कि वो (गिरीश बाबू) एमेरल्ड थियेटर में ही रहें पर अपने शिष्यों को जिनको कि उनकी बड़ी आवश्यकता थी अब से सहायता करेंगे।

(असमाप्त)

जननी ॥

जय जय जननी भारत जननी ।
जयति भव-भय भूरि भंजनि, दुःख दारुण हरणि ।
जयति जय जय भुवन-मोहनी, जयति मंगल करणी ॥ जय ॥

जयति जय जय मुंड मालिनी, जयति अरि-दल-दलनि ।
जयति जय जय रावरु-प्रसविनी, जयति सर्वसोख्य प्रदनी ॥ जय ॥

जयति जय अघ भूल नाशिनि, जयति तारण तरनि ।
पद्मपद-रज देहु अपन   अशरण शरणि ॥ जय ॥

जाते समय

ज्वार उतर गया है, तीव्र झूर जिसने हमारे जीवनों को उथल पुथल कर दिया हमारे मार्ग की दिशा बदल दी थी गुजर गया है। प्रबल वायु का झोंका। जिससे जीवन स्रोत उद्वेलित हो रहा था मन्द पड़ गया है असाधारण अवस्था समाप्त हो गई है। अब फिर यथा पूर्व निकल्या पर के अनुसार साधारण जीवन में साधारण अवस्था में प्रवेश कर रहे हैं। एक प्रकार की गर्मी जो शरीर में व्याप्त हो गई थी अब उतर गई है। क्षुब्ध वातावरण शान्त हो रहा है। अतएव अपने जीवन के दैनिक कार्यों में प्रवृत्त हो रहे हैं। 'विजय वैजयन्ती' इस समय सादर आप भाईयों से, सहयोगियों से और हृदय वासिनी मूर्ति से विदाई मांगती है।

अपने कार्य की समालोचना करना हमारा कर्तव्य नहीं है। जो कुछ किया आपकी प्रसन्नता के लिये किया। यदि आप प्रसन्न हैं तो हमारा यह सौभाग्य है। आपने "वैजयन्ती" को अपनाया है इसी कारण आज इन निर्बल हाथों में होकर भी आकाश छू रही है इसके लिये हम आभारी हैं।

'विजय वैजयन्ती' को जिन्होंने अपना अंग बना लिया है 'विजय वैजयन्ती' जिनकी है उनको धन्यवाद देना उनका अपमान करना है। हम हृदय से अपने कुशल कवियों के, चित्र-हस्त चित्रकारों के जिनकी बदौलत 'वैजयन्ती' इस रूप में प्रकट हो सकी है। हमारा हृदय कृतज्ञता से झुका हुआ है। इसी विनम्र-हृदय से हम उनका सादर धन्यवाद करते हैं। आशा है कि 'वैजयन्ती' को आप अपनाये रहेंगे। जिन्होंने उन्हें दिलाकर उसको पूर्ण करके भी निरुत्साह कर दिया है हम उनके भी आभारी हैं।

व्यवस्थापक

क्रान्तिकारी के चरणों में

आज भारत के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक प्रान्त में प्रत्येक दिशा में क्रान्ति की धारा तीव्र वेग से बह रही है। प्राचीन और अर्वाचीन सभ्यताओं में पुरातन और नूतन विचारों में प्राचीन और नवीन संस्कारों में तथा पुराने और नए जगत में एक तीव्र संघर्षण हो रहा है। दोनों एक दूसरे का स्थान लेने का यत्न कर रहे हैं। क्रान्ति की चिनगारियां प्राचीनता की शानदार अट्टालिका को भूमिसात् करने में प्रयत्नशील हैं। आज जो भट्टी जल रही है जिसका आलोक दिग्दिगन्त में फैल रहा है उस भट्टी को प्रज्वलित करने वाले इस क्रान्ति युग की सूचना देने वाले अग्रदूत क्रान्तिकारी दयानन्द! तुम्हीं हो कारण आज तुम्हारे चरणों में युवक भारत सादर प्रणाम करता है।

× × ×

आज हिन्दू जाति ने करवट बदली है उसने आंखें खोलनी आरम्भ कर दी हैं, नवीन हिन्दू जाति को जन्म देने आज का युग जा रहा है। उसकी पहली ठोकर लगाने वाले उस पर प्रबल प्रहार करने वाले तुम्हीं हो। जिसके फल स्वरूप आज हिन्दू जाति अपने को जाति समझने के योग्य हुई है। यह सत्य है कि तुम्हारे इस कार्य का गुरुत्व हम अबोध बालक समझ नहीं पाए पर 'युग प्रवर्तक ऋषि' इस प्रदीप्त भट्टी की ज्वाला से शुद्ध होकर निकली विशुद्ध संस्कृत हिन्दू जाति तुम्हारे चरणों में अवश्य शीश झुकाएगी और तुमको क्रान्तिकारी दयानन्द कह कर दिशाओं को तुम्हारे जय-जयकार से व्याप्त करेगी।

× × ×

आज भारत का कोई परिवार सुखी नहीं है। प्रत्येक नगर अशान्ति की क्रीड़ाभूमि बन रहा है। प्रत्येक भारतीय हृदय जातिगत वैमनस्य, साम्प्रदायिक ईर्ष्या द्वेष का क्रीड़ा स्थल हो रहा है। शान्ति के स्थान धर्ममन्दिर और हृदय की अशान्ति को बुझाने वाले धर्म आज विकृत होकर, नया रंग और नवीन रूप धारण कर इस पवित्र भारत भूमि को रणभूमि बना रहे हैं। इस रक्त धारा के बीच इस गुण्डों के शोर के बीच दिल्ली में बैठी तुम्हारी मूर्ति स्मरण हो आती है। मज़हब ने उस समय ऐसा भयङ्कर रूप धारण न किया था जैसा नग्न रूप उसने आज धारण किया हुआ है पर उस समय तुम्हारे विश्वासों ने उस स्वर्णिम युग को खो दिया। यदि उस समय कोई सूत्र ढूंढ निकालते, यदि उस समय कोई मार्ग निकाल लेते।

यदि तुम ने उस समय 'एक ईश्वर पर विश्वास', 'वेद ईश्वरीय ज्ञान है' के मसलों को विचारकों का विवाद समझ कर छोड़ दिया होता तो निःसन्देह उसी नगरों में संसार के सर्वश्रेष्ठ मनुष्य को निराहार व्रत न ग्रहण करना पड़ता, न सारे भारत के दिमाग और भारतीय समाज के शत शत हृदयों द्वारा शान्ति की झण्डी हिलाने पर भी, जगह जगह पर रक्त के फव्वारे छुटते न समय ही पतिहीना पुत्रहीना माताओं के दारुण चीत्कार से दुःखी हो आकाश रो पड़ता और सूर्य भगवान बादलों की चादर के पीछे मुंह छिपाते। कदाचित् तुम्हारी दूरदर्शी बुद्धि ने आज के विचारों और दृश्यों को अपनी कल्पना से समझ लिया हो इस कारण तुम ने 'एकता सम्मेलन' बन्द कर दिया। आज एकता के प्रेमी तुम्हारी उस एकताभिलाषी हृदय के सामने नम्र भाव से शीश झुकाते हैं।

× × ×

आज भारतवर्ष ज्ञान की अलौकिक शक्तियों से आलोकित हो रहा है। इसके सुदूर प्रान्तों में भी किरणें पहुंच रही हैं। ज्ञान आज लोहे के मज़बूत सन्दूक में बन्द नहीं है, जिस की ताली एक विशेष प्रभुत्वशाली सम्प्रदाय के पास हो। आज वह ज्ञान का स्रोत निरविच्छिन्न रूप से प्रवाहित हो रहा है। प्रत्येक प्राणी जिस में ताकत है ज्ञान सरिता में गोता लगाकर आनन्द प्राप्त कर सकता है। लोहे के गढ़ में सुरक्षित ज्ञान भण्डार को सर्वसाधारण में वितीर्ण करने वाले ज्ञान सरिता के प्रवाह को बांधों के बन्धनों से मुक्त करने वाले दयानन्द! आज इस दीपमाला से आलोकित भारतवर्ष आन्तरिक ज्योति पाकर तुम्हारे चरणों में सादर प्रणिपात करता है। ब्राह्मणों के प्रभुत्व को उन के मायाजाल को, उन के द्वारा फैलाए हुए अन्धकार को और उन द्वारा स्थापित गुरुडम के शानदार प्रसाद को अपने प्रबल प्रहार से ढहने वाले दयानन्द! स्वतंत्रता प्रिय मानव समाज आज तुम को भक्तिभाव से नमस्कार करता है।

× × ×

अन्धश्रद्धा के दृढ़ गढ़ को तर्क के तीरों से मार करने वाले, अन्धविश्वास की अन्धकार पटली को तर्क सूर्य की प्रखर किरणों से छिन्न भिन्न करने वाले, निर्बोध सरल समाज को तर्क का तीक्ष्ण खड्ग देने वाले दयानन्द! विचार-स्वतन्त्रता के जन्मदाता हो पर उस को तुम ने सर्वथा बन्धन रहित नहीं कर दिया है, उस की उच्छृंखलता के लिए प्रतिबन्ध उपस्थित कर दिया है। इस बीसवीं शताब्दी में जब रेशम के सूत का बन्धन भी लोहे की जंजीर समझी जाती है, तब तुम्हारा इतना बड़ा बन्धन लगाकर नए युग के लोगों के लिए मैदान का क्षेत्र सीमित करना हमें आश्चर्यजनक प्रतीत होता है।

इस का रहस्य तुम्हारी अन्तर्भेदिनी दृष्टि ही जान सकती है। पर आज वह बन्धन समाज-शरीर को रोगों का घर बना रहा, यह बन्धन नई क्रान्ति को जन्म दे रहा है, इस बांध से जल गदला होता जा रहा है, इस बांध को तोड़ने के लिए वेगवती लहरें टक्करें मार रही हैं अतः क्रान्तिकारी दयानन्द! आज क्रान्ति के उपासक तुम्हारे सामने मस्तक नवाते हैं और क्रान्ति की चिनगारियां चारों ओर बखेर कर तुम्हारे शुभ संकल्प को पूरा करने जा रहे हैं। स्वर्ग से तुम्हारी सन्तरात्मा इन पर दैवीय भावों की पुष्पवृष्टि करे।

× × ×

जड़वाद भोगवाद और नास्तिकवाद के गढ़ पर अध्यात्मवाद की झण्डी फहराने वाले आज तुम्हारी आत्मा इन दिव्य दीपों के उज्ज्वल उजाले में, संसार के बन्धनों को काट कर मृत्यु के जाल को छिन्न भिन्न कर मुक्त हो गई, अमर होकर भारत के नाम को और इन दीप शिखाओं को अमर कर गई। भारत का सन्देश जिस को तुमने हिमालय के हृदय को भेद कर बहने वाले झरनों के संगीत में और भारतीय वनों में तरु-पल्लवों से सुना था उस आत्मा की अमरता का पवित्र सन्देश तुमने अन्तिम सांस के साथ सुनाया है। आज वह सन्देश ही भारतीयों के लिए पवित्र मंत्र है। जिस मंत्र से दीक्षित होकर भारतीय नवयुवक सूली पर हंसते २ चढ़ना सीख रहे हैं, तोपों के गोलों के सामने, मशीनगन की बौछार के सामने खड़ा होना सीख रहे हैं। जो मंत्र उनकी भुजाओं में सत्याग्रह का अमोघ अस्त्र पकड़ने की क्षमता स्वातंत्र्य-पताका थामने की अद्भुत शक्ति पैदा कर रहा है उस पवित्र मंत्र के दाता आचार्य दयानन्द! नवयुवक भारत शिष्य-भाव से तुम्हारे चरणों में अपना माथा नवाता है।

× × ×

क्रान्ति के अग्रदूत! यह नितान्त सत्य है कि तुम्हारी क्रान्तिकारी कल्पनाओं को, तुम्हारे क्रान्तिकारी विचारों को, उलट पुलट पैदा करने वाले भावों को हमने नहीं अपनाया। तुम्हारी स्मृति में विगत वर्ष इकट्ठे होकर हमने क्रान्तिकारी दयानन्द को तुम्हारी गुरुभूमि में ही दफना दिया है। आज हम तुम्हारे नाम और आर्यसमाज के पुजारी बनकर आना जाल फैला रहे हैं। अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहे हैं। हमारी आंखें इतनी उदार और विस्तृत नहीं हैं कि उस पार के दृश्य को देख सकें। तुम्हारी उठाई क्रान्ति पताका आज हमारी हीनता के कारण झुक गई है और धूल में लोट रही है। आज क्रान्ति की प्रदीप्त भट्ठी ठण्डी हो गई है उसके दहकते शोलों को राख ने ढक लिया है। यह भी सत्य है पर यह सब अन्धविश्वास युक्त श्रद्धा और दम्भी भक्ति तुम्हारे प्रति जो हमारे हृदय में प्रतिष्ठित होकर स्थित है उसी का फल है। जिस दिन हम भी अन्तर्ज्योति के प्रकाश से प्रकाशित हृदय दीपक

फ़्री ट्रेड

प्रोटैक्शन पक्षपाती है लगा देते सभी पर कर।
दबाते सब को कर से है ये दिल मे क्षोभ पैदा कर॥
न ये है चाहते कि दूसरों का भी भला होवे।
बस अपनी चार दीवारों मे ही केवल भला होवे॥
अहो इनकी नजरों मे कोई और देश आता है।
बस अपना पेट भरने के सिवा क्या और आता है॥
सभी भाई परस्पर है नहीं इनको ये भाता है।
बस अपने देश के हित मे सभी का हित समाता है॥
सभी सामान पैदा हो इन्हीं के देश मे केवल।
विविध हों कारखाने बस इन्हीं के देश मे केवल॥
न खेती और खाने हों होएं इस देश मे केवल।
मगर दुनिया की सब चीजे रहे इस देश मे केवल॥
कोई है वेद मे अच्छा कोई दर्शन समझने मे।
न सो वेद मे अच्छे न दर्शन सब समझने मे॥
इसी ही भान्ति सब देशों मे सब चीजे नहीं होतीं।
अधिक है खान गर इस मे तो उसमे धान की खेती॥
अरे जैसे निल्हाने से गधा घोडा नहीं होता।
तो वैसे ही प्रोटैक्शन से नहीं निर्धन धनी होता॥
अगर अपनी भारत भूमि मे तुम केसर ही चाहते हो।
तो बस समझो कि तुम सिर पर गधे के सींग चाहते [illegible]
अगर झूठे लगाने से भला निज राष्ट्र का सम[illegible]
तो बस बलिहारी तुम पर है न कुछ आगा का तुम समझो॥

खरीददारों से गर पूछो तुम्हारी क्या भलाई है।

तुम्हें क्या लाभ है इससे कहां तक आय पाई है॥

कहेंगे क्या सुनावें हम यहां तो खाक पाई है।

ये अटूटी क्या लगाई है बला हम पर समाई है॥

गये हैं बढ़ सभी चीजों के पूरे दाम अपार [illegible]

बस अब तो पूंजीपतियों की रहे भर जेब आप तक॥

प्रोटेक्शन छोड़ दो अब है भला फ्री ट्रेड करने में।

खुले होकर निरन्तर अब लगो व्यवसाय करने में॥

विनय को है यही अच्छा कि अब वह और न बोले।

न कविता पर कहीं तेरी लगावें [illegible] ले॥

श्री अर्थ सचिव लौट आये

विरोधी दल में निराशा

हमारे कल के 'युगान्तर' में अर्थसचिव के जाने की सूचना पढ़कर विरोधी दल खुशी के मारे फूल उठा था। किन्तु हमारे सहयोगी 'नया' में यह पढ़कर कि श्री अर्थसचिव राजेन्द्र जी लौट आये हैं। विरोधी दल में खलबली मच गई है। क्योंकि मिनिस्ट्री में श्री राजेन्द्र जी का एक वोट कम हो गया है और श्री दिलीप जी के हम में आजाने से एक वोट बढ़ गया है। परन्तु शोक से लिखना पड़ता है अब उन्हें के श्री राजेन्द्र के आजाने से उनका मिनिस्ट्री के वोट का कम होने की आशा न करनी चाहिये। साथ ही हमें विश्वस्तसूत्र से पता लगा है कि श्री दिलीप चन्द्र जी उदासीन हो गये हैं। वे भी विरोधी दल की ओर हाथ उठाने का कष्ट न करेंगे। ऐसी अवस्था में हम श्री विरोधी नेता के प्रति सहानुभूति प्रकट करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

इस आकस्मिक निराशा से आपके हृदय में जो चोट पहुँची है, उसके लिये हृदय से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यह आकस्मिक आघात उनके किसी कार्य में बाधा न पहुँचाये।

खुदा से दुआ

बेचारे सन्टीमिनिस्ट्री के गरीब मरीज़ को निर्बल और निराशा देख कर 'भगत जी' खुदा से दुआ माग रहे है कि 'या खुदा। इसमे कुछ ऐसी ताकत पैदा कर कि यह पार्लमेन्ट मे कुछ हाथपैर मार सके।

कारवान भगत

फ़रियादे 'भक्त'

सुनो ए शायरो हम आज कुछ ताजी सुनाते हैं।
क्षमा करना, न घबड़ाना, कहो क्या, ऐसी बातें हैं॥
नजर आता है अब तूफान हम पर कोई आता है।
जिधर देखो, जिसे देखो, छुरी हम पर चलाता है॥
'नया' का सुनते हैं कोई नया फरमान निकला है।
कुचलने शायरों को अब नया सामान निकला है॥
जिसे समझा था गुलशन है वह बीयाबान निकला है।
'नया' है पता कोई या महज अरमान निकला है॥
'भगत' जी अब समाधी तोड़ कुछ सुन लो हमारी भी।
न पीसे जाएँ हम बेचारे सुध लेना हमारी भी॥
अभी तो अध खिली यह खिल रही है चन्द का ।- कलियाँ।
मतंगज की तरह करना न इनसे यों ही रासलीला॥
बहादुर हो तो कुछ लेकर जमा मैदान में आओ।
न गैरों पर न दूसरों पर टोला ही टेका करे जाओ॥
हैं हम नादान बच्चे हो औ देखो हैं अभी कल में।
न जाने लिखते कैसा हैं न लाना रंज कुछ दिल में॥
भगत होकर भी कुल्हाड़ चलाओगे अगर हम पर।
बताओ तुम हो जाओगे कर तेन तीन हम बेचारे॥

सूचना —

साम्यवादी दल तथा प्रजावादी दल के सब सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आज रात के सवा आठ बजे पत्रशाला पर दलों की बैठक होगी जिसमें सब सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है ; क्योंकि उसमें दल की नीति निर्धारित की जायगी। आशा है कि सब सदस्य यथासमय और यथा स्थान पधारने की कृपा करेंगे।

सहयोगी नया

नया कहता है कि मैं नई शान से निकला हूं जरा कसौटी पर कसिये। मियां मिट्ठू की यह बात कहां तक ठीक है। आफवाह बहुत दिनो से जोरों पर थी कि नया निकलने वाला है। लेकिन हम प्रतीक्षा करते २ उकता गये आखिर आज बृहस्पति वार को निकल ही गया। नया नाम रख कर भी इतनी जल्दी निकल जाना नये के लिये मामूली बात है।

नया के दर्शन पाते ही हम तो मारे प्रसन्नता के फूल कर कुप्पा होगये। क्योंकि उसका टाइटल (मुखपृष्ठ) पेज खूब शानदार रंग बिरंगा भड़कीला तथा सजीला था जो देखते ही ग्राहकों के मन को मोह लेता था। तितलियां रह रह कर उस पर आती थीं। खैर उसे खोलकर देखने से तो हमारा आनन्द सीमा को भी लांघ गया। हमारा आनन्द निम्न लिखित बातों को देखकर असीम हो उठा।

(१) लेख, वृतेन मसालेदार तथा चटपटे थे कि मुंह से लार टपकने लगी।

(२) तार तथा खबरें इतनी शुद्ध देता है कि हद कर देता है। लिखता है कि सम्मिलित दल की बैठक में सिर फुटौअल होगयी और सभापति भाग खड़े हुए यदि 'युगान्तर' में से ये समाचार उतारा गया है तो 'उतरौआ' की आंखो मे सुरमा डालने की जरूरत है। यदि मनमौजी ही लिख दिया है तो कुछ कहने की आवश्यकता नहीं 'हां' एक बात नया को समझा देनी उचित है जो उसे पता नहीं प्रतीत होती। प्रायः जितनी भी कौन्सिले वा बैठके होती हैं उनमें चतुर सभापति दंगा होने पर कुर्सी छोड़ ही दिया करता है यही विवाद बन्द करने का नया तरीका है। यही सब सभ्य देशों मे प्रथा है व प्रचलित हैं।

नये की एक बात से बहुत प्रसन्नता हुई इसने समालोचना में बहुत ही जल्दी तथा ताज़ीकरी है। प्रजातन्त्र लोकमत नवयुवक तथा नव युगादि निकले कितने ही महीनों होगये और जब युगान्तर की धूम दिखाई सी देने लगी तब बिचारा 'नया' निकला और महीनों के पुराने अखबारों पर समालोचना कर दी। वास्तव में नया ने नये फैशन को अपनाया है ऐसा प्रतीत होता है कि वे समालोचनायें तथा लेख वगैरह पहले से ही तय्यार कर रक्खे होंगे।

'नया' देखने से कैसा प्रतीत होता है —

(१) न स्याही उत्तम न कागज उमदा

(२) न इसके पास ~~[illegible]~~ लेखक तथा सम्पादक ~~[illegible]~~ भरतीय प्रतीत होते हैं।

(३) कार्टून के माल के बनाता है यहां तक कि पृष्ठ सफ़ेद का सफ़ेद रह जाता है।

(४) संपादक भक्ति के रंग में रंगा प्रतीत होता है फिर भी नया नये रूप में आया है।

इसका स्वागत करना उचित है नहीं तो बिचारे का शीघ्र ही स्वर्गवास होने का डर है। आशा है कि नये के सम्पादक युगान्तर की इस प्रशंसात्मक समालोचना को अपने पत्र में उद्धृत कर लेंगे। जिससे कि नया का सर्वत्र प्रचार होजायेगा।

बालादपि गृहीतव्यम्,
युक्त युक्तं मनीषिभिः ॥

आज कल हिन्दी संसार कवि टुकड़ों और लेखकों से भरा हुआ है साथ ही समालोचकों से भी। काव्य कला के कलेवर पर कलम कुल्हाड़ा शीर्षक के लेखक खुद तो कवि नहीं हैं नहीं पर चले हैं कविताओं पर समालोचना करने जिसने कभी काव्य रस का स्वाद नहीं चखा वह काव्य कला के मर्म को कैसे जान सकता है। बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद हम अपने में सबसे कुछ अनुभवी नया को यह जतलाना चाहते हैं कि जबर्दस्ती हर एक काम में टांग न अड़ानी चाहिये। ऐसा प्रतीत होता है कि अब वे कुछ हो गये हैं और [illegible] चाहिये। के लिये [illegible] भेजनी चाहिये।

सम्पादकीय टिप्पणियां

१- सुना जाता है कि साप्ताहिक नवयुग पार्लमेंट तक मासिक रहेगा। क्या यह सच है?

२- हमारी सम्मति में 'नया' में सिवाय 'कविता-काव्य-कला पर कलम कुल्हाड़ा' आदि कोरे समालोचनाओं के, कोई गम्भीर लेख नहीं है। भगतजी! या तो पूजापाठ करिये और या फिर इन पत्रों में पूरी तरह से ध्यान दीजिये। को न हो कि न फकीरी मिली न तो तरला; न इधर के रहे न उधर के रहे।

३- सुनते हैं कि सिन्धु-नदी में बाढ़ आने वाली है। भगवान से प्रार्थना है कि वे जल्दी ही कोई अगस्त्य का अवतार अरब पर उतारें जो वहां के अरबे पानी को सोख कर अरब और करब के सब कष्ट दूर करें।

४- मन्त्री मण्डल की तरफ से कोई पत्र नहीं निकल रहा। उनको देश के विषय में इतना बेफिक्र नहीं होजाना चाहिये।

५- 'नया' की नीति से ज्ञात होता है कि वह फ्रीट्रेड के पक्ष में है।

६- 'व्यवसाय संरक्षण समिति विधान' के मसविदे को पढ़ कर आशा होती है कि भावी में देश का इससे कल्याण होगा।

७- मालूम होता है कि 'नवयुग' के संरक्षण के भूमभवर को देख कर 'नया' का दिल दहल उठा है, और इसी से शायद उसने दूसरी नीति अख्तियार की है। भाई! इसमें उसका भी क्या दोष है आखिर नया ही ठहरा!!

गुरुकुल-समाचार

(१) कल रात को वाग्वर्धिनी सभा के प्रतिष्ठित सदस्य श्री-युद्धदेव जी विद्यालङ्कार का दुर्गा-पूजा पर प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। रवलवत जोश नर यो

(२) सरस्वती यात्रा— सुना जाता है कि इसबार कुछ ब्रह्म-चारी शिमला, कलकत्ता, काश्मीर, लैन्सडाउन तथा बंगलौर जायेंगे। हमारी शुभकामना है कि उनकी यात्रा निर्विघ्न हो।

(३) कन्सेशन— N.W.R के ट्रैफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट ने शिमला जाने के लिये प्रेषित कन्सेशन को देने से इन्कार कर दिया है और निम्न उत्तर दिया है—

"I regret to say that I can not give you concession according [to] our rules."

(४) कलकत्ते के लिये भेजे गये कन्सेशन का अभी तक कोई उत्तर नहीं आया है। हमारे कल-कत्ता के संवाददाता ने E.I.R के ट्रैफिक मैनेजर से बातचीत की है। उन्होंने आशा दिलाई है कि कन्सेशन स्वीकृत होजायगा।

(५) राष्ट्र-प्रतिनिधि सभा के मन्त्री कुर्सियों के इन्तजाम में लगे हुवे हैं। हमारे संवाददाता ने तार दिया है, कि कुर्सियां शनिवार की सायंकाल तक ज्वालापुर से गुरुकुल में आ-जायंगी।

(६) आचार्य जी के आज के पत्र से मालूम हुआ है, कि वे पार्लमेन्ट के ~~आगामी~~ इस अधि-वेशन में न आसकेंगे।

ॐ

वन्दे मातरम्

दैनिक विजय: वैजयन्ती।

४ नवम्बर गुरुवार

(६)

आज के विशेष लेख पढ़िए —

1- साबरमती की यात्रा -
2- डायरी के पन्ने -
3- गगनाङ्गण मे -
4- अञ्चल मे -
5- फुलझड़ियाँ —
6- क्या लिखा जाय -

सम्पादक

वैजयन्ती मुद्रणालय मे श्री देवनाथ द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित.

७म वर्ष.

मुख्यसंपादक - नरेन्द्रनाथ
संपादक शंकर...

अंक १४.

सत्याग्रह आश्रम और हम —

[illegible] सत्याग्रहाश्रम [illegible] [illegible] हमारे और सत्याग्रहाश्रम में [illegible] आश्रमवासी [illegible] को लेकर अपने आप को तैयार कर रहे हैं। यहाँ हम लोग किस प्रकार और किस उद्देश्य से जीवन बिता रहे हैं यह प्रत्येक कुलवासी अपने आप अपने हृदय को टटोल कर देख सकते हैं। सत्याग्रहाश्रम जहाँ आज सारे देश के लिये ही नहीं अपितु सारे संसार के लिये तीर्थ स्थान बन रहा है। आज राष्ट्रीय आन्दोलनों का केन्द्र आश्रम बना हुआ है क्या यह संभव नहीं कि हमारा कुल राष्ट्रीय आन्दोलनों का मार्ग दर्शक हो।

परिताप की बात तो यह है कि हिंदी और संस्कृत सीखने के लिये विदेशी यात्री आश्रम में आते हैं जो गुजरात प्रान्त में स्थित है जहाँ कि मातृभाषा हिन्दी नहीं अपितु गुजराती है। क्या हम कुल को जो हिंदी भाषा भाषी प्रान्त में स्थित है, जहाँ शिक्षा का माध्यम हिंदी है और संस्कृत के पुनरुत्थान और प्रचार का कार्य करने के लिये स्थापित हुआ है ऐसे शिक्षार्थी विदेशी विद्वानों का केन्द्र बना सकते हैं? हमने सर्व प्रथम भारत को मार्ग दर्शाया कि अपना काम आप करना चाहिये। संस्था का [illegible] संस्था स्थापित व पूरा करदे। हमने अपने हाथों से मकान भी उठाये पर आज वह भाव कहाँ है? क्या यहाँ फिर आने पर हम कह सकते हैं कि इसके अन्दर हमारा हृदय छिपा हुआ है। यह हमारी गाढ़े पसीने की कमाई है? स्वावलंबन का पाठ पढ़ाने वाला आज परावलम्बी बना हुआ है क्या यह शोचनीय परिस्थिति नहीं है?

महात्मा जी ने जन्मोत्सव पर संदेश देते हुए कहा था कि ब्रह्मचारी शौच जाते समय स्वयं अपने साथ ले जाय और मलमूत्र [illegible] जंगल में उठाने का सवाल नहीं है। महात्मा जी अपने संकल्पों की पूर्ति इसकी आशा इस कुल से करते हैं। क्या ब्रह्मचारी अबकी बार महात्मा जी के उपदेश को अमली जामा पहिना कर संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष का सत्कार और आशीर्वाद पाने का यत्न करेंगे? जयन्ती के अवसर पर महात्मा जी आवेंगे। क्या हमारे व्यवहार उनके संदेश के अनुसार — जो सिद्धान्त विरुद्ध न हों — होंगे?

हम पहिले भी कह चुके हैं कि कुलपति जी इस अवस्था में पहुँच गये हैं कि उनका जन्मदिवस समाजों में नहीं तो कम से कम गुरुकुल में अवश्यमेव मनाना चाहिये। उनकी जन्मतिथि प्रति वर्ष नवीन जीवन और नवीन उत्साह दान करेगी। क्या हम सत्याग्रहाश्रम से वीरपूजा तथा कर्तव्य की शिक्षा ग्रहण करना सीखेंगे?

बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में भी हमारा कुल सत्याग्रहाश्रम को अपना आदर्श बना सकता है। क्या हमारा कुल भी उन आदर्शों की ओर — जिन की कभी उद्घोषणा किया करता था — चलने के लिये अग्रसर होगा।

विजय वैजयन्ती

क्या किया जाय

गुरुकुल रजत-जयन्ती की अर्थसमिति ने हम पर १० हजार रुपया [illegible] ने का भार सौंपा था क्या ही अच्छा होता यदि यह निर्धारित रकम ही भरने पर यह न होगा था। पर इस राशि को बढ़ाना हमारे हाथ है। हम पिछले दिनों के सम्मिलित यत्न द्वारा इसमें बहुत कुछ सफल हुए हैं। यदि और भी समय दिया गया तो निश्चय है हम पूर्ण सफल होंगे। पर प्रश्न यह है कि इस धनराशि का क्या किया जाय इसको किस उपयोग में लाया जाय जिससे कुलवासियों के परिश्रम की यादगार बनी रहे?

इसमें किसी को भी विप्रतिपत्ति न हो है कि जो कुछ बनाया जाय वह श्री कुलपति के चरणों के नाम से बनाया जाय। प्रश्न केवल यह है कि वह चीज क्या हो?

किसी बड़े आदमी के नाम पर चीज बनाने का समय सर्वप्रथम उसकी इच्छा का ख्याल रखना चाहिये। उनके क्या स्वप्न थे, क्या उच्च इच्छायें थीं जिन को अपने काल में वह सम्पूर्ण पूरा नहीं कर पाया हो और उसको पूर्ण होते देखने की लालसा उस तपस्वी के हृदय में हो। उसी को उसके भक्तों और अनुयायियों को पूरा करना चाहिये।

दूसरा यह है कि जो काम हम कर रहे हैं उससे कितनों को लाभ होगा? क्या इसके सिवाय और कोई काम नहीं जिसमें अधिक से अधिक लाभ सम्भव हो?

तीसरा, चीज ऐसी हो जो चिरस्थायी भी हो और बनाने वालों के, जो इस को इन जिनके लिये बनाया जा रहा है उन दोनों के हित को बढ़ाने वाली हो।

इस आधार पर इन तीनों बातों पर विचार करने पर हम इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि सभा भवन ऐसी चीज नहीं है जो पूज्य कुलपति जी की इच्छा है, कोई प्रिय वस्तु नहीं जो जिसका सपना [illegible] कर हम प्रेमपात्र बनने का यत्न करें। सभाभवन का महत्व यद्यपि कुल के जीवन में बहुत ज्यादा है पर इस सभाभवन ने बनना अवश्य है। अतः इसके लिये हमारा परिश्रम करना कोई अर्थ नहीं रखता।

फिर दूसरा प्रस्ताव शील्ड का है। इसमें सन्देह नहीं कि शील्ड का निर्माण कुलवासियों के भाव को बढ़ायेगा। पर इसकी हमारे पास क्या गारंटी है कि शील्ड को हमारा गौरव सदा गुरुकुल में बनाये रखने में समर्थ रहेगा। हमारी शील्ड का हमारे घर में से ही दूसरों के हाथ में चले जाना कितनी लज्जास्पद बात है।

फिर क्या किया जाय, सवाल वैसा का वैसा ही बना हुआ है। हम समझते हैं कि प्रत्येक भाई ने अनुभव किया होगा कि गुरुकुल में व्यावसायिक शिक्षा का अभाव है। बहुत से माँ बाप इसी लिये अपने लड़कों को नहीं भेजते कि गुरुकुल में व्यावसायिक शिक्षा का अभाव है। हमारे से [illegible] प्रत्येक पूछता था कि यहां कौन सा हुनर सिखलाया जाता है। आज देश में बेकारी की समस्या प्रबल रूप धारण कर रही है। हमारे सामने भी यह समस्या आती है। इसके द्वारा आज हम स्वतन्त्र जीविका कमा सकेंगे वहां कुल भी स्वावलम्बी बन सकेगा। श्री पूज्य कुलपति जी की इच्छा थी कि कुल स्वावलम्बी बने। व्यावसायिक कॉलिज के लिये उन्होंने यत्न भी किया था। अतः अवश्य इस स्वप्न को पूरा करना हमारा कर्तव्य है। इसमें जहां हमारा लाभ होगा वहां आगे आने वाले भाईयों का भी भला होगा। यदि कॉलेज की बनने की सम्भावना नहीं तो कम से कम स्कूल की स्थापना तो असम्भव नहीं।

साबरमती की यात्रा

बापूजी के श्री चरणों में—

मेरे तीन सप्ताह

(ले श्री उपा० देवराज जी सेठी M A)

(२)

<u>बापूजी की दिनचर्या</u> सायंकाल लगभग छः बजे बाहर घूमने जाते है। उस समय प्राय बच्चे ही उन के साथ होते है। मुझे भी कई बार उन के साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बापू जी का बच्चों के साथ बिलकुल बच्चा होजाना देखकर मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती थी। बच्चों से गप्प शप्प लगाने, हसी मखौल करने कराने और विविध प्रकार की बच्चो वाली शरारत करने मे जरा भी सकोच नही करते। राह मे चलते चलते दो बच्चों के कन्धो पर हाथ रख कर झूलने लग जाते है। उन के चेहरे पर सारे दिन भर मुस्कराहट रहती है। हर कोई व्यक्ति उन से खुल्लम खुल्ला सब प्रकार की बाते, हसी मखौल और चुटकले करने की भी आजादी रखता है। एक दिन एक जर्मन महिला दोपहर को आई और कहने लगी—

जर्मन महिला- Bapu I have brought something for you

बापूजी- (खुशी के साथ) Hallow what is it Let me see it

वह महिला केले और पपीते की बनी मिठाई लाई थी और उसने कहा—

जर्मन महिला- Bapu you will have to it

बापूजी- I can not take it

पर महिला ने इस उत्तर की परवाह न की और चमचा लाकर बापूजी को जबर्दस्ती खिलाने लगी। बापूजी भी कब दबने वाले थे। उन्हो ने भट चमच छीन कर उलटा उस बाई के मुह मे देना शुरू कर दिया। इस पर बापू का बैठक खाना हसी से गूज उठा।

<u>बापूजी के घर का भोजन</u> बापू जी के घर मे नित्य प्राय १५, १६ आदमी भोजन करते है। भोजन बनाने इत्यादि का सब प्रकार का काम उन की सहधर्मिणी—जिसे सब आश्रमवासी <u>बा</u> कहते हैं, स्वयमेव अपने हाथो से करती हैं। इस काम मे आश्रम की एक और देवी उनका हाथ बटाती हैं। पर नौकर या नौकरानी पाकशाला मे कोई नही है। सुबह छः बजे से लेकर शाम ७ बजे तक वह अनथक बा किसी न किसी काम मे लगी रहती है। जिस स्नेह, प्रेम और उत्सुकता से बा भोजन बनाती और खिलाती थी उसे देख कर प्रतिदिन मुझे यही भान होता था कि मेरी प्यारी मा ही मुझे खिला रही है। बाहर के बापूजी की पाकशाला मे खाने वाले एक दो नही दर्जन के लगभग थे। ये सब लोग एक ही प्रान्त के या एक ही रुचि के न थे परन्तु भिन्न भिन्न प्रान्तो के भिन्न भिन्न रुचि के लोग थे। गुजराती, पंजाबी,

मद्रासी, हिन्दुस्तानपुरिये और यूरोपियन सभी तरह के लोग थे। बिचारी 'बा' का सारा दिन इन्हीं बातों में लगजाता है, परन्तु वे कभी उकताती नहीं हैं। खाना भी ऐसा वैसा नहीं उत्तम प्रकार का (Rich Food) बनता था।

आश्रम की सफाई – आश्रम बड़ा लम्बा चौड़ा है। आबादी और क्षेत्रफल की दृष्टि से गुरुकुल से कम नहीं है। सब प्रकार की सफाई यहां से बहुत अच्छी है। किन्तु बड़े आश्चर्य की बात यह है कि महात्मा सफाई में न कोई भंगी है और न कोई नौकर। शौच और मूत्र के लिए पक्की टट्टियां बनी हुई हैं। यहां की तरह जिस किसी झाड़ी या वृक्ष की ओट में आश्रमवासी पेशाब करने नहीं बैठ जाते। हरेक टट्टी में दो बाल्टियां रखी होती हैं। आगे वाली मूत्र और पानी के लिए दूसरी में केवल मल पड़ता है। शौच कर चुकने के बाद पास रखी हुई मट्टी खुरपे से उठा कर ऊपर डाल देते हैं। इस के फलस्वरूप न वहां बदबू आती है और न ही मक्खी मच्छर भिनभिनाते हैं। हां, आठ बजे खेत में गढ़ा खोदकर सब बाल्टियों के मल को और आश्रम का कूड़ा करकट डालकर सारे को मट्टी से पाट देते हैं। और बालटियों का दूसरा सैट जो पहले दिन धूप में सूख चुका होता है टट्टियों में रखा जाता है। इस प्रकार से सफाई खूब रहती है और दूसरे भूमि को सब से उत्कृष्ट खाद मिल जाता है। आश्रम की शेष सफाई का काम आश्रमवासी बारी बारी से करते हैं। इस सारे काम में केवल ८-१० व्यक्तियों का एक घंटे से भी कुछ कम समय खर्च होता है। जितने दिन मैं आश्रम में रहा उतने दिन बाल्टियों को उठा कर गढ्ढे तक पहुंचाने का काम मेरे सुपुर्द था। प्रतिदिन मैं यह अनुभव करता था कि सेवाभाव और नम्रता लाने के लिए यह काम बहुत सहायक है।

बापू जी शारीरिक श्रम को बड़ा उच्च पद देते हैं। वे केवल अक्षर ज्ञान और पुस्तक ज्ञान की बहुत कदर नहीं करते। उनकी यह धारणा है कि आज कल की प्रचालित शिक्षा प्रणाली में केवल पुस्तकीय ज्ञान होने से अजीर्ण होजाता है, विद्यार्थी की मौलिकता सर्वथा नष्ट होजाती है। उस को विकसित करने के लिए न उचित प्रयोग मिलता है न उचित समय मिलता है और नहीं अनुकूल परिस्थितियां मिलती हैं। उन्होंने स्वयमेव बहुत किताबें नहीं पढ़ी हैं। जो कुछ उन्हों ने पढ़ा है वह सब रेल यात्रा, जहाज की सफर और जेल खाने में पढ़ा है। अफ्रीका में बापू जी ने एक टोलस्टाय फार्म स्थापित किया था जो अब तक चल रहा है। उस का एक एक कमरा बापू जी के हाथ का बनाया हुआ है। एक बार अदालत में गवाही देते हुए इस प्रश्न के पूछे जाने पर कि 'आपका क्या पेशा है?' बापू जी ने स्वाभाविक रीति से कहा कि मैं पेशे से जुलाहा और किसान हूं।

बापू जी की जयन्ती – सौभाग्य वश आश्रम में पहुंचने के कुछ दिनों के बाद मुझे बापू जी की जयन्ती में सम्मिलित होने का अवसर मिला। २ अक्तूबर रविवार के पुण्य दिन प्रातः काल से ही

श्रद्धालु नर नारियो ने पुष्पों की माला तथा सुत्तों के हार बापू जी को पहिनाना प्रारम्भ किया। प्रार्थना के बाद सब आश्रम वासियों ने महात्मा जी की चरण रज ली। (वहां आश्रम वासी प्रतिदिन महात्मा जी को मिलने के समय चरणो में प्रणाम या अन्य आदर सूचक अभिव्यक्ति नही करते। एक घर मे जैसे छोटे बडे रहते हैं। वहां औपचारिकता की बू भी नहीं आती) इस चरण रज ग्रहण से आश्रम वासी मूक जबान से बापू जी को ५८ वें जन्म दिवस पर बधाई देते थे। इस के उपरान्त महात्मा जी ने अपने चचेरे भाई और उनकी धर्मपत्नी के पैर छुए तथा उन का शुभ आशीर्वाद ग्रहण किया। ६½ बजे सभा प्रारम्भ हुई।

सभा मे ईशस्तुति के बाद विद्यालय के मुख्याध्यापक ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट दी। रिपोर्ट पढी जाने के बाद महात्मा जी ने आध घण्टे तक भाषण किया। तदनन्तर आश्रम वासियों ने बच्चे बूढे जवान सब ने मिल कर तकली और चरखे पर दो घंटे तक सूत काता। मध्यान्ह के बाद दूसरी बैठक हुई। इस सभा का कार्यक्रम बडा लम्बा चौडा था। संगीत, देवियों का रास, वादित्र (International music) परस्पर सम्भाषण (Dialogue) के अतिरिक्त तीन नाटक हुए। प्रल्हाद, जीसस क्राइस्ट और जयद्रथ वध नाटक खेले गये। इस में प्रल्हाद नाटक अभिनय की दृष्टि से, जीसस क्राइस्ट भाव की दृष्टि से अनोखे थे। विशेष पोशाक तथा अन्य सामग्री के अभाव के साथ दिन मे खेले गए थे। शहर के प्रतिष्ठित वहां पर्याप्त संख्या मे उपस्थित थे। नाटक मे भाग लेने वाले प्राय: छोटी उम्र के लडके थे। तब भी सब प्रभावित हुए। सायं काल प्रीतिभोज हुआ। जिस मे आसपास के गांव के सब अछूत आदि सादर निमंत्रित थे। जी खोल कर मुक्तहस्त से मूंगफली और किशमिश बांटी गई।

बड़े आदमी

बड़े आदमी कौन हैं?

अजी वही जो सवेरे शाम हम शिमले की सड़कों पर देखा करते थे। बढ़िया सूट पहिनकर हाथ में बेंत वाला और सिर पर टोपी को थोड़ा टेढ़ा कर चलते थे।

भला उनकी खूबी क्या है?

वाह! क्या कहना, चाल ढाल, बोल-चाल, रंग ढंग निराले हों। बस निराले का नाम ही तो बाबू है।

मेरे साथी ने कहा - ज़रा ठीक २ समझाइये - इतने ही में चाचाजी आते हुए दिखाई पड़े मैंने कहा - गोपाल! मेरे साथ चलो।
(Restuarant) Block No 15 / quarter No. 79

चाची कमरे में बैठी थी, नीचे से खटपट सुन चौंकी, जोर से सबके रोने लगी - जब चाचाजी ने उन्हें शांत किया - बोली - आइये - सारी दुनिया के धर्मात्मा, अपना तो कुछ सिलवाना नहीं तो सोम का क्यों नहीं सिलवाते। एक निकर के लिये ही कहा है - जैसी 'सन्तोष' पहिनता है। अभी सन्तोष की माँ शाम आई थी और कहती थी कि "खद्दर आजकल सब छोड़ रहे हैं"। राजा के घर में भी बढ़िया नावी कट (Navy cut) आ चुका है तुम अपने यहां भी तो बढ़िया सामान मंगवाओ न।

चाचाजी - तुमने क्या कहा?

"कहना क्या था अभी बच्चे के लिये ऊंचे बूट नहीं लिये, ज़रा सी निकर सिलवा दी हो ती तब भी कहने को कुछ हो जाता - सारे बच्चे मिल कर खेलते हैं उनमें सोम - देखके गरीब सा लगता है।"

चाचा - (थोड़ी देर ठहरकर) आत्म सन्मान सूचक बोले - निक्कर को आदमियों की पोशाक है। ऐसा बड़ा आदमी हमने नहीं बनना। सोमनाथ की तभी क्या खराब है - बढ़िया खद्दर पाने का थान लाया था उसी की बनी है न।

चाची बोली - आपको खद्दर का ही भूत चढ़ा है। क्या कुछ और भी देखते हैं, १० आने गज़ की मोटी झीम ही ले आते इस खद्दर ने तो घर से भी निकलना बन्द कर दिया है - क्या पहिन कर कहीं जाऊं। प्रकाश की माँ क्या कहेगी? वे तो नये फैशन का सामान रखती हैं - उनके बाबू भी मना नहीं करते - वे भी Secretariat में हैं न।

बात काट कर मैं बोल पड़ा - चाचाजी एक निक्कर सिलवा दीजिये - छोटों को खूब फबती है पुरा रहते हैं इतने में है ही क्या?

एक बार प्रभावपूर्ण ; वो मेरे मुख पर देख के कहने लगे "नहीं मेरे भाई!!! क्या कहते हो आप नहीं जानते, पहिले निकर बनाने, फिर उसके साथ गैलिस भी होने चाहिये, फिर कोट भी चाहिये, इसके बाद बूट और कैप तो ज़रूर चाहिये। क्या गुरुकुल में यह पहिनाते हैं?"

इतने में सोमनाथ और सन्तोष खेलते हुए आ गये। सोम बोला - "चाचाजी! (पैर दिखा कर) मैं इसमें थोड़ी सी खरोंच लग गई थी।" ~~माँ ने~~

माँ ने नाथी नाथी नाम से बड़े प्यार से पुकारा और गोद में उठा लिया और कहने लगी - "यह है बूट न देने का फल।" फिर अन्दर से रबड़ के Boot लाकर पहिनाये और थापी दी और कहा - जा बच्चे! सन्तोष से खेल।

(२)

रोटी का समय आ गया था रात हो चली थी। ७ बजे थे, अंगीठी के सामने बैठ गये, कोइले दहक रहे हुये और गरम गरम भोजन उतर रहा था। चाचाजी अलग

अपने ख्याल में मस्त थे। हम दोनों खा-
ने बैठे। चाची ने भोजन परोसा। मैंने
चाय के लिये कहा, घर में चाय बनाना
मना था - अच्छा कह कर चाचीने सांस
भरी और कहने लगी कि पता नहीं इन्हें क्या
होगया है। सारे बाबू कहते हैं कि न कभी
अच्छा कपड़ा पहिनता है। खद्दर का पजा-
मा पहिन Office में आजाता है। गला
बंद कोट और सिर पर पगड़ी रख
फिरता रहता है। यह क्या मेज़ के नीचे बूट
देखो तो छोटी २ एड़ीवाले होंगे। हां दस
जोड़े जूते कोने में डाल रखे हैं।
बालदा बाबू चर्च राम भी कहते हैं कि Club
में चन्दा दे देते हैं पर टेनिस की खेल में
कभी शामिल नहीं होते। आश्रमों के
लिये भी चन्दा दे देते हैं। दीन दुःखियों
के लिये आप द्वितीय कर्ण हैं। खाने
पीने को देखो तो घर में घी दूध की कमी
नहीं है पर कपड़े धोती फटे हुए पहिनते
हैं। इम्तिहान की परीक्षा में तो ऐसे बन
कर गये थे कि साहबने बड़ी खुशी से
नौकरी में ले लिया फिर अब क्यों ढोंग
रचते हैं?
गोपाल मज़े से रोटी खा रहा था उसके दिल
इनके प्रति श्रद्धा का आविर्भाव हो चुका था
चाय के लिये उसे भी शौक न था इसलिये
उसने कहा कि भाभी जी! चाय तो नशे
की चीज़ है हां एक आध दफ़ा कोई पीले
तो कोई हर्ज नहीं। हां आपने यह क्या
फ़रमाया कि आजकल बड़े आदमी इनकी
तरह नहीं रहते। बड़े आदमियों की तो
कुछ और निशानी है। हां जी, बड़ा बनने
के लिये ज़रूर नया फैशन पहिनना
चाहिये। शिमले जैसे शहर में पुराने
ढंग का क्या काम, असली बड़े न सही तब
नकली बड़ा तो ज़रूर बनना चाहिये।

चाचीने अपने पक्ष में गोपाल को देख
एक C.I.D के समान कार्य करना शुरू
किया और कभी कान में धीरे से कभी
ज़ोरसे ऊंचे २ बोल कर बात पक्की कर-
नी चाही कहना शुरू किया - "सन्तोष का
पिता कैसा बनठनके रहता है, सारे
उसकी बड़ाई करते हैं; हमेशा चुस्त दिखाई
पड़ता है। मांस वांस खा लेता है उस
की क्या बात (गोपाल को देखकर) बलराम
जी? उससे तो कोई फ़र्क नहीं आता
तुम खाना शुरू करदो थोड़े थोड़े दिनों
बाद चुस्त होजाओगे और क्या।"

इस पर आपत्ति देख गोपाल ने
कहा - "आप इनसे क्या पूछते हैं। ब्रह्मचारी
जी को क्या मतलब - अजी मेरी समझ में
बड़ा बनने के लिये आदमी को अवश्य
मेव प्रयत्न करना चाहिये, और कुछ
नहीं, शकल सूरत तो ठीक रखनी चाहि-
येन, सवेरे १० बजे अंगड़ाई लेकर फौरन
उठे और शीशे के सामने खड़े हो तैलादि
लगा Break fast का जल्दी २ सूट
पहिन लम्बे २ डग बढ़ा चलदिये और
ऑफिस में जा टप टप शुरू करने लगे
क्या इससे अधिक भी कोई चीज़ है।
खाने खाने से वही रोटी मंगा कर खाली
और शाम को दोस्त मंडली में विचरते
रहे। भाभी जी ठीक है न। उन्होंने
भी हां कहा और कहा 'मेरे दिन फिर
नहीं कब फिरेंगे रोज़ रोज़ घर में
रोना रहता है" बीच दफा कहा
अपनी इज़्ज़त रखो, कह तुम्हारी भलाई
चाहते हैं - साहब हाथ नहीं मिलाते

फिर भी न जाने क्या होगया है।

गोपाल – (मेरी तरफ़) भाई देखो तो आज कल के बड़े २ नामधारी साहबी ठाठ से रहते हैं हरेक खुशामद करते हैं। जेबमें पैसे भी न हो पर बड़े २ साधुकारों की परवाह नहीं करते। दिल्ली-दिल में बिल्ली से भी डरते हैं पर अकड़ की बहार शेरों से कम नहीं।

तारीफ़ तो यही है :–

बड़े आदमी की बड़ी शान है।
बड़े आदमी की बड़ी आन है।
बड़े आदमी का बड़ा नाम है,
बड़े आदमी का बड़ा काम है॥

चाचाजी (दूसरे कमरे से) बलराम जी? यह क्या गारहे हो। मेरी समझमें नहीं आया। मैंने कहा इधर आइये। बहस की बात है वे अबतक सोमनाथ को खिला रहे थे साथमें उसे ले आये।

चाचाजी – क्या झगड़ा होगया है?

मैं – चाचीजी बिल्कुल ठीक कहती हैं कि बड़ा बनने के लिये पजामे की जगह पतलून और कुरते पर टाई कौलर और कोट रखने चाहिये अजी मेरी समझ में अच्छी तरह क्यों न बड़े बन जाय

चाचाजी – कैसे कहो?

मैं – अजी पहिले कोट बूट सूट पहिनना चाहिये। रास्ते में चलते हुए बच्चे को कभी गोदमें न लेना चाहिये चाहे वह रोवे Lady साहिबा को शाम सवेरे घुमाने ले जाय। गरीब आदमी को दो ठोकर और २० गाली सुनाये। राम का नाम भूलकर भी न ले। इसके बाद तमाखू का रुपया धुएं में उड़ाये, कई २ फैशन रखे। फैशन के लिये Times को भी पढ़ा करें भले पढ़ाई लिखाई चाल ढाल हो तब बड़ा बन सकते हैं।

चाचीजी – मैंने तो इसे कई बार समझाया इस प्रकार तो ये मानते ही नहीं। हमेशा बूट घड़ी और कीलों के लिये लड़ा करती है। तुम्ही मनाओ।

मैं – चाचाजी? मेरी समझमें तो बड़ा बनने के लिये कोट बूट की ज़रूरत है आजकल तो इसी तरह बड़े बन सकते हैं।

चाची – यह तो ठीक कहते हैं। मैं तो बलरामजी से सहमत हूं।

चाचा – अच्छा – मैं इस साल सोमनाथ को गुरुकुल पढ़ने भेज दूंगा। मुझे चालाक बनाने की ज़रूरत नहीं सीधा ही भला है। नौकरी के टुकड़े की जगह आज़ादी की रूखी रोटी चाहिये।

चाचाजी ने आज की बातपर विचार करना शुरू किया और आज रोटी भी न खाई। इसके बाद सोमनाथ गुरुकुल के १०वें वार्षिकोत्सव पर दाखिल होने के लिये भेज दिया गया।

बहुत दिनों बाद एक बार फिर उनका समाचार मालूम पड़ा। सन् १९२४ के दिन थे। गर्मियों का मौसम थी और वही शिमला शैल था।

(२)

सन् १९२४ का आरम्भ महीना था शिमले में बड़े २ आदमी हवा बदलने के लिये आये हुए थे। मैं भी कालिका की Train से शिमला पहुंचा। सोचा कि चाचाजी से मिलूंगा।

यह क्या! गाड़ी Station पर पहुंची। एक डब्बे से ४.५ खद्दरधारी व्यक्ति उतरे उनमें से एक के गले में हार लदे हुए थे।

स्टेशन, बाबू नामधारियों से भरा था। Band बज रहा था गाड़ी के पहुंचते ही एक आवाज़ गूंज उठी "बोलो श्री सोमनाथजी की जय" वन्दे मातरम्!!!

मैं सोमनाथ का नाम सुन कर चौंक उठा बहुत दिनों विदेश में रहने से मुझे उस नाम का स्मरण न रहा था। ज्यों ही स्टेशन पर खड़े होकर मैंने भी देखा – वही मेरा चचेरा भाई सोमनाथ था। आगे बढ़कर मैंने भी वन्दे मातरम् की। सोमनाथ जी ने पहिचाना

साथ ही चाची ने बड़ा प्यार जताया। उन्होंने खूब स्वागत किया। सोमनाथ को गुरुकुल जाने का पहले आनन्द आया। वह चाचा जी के साथ ही निकले।

धीरे 2 अपर बाज़ार में जुलूस पहुंचा वहां सोमनाथ पुस्तकालय, सोमनाथ भवन आदि कई स्थान देखे। इसके बाद बाजा वन्दन समाप्त हुए और हम भी गुरुकुल आर्य समाज में पहुंचे।

देश के विषय में सोमनाथजी से विविध बातें हुईं इसके बाद अन्य लीडर सोमनाथजी Town Hall में युद्ध भाषण करने आये। मैं तो थका होने से न गया।

भोजन के बाद बातों ही बातों में मैंने चाची से पूछा कि वह आदमी कौन होता है। सोमनाथ तो खिलखिला गया (खूब हंसी हुई)

आज चाची जी ने समझा कि वह आदमी 'कौन होता है।

—— ४०॥ ——

भारत के दस महान् पुरुष.

भारत के दस महान् पुरुषों के नाम ढूँढ़िए।
महत्ता में उनकी लोकप्रियता का ही प्रमाण
—— : होना चाहिए : ——

: नाम क्रमशः होने चाहिएँ :

शीघ्र
ही
वै
ज
य
न्ती
—— कार्यालय में पहुँचाइए ——

पंखड़ियाँ

उषा.

आशा की गलियों में वह दूर,
जहाँ रजनी का साथी नूर ॥१॥

(२)

हरखाली है शालि लता में—
सूर-चरण में फूल लिए—
कमल नयन का हार बनाकर,
भक्त भाव से है भरपूर ॥२॥

(3)

जीवन मन्दिर की वेदि पर,
तेज अर्घ्य की थाली है।
इच्छित फल को लाने वाली,
अक्षय वट की डाली है ॥3॥

(४)

सूर्य देव के दिव्य भवन में-
पवन राज के हिंडोले में—
चन्द्र किरण के मन्द हास में-
बाल उषा दिख पाली है ॥४॥

"श्री चन्द्रकान्त"

॥ विकसित कुसुम ॥

ललित मालती का यह विकसित कुसुम है ॥
चपल चंचरीकों के चंचल चितों को,
लुभाने में अनुपम ये विकसित कुसुम है ॥
गुलाबों की काँटे भरी डालियों से,
हमें बींध लेता ये विकसित कुसुम है ॥
न पहुँचे जहाँ लाल नीलम औ' मोती,
उन्हीं केश पाशों में यह विकसित कुसुम है ॥
हुई हार हीरों की हारों में हरि के,
मगर कण्ठ माला में विकसित कुसुम है ॥
जो भगवान के सीस तक आ विराजा,
जगत् में वही "प्रेमी" विकसित कुसुम है ॥

"प्रेमी"

श्री राम !

आज्ञा पिता तुम्हारी मैं सीस पैं धरूँगा ।
तन मन तेरे चरण पर अर्पित सभी करूँगा ॥

बलिहारि जाऊँ बेटा निस्वार्थ तव वचन पर ।
यह पाप का जो पुतला चीरूँ इसे छुरी धर ॥
मत बात ऐसी कहिए, मुझ से मेरे पिताजी,
गोदी में जिसकी खेला उसको यह हाल क्या जी ॥

❖ ❖ ❖

हे राम मेरे प्यारे माता के हे ! दुलारे !
रघुवंश के सितारे, काटो यह दुख हमारे ॥

"श्री योगीराज"

मयूर

साँझ की धूलि घनी होते ही जब,
वाटिका का मोर मेरा बोलता ।
भूल जाता शोक की सब ग्रन्थियाँ,
श्राल इस संसार की मिटती व्यथा ॥

क्यों न फिर हे विश्व के तुम राहियो !
वाटिका में बैठ कर आराम लो ।
क्यों न सुनकर मोर की मीठी ध्वनि,
खोल लेते दुःख की सब ग्रन्थियाँ ॥

"डालि"

बसन्त

सज धज आज बसन्त है आई ॥
रम्य ध्वजा उत पीत उड़ा इत-
कानन कोकिल कूक सुहाई ॥
फूल रही सर्षप मदमाती—
पीत प्रसून से डाल लजाई ॥
सुरभित सुमन सुवास सना यह,
पावन पवन बहे सुखदाई ॥
देख बसन्त का अन्त सन्त जन,
हिल मिल मंगल होरी मचाई ॥

"कोई"

मेधा

अमर लोग जिसे बहु पूजते,
पितर और ऋषी जपते जिसे ।
जगतपालक हे हमको यहाँ,
सुमति दे मतिमान करो हमें ॥ १॥

"छात्र"

वॉली वॉल के नज़ारे

—— श्री रवीन्द्रजी के सौजन्य से

डायरी के पन्ने.

१८ अगस्त का दिन था। आकाश बादलों से घिरा था। रिम झिम वर्षा हो रही थी। आधे से ज़्यादा साथी अम्बाला जा चुके थे शेष वहां जाने को उत्सुक और व्यग्र थे, आकाश की रंगत अस्थिरात्मा पुरुष के विचारों की तरह से प्रतिक्षण बदल रही थी। आकाश के समान हृदय भी आशा-सूर्य के प्रकाश से शून्य हो रहा था, पर निश्चय था कि आज यहां से चले ही जाना है चाहे बिजली गिरे आकाश फटे। हमारे दृढ़ निश्चय के सामने इन्द्रदेव ने सिर झुका लिया। हम लोग कालिका पहुंचे पर प्रसन्नचित्त थे। कालिका में जो दृश्य देखा हृदय टूक टूक हो गया और इसके साथ यह भी सूझा कि यह नज़ारा प्रतिसाल यहां नज़र आता है। चारों ओर अशिक्षित मज़दूर बैठे हों और हम शिक्षित लोग उनकी मज़दूरी का फ़ैसला न कर सकें, सब का कहना और समझना व्यर्थ जाय। यहां दिल में प्रश्न उठा कि वस्तुत: हम स्वराज्य के पात्र हैं?

आंखें फेरीं तो देखा कि काल के समान काले मेघ गर्जते आ रहे हैं, स्टेशन पर पृथिवी पानी पानी हो गयी; सिर छिपाने को कहीं जगह नहीं, अपने को बचायें या अपने सामान को? किसी का पता नहीं। ३½ बजे के बाद वर्षा थमी। गंगा पार हुए; हम ने सीधे दिल्ली जाना था। हमने साढ़े दस की गाड़ी से जाना था पर हम स्टेशन पर सात बजे से ही बैठे थे। यह पहिला अवसर था कि हम स्टेशन पर सामान के साथ दो तीन घण्टे बेकार बैठे हों और वो भी रात के समय। रह रह कर हृदय धड़क उठता था। आंखों में नींद थी पर सोने के लिए दिल न मानता था। गाड़ी आई पर आशानुकूल स्थान नहीं था, धक्कम धक्के से दूसरे के सामान पर खड़े हुए। गाड़ी ने दिल्ली में सुबह उतार दिया।

गुरुकुल से जाने का उद्देश्य गुरुकुल के लिए धन इकट्ठा करना था। गुरुकुल का प्रचार गाड़ी में बैठते ही शुरू हो गया। हमारी शक्लों और पहिरावे ने लोगों की आंखों को हमारी ओर खींचा। क्या आप गुरुकुल के ब्रह्मचारी हैं? आपके Muscles उन्नत नहीं, आप हृष्ट पुष्ट नहीं, आप के चेहरे पर तेज नहीं; आप में और कालिज के विद्यार्थियों में क्या अन्तर है? इत्यादि प्रश्नों की बौछार होने लगी। राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थक थे लाला लाजपतराय का नाम सुनते ही पंजाबी शिक्षित जवान आवेश में गर्ज उठा। लाला जी को यदि पाता तो कच्चा ही खा जाता। लाला जी ने उस के जीवन के साथ कितने नौजवानों के जीवन

अञ्चल मैं.

बंगाली रंगमंच

स्त्री पार्ट पुरुषों द्वारा — 'राष्ट्रीय नाटक मण्डली' में स्त्रियों के भाग को खेलने वालों में निम्न व्यक्तियों के नाम ध्यान देने योग्य हैं — बाबू अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी, बाबू अमृत लाल बोस, बाबू क्षेत्र मोहन गांगुली इत्यादि इन्होंने स्त्रियों का Part बड़ी चतुरता से किया जैसे बाबू क्षेत्र बाबू का सहपाठी था। 'लीलावती' के रिहर्सल के समय बाबू गिरीश चन्द्र घोष को क्षेत्र बाबू का परिचय नगेन्द्र नाथ बनर्जी ने करवाया था और ये भी स्त्रियों के भाग के लिये चुने गए। बाबू क्षेत्र मोहन गांगुली स्त्रियों के नाटक मण्डली में प्रवेश करने के उपरान्त भी वीरांगनाओं का पार्ट करते रहे।

महान राष्ट्रीय नाटक मण्डली — बाबू धर्मदास सुर और बाबू भुवन मोहन नियोगी का बंगाली नाटक के अधिकारियों के साथ छोटी बात पर तकरार हो जाने के कारण इस महान राष्ट्रीय नाटक मण्डली का जन्म हुआ जो Beadon Street में खड़ा किया गया जहां पर कि इस समय मिनर्वा नाटक घर खड़ा है। बाबू भुवन मोहन नियोगी इस धन से सहायता देते थे और बाबू धर्मदास सुर ने इसका निर्माण किया जो कि पहिले भी नाटक कर चुके थे। इस थियेटर की व्यवस्था करने में बाबू योगेन्द्र नाथ मित्र ने भी सहायता की थी। इसमें तात्कालिक घर के राष्ट्रीय नाटक मण्डली के अवशेष नर भी इसमें पार्ट करते थे। यह Great National theatre १८७३ की ३१वीं दिसम्बर को स्थापित हुआ।

स्त्री नटी — यद्यपि बाबू गिरिश चन्द्र घोष प्रारम्भ में प्रत्यक्ष तौर पर इसमें सम्मिलित नहीं थे परन्तु अप्रत्यक्ष तौर से इससे सम्बन्ध रखते थे। 'मृणालिनी' नाटक १८७४ की १४ फरवरी को उनके द्वारा खेला गया जिसमें कि उन्हों ने 'पशुपति' का पार्ट लिया। कुछ महिनों बाद 'कपाल कुण्डला' नाटक खेला गया स्त्री नटियों ने इसमें उसी वर्ष की २१वीं सेप्टेम्बर को प्रवेश किया जब कि 'सती कलंकिनी' का खेल हुआ। इसके बाद इस थियेटर की व्यवस्था एक बाबू प्रताप चन्द्र जौहरी जो कि मारवाड़ी व्यापारी थे बने और मैनेजर का पद गिरिश बाबू ने अंगीकृत किया और इसी समय से बंगाली रंगमंच व उनके पूर्ण रूप से हाथ में आ गया। वह ही सब खेलों का कर्ता था अतः बंगाली स्टेज का पिता गिरीश बाबू को कहा जाता है।

विजय वैजयन्ती

गिरिश बाबू का 'रावण वध' नामक नाटक सबसे पहिले राष्ट्रीय नाटक मंडली में खेला गया।

गिरीश और उसके सहायक – कुछ सालो बाद गिरिश चन्द्र ने अपना सम्बन्ध प्रताप लाल जौहरी और उनकी नाटक मंडली से तोड़ दिया। उसी के साथ २ अमृत लाल मित्र, अमृत लाल बोस, हरी प्रसाद बोस और देश चरन न्योगी आदि थे जो उन्हीं के साथ ही राष्ट्रीय नाटक मंडली में प्रविष्ट हुए थे उसको छोड़ कर चले गये।

Bangal theatre – सान्याल बाद के National theatre के खेलो से प्रभावित होकर बाबू शरच्चन्द्र घोष ने बाबू बिहारीलाल चटर्जी से मिल Bangal theatre १८० अगस्त में खोला और उसी साल ही Beandon Streets में 'शर्मिष्ठा' नाम का खेल हुआ और उसके बाद ही 'माया कन्या' का अभिनय किया गया।

महन्त की घटना – तारकेश्वर के महन्त और एलोकेशी के आन्दोलन से प्रभावित हो बाबू लखु गोपाल चटर्जी ने 'महन्त एलोकेशी' नाम का ड्रामा लिखा। महन्त का पार्ट बिहारी बाबू ने किया। बाबू बंकिम का 'दुर्गेशनन्दिनी' भी बड़ी उत्तमता से खेला गया। शरच्चन्द्र घोष ने 'जगत सिंह' का, हरी बोस ने 'उस्मान' का, बिहारी बाबू ने 'अभिराम स्वामी' का पार्ट लिया। Bangal theatre के स्थापना दिवस से १८७३ से १९०१ तक बाबू बिहारी लाल चटर्जी इसके व्यवस्थापक रहे और यह भी Bangal theatre की मृत्यु के बाद २ सप्ताह के भीतर ही बन्द हो गया।

बाबू शरच्चन्द्र घोष की असामयिक मृत्यु के बाद बिहारी बाबू ही Bangal theatre के जीवन थे, वे कवि थे, नाटककार थे एवं उन्होंने बहुत से बंगाली नाटक लिखे जो कि Bangal theatre में खेले गये। बंकिम बाबू के अधिकतर नाटक भी Bangal theatre में खेले गये।

राजकीय नाटक मण्डली – १८६० में जबकि H R H एडवर्ड कलकत्ता पधारे थे तब Bangal theatre में उनके सम्मान में नाटक खेला गया। इसके बाद से ही इसने 'राजकीय नाटक मण्डली' नाम धारण किया। बिहारी बाबू शेक्सपीयर के विद्वान और रिचर्डसन के शिष्य थे। आपका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था।

Royal Bangal theatre के बाद अन्य बहुत सी कंपनियों ने वहां पर अपने नाटक किये परन्तु सफल न हुए। इन सब के नष्ट हो जाने के बाद इमारत खड़ी करके Beandon square post office बना दिया गया है

(असमाप्त)

वॉली बॉल के दृश्य

स्वराज्य क्या है.

हम स्वराज्य प्रेमियों को मन, वचन, कर्म से सब पर साबित कर देना है कि हम हिन्दू राज्य या मुसलमानी राज्य नहीं चाहते। इसलामी सभ्यता को मिटाकर वैदिक सभ्यता कायम करना या किसी एक सभ्यता या संप्रदाय, किसी एक फिर्के या श्रेणी का दूसरी सभ्यताओं संप्रदायों, फिर्कों और श्रेणियों को मिटाना या दबाना यह स्वराज्य का अर्थ नहीं है।

स्वराज्य तो वसंत की हवा है जिसके चलते ही जमीन का ज़र्रा ज़र्रा निखर जाता है पत्ता पत्ता संवर जाता है, रंग बिरंगे फूल खिल उठते हैं और रग रग में खून दौड़ जाता है। वसन्त की हवा से एक ही रंग के फूल नहीं खिलते बल्कि यह सारी चेतन सृष्टि पनप उठती है। उसी तरह स्वराज्य में भी सभ्यताओं और संप्रदायों की बहार आवेगी। अब वे दिन नहीं रहे कि किसी स्वतंत्र देश में एक धर्म अथवा एक श्रेणी के लोग दूसरे को दबा सकें। स्वराज्य ही परस्पर स्वार्थ और अन्याय से और अन्य देशों के हमले स्वार्थ और अन्याय से हमें बचायेगा। "श्री [illegible]"

<u>क्या यह उचित अभियोग है</u> - श्री स्टेनले राइस महोदय एशियाटिक रिव्यू नामक पत्र में शासक देश से शासित देशों पर लिखते हुए भारत के बारे में लिखते हैं :—

"शासक देश से शासित देशों के उदाहरण सम्मुख रखते हुए धर्म बाधा रहित है, विचार बन्धन विहीन है, व्यापार अबाध है। भूमि वहां के निवासियों के अधिकार में है विशेषज्ञों ने आश्चर्यजनक उन्नति की है। अन्तोगत्वा, पर सर्वाधिक महत्व पूर्ण बात यह है कि भारत से लौटा हुआ ऐसा कोई अंग्रेज नहीं है जो भारत भूमि के लिये प्रसन्नतादायक स्मृतियां साथ न लाय और अपने प्रेमी मित्र वहां न छोड़े। उसके लिये भारतीय सिपाहियों के लिये बड़ा ही प्रेम भरा है। स्वातंत्र्य इच्छा के प्रतिरोध ने इस चमकीले दृश्य को धुंधला कर दिया है पर अब भी भाव पूर्ण आदर्श व्यक्तिगत सम्बन्ध सहयोग मय है। हम भारतीय शासन की रिपोर्ट किसी अन्तर्राष्ट्रीय समिति के सामने नहीं पेश करते परन्तु हम संसार के पंचों के फैसले के सामने खड़े होने को उद्यत हैं। यदि और सारे शासक देशों का प्रबन्ध भारत की तरह किया जावे तो भारतीय शासन प्रबन्ध में शिकायत की गुंजाइश न रहेगी।" श्री राइस पूर्वीय अफ्रीका और भारत की तुलना करते हुए यह भूल गये कि भारत अफ्रीका नहीं है जैसा उन्होंने आगे कहा है कि "इस देश की सभ्यता प्राचीन है और प्रत्येक अंग्रेज को इधर ध्यान देना चाहिये।" पर अफ्रीका का शासक देश अधिकार में अभी [illegible] सौ साल भी नहीं हुए हैं और भारत का शासन अंग्रेजों के हाथ में १५० वर्ष

साल से ज्यादा हो गये हैं। इस अरसे में पढ़ने या लिखने वाले कुल मिलाकर १ करोड़ २० लाख आदमी हैं जहां की आबादी ३३ करोड़ लोगों की है। यह शिक्षा की आश्चर्यजनक उन्नति है। धर्म की स्वतंत्रता, प्रयाग की रामलीला का बन्द होना बता रहा है। किसानों के लिये शासकों के हृदय में कितना प्रेम है यह सर चमन लाल के इस कथन से स्पष्ट पता लगता है कि ४० लाख आदमी एक समय आधा पेट खाकर गुजर करते हैं। गुलाम व्यापार भारत का है और अभी तक कच्चा माल पैदा करने वाला बना हुआ है। इन डेढ़ सौ सालों में भारत ने कितना पाया है और कितना खोया है, यदि इसके आंकड़े इकट्ठे किये जायं, तो पता लगेगा कि ब्रिटिश प्रभुत्व कितना भारत के हक में नुकसान पहुंचाने वाला है। ब्रिटिश शासन के द्वारा जो नैतिक पतन हुआ है वह इतिहास से छिपा है। क्या इसी पर अंग्रेज लोगों को नाज है।

जननी

भुवन मन मोहिनी जग-जननी

जयति जय जय भारत जननी ॥

देह कलेवर और सुविशाल, हिमाचल अंबर चुंबित भाल

जाह्नवी जमुना उरसि विशाल, अनिल-कंपित-अंचल धरणी ॥ भुवन ॥

इन्दु भानु लसित छत्र घनश्याम, शुभ्र हिम-नीहार किरीट ललाम।

शोभित कटि, गंग भुज वाम, चारु हासिनी शुचि शशिवदनी ॥

श्यामवन उपवन कुंचित केश, सुधा सावन कुच कलश अशेष।

जानु युग सिंधु कूल सुविशेष, नीरनिधि सिंहासन चरणी ॥

जयति जय शक्ति-भक्ति-आगार, पुण्य प्रतिभा प्रतिमा अवतार।

भद्र भाविनी-ऋद्धि भंडार, देवि कमला सरसिज शयनी ॥

जयति जय कलिमल-दहनि कराल, भीम रूपिणी युग लोचन ज्वाल।

विधुर वर दश-पाणि प्रखर कर-वाल, मुंड-मालिनी अरि दलिनी ॥

रुचिर कल्याण मयि माँ, धन्य, शक्ति स्वातंत्र्य-स्वरूप अनन्य।

लोक-गौरव-गरिमा-स्थापनी, नीर प्रसविनी, भव-भय-हरिणी ॥

(स्वर्गीय श्री शिव प्रसाद गुप्त 'कुसुम' के आत्मकाहित नाटक से ।)

गगनाङ्गण में—

कुमार प्रेस में विजय-वैजयन्ती— हम अपने पाठकों के पास यह समाचार बड़ी प्रसन्नता के साथ पहुँचाना चाहते हैं कि विजय-वैजयन्ती के २ पिछले पत्र गुजराती कुमार के संपादक महोदय ने अपने कार्यालय में रख लिये हैं। कुमार में 'विजय वैजयन्ती' हूबहू अनुदित होकर निकलेगी प्रकाशित होगी। जहां तक यह सौभाग्य अन्य गुरुकुलीय पत्रपत्रिकाओं को अभी नहीं प्राप्त हुआ है। इस प्रधान सौभाग्य पर यदि विजय वैजयन्ती के कार्यकर्ता अपने परिश्रम को सफल समझें तो अनुचित न होगा।

मिल गई— प्रश्न-पत्रिकों को यह सुन कर हर्ष होगा कि ५०० बीघे जमीन हरिद्वार स्टेशन से लगभग २ मील दूर और ज्वालापुर स्टेशन से १½ मील पर गुरुकुल के लिये मिल गई है। यहां से नहर २½ मील दूर है। दीवाली के दिन जमीन मिलने का समाचार का मिलना शुभ है। नई जमीन की नई बहारों की कल्पना कुलवासियों में उठनी स्वाभाविक है। परमात्मा उन कल्पनाओं को मूर्त रूप दे यही हमारी हार्दिक इच्छा है।

तथ्य क्या है:— यह सुनते २ थक गये हैं कि कुल में जीवन नहीं है। कुल का जीवन प्रकार इस समय ठहरा हुआ है। हजारों वायु के झोंके भी लहरें भी इस जल को आन्दोलित करने में समर्थ नहीं हैं। पर क्या यह वास्तव तथ्य है? हमारा कहना है कि जीवन है पर बंधा हुआ है। हमारे में रचना करने की शक्ति है पर कार्य की लगन नहीं है। हम उत्तरदायित्व को अनुभव नहीं करते। उत्तरदायित्व लेने से हम में से प्रत्येक बचना चाहता है। जो कोई लेता है उसको फिर हम सर्वथा समझकर छोड़ देते हैं। जरा सी गलती पर तिल का ताड़ बना दिया जाता है। यह नहीं सोचा जाता कि उसमें हमारा भी हाथ है। यदि यह काम खराब हुआ है तो क्या हम उसके लिये जवाबदेह नहीं। एक सभा का मंत्री जहां जवाबदेह है किसी काम के लिये, वहां सभा के सदस्य भी उतने ही अंशों में उस काम के लिये जवाबदेह हैं। जब तक हम यह नहीं अनुभव करेंगे तब तक कुल के जीवन में परिवर्तन होना संभव नहीं है। हमारा सहयोग निर्वाचनों तक रहता है उसके बाद मंत्री को अकेला छोड़ दिया जाता है। इस के अलावा हम लोग किसी दूसरे के नीचे रहना सर्वथा पसंद नहीं करते। एक बाहर वाले आदमी के नीचे हम खुशी से रहते हैं पर अपने आदमी के नीचे रहने को हम तैयार नहीं हैं। जब तक यह मनोवृत्ति बनी हुई है तब तक कुल के जीवन में [illegible] आशा करना बिल्कुल बेकार है। अनुशासन और नियंत्रण के बिना समाज का जीवन संघटित और व्यवस्थित नहीं रह सकता। हम में इन दोनों का अभाव है पहिले भी ये दोनों बातें हम में न थीं पर उस समय हमारा ध्यान दूसरी ओर था। सब शक्तियां हमारी उधर लगी रहती थीं आज जब उधर का कोई झमेला नहीं तब हम आपस में उन शक्तियों का उपयोग कर रहे हैं। हम वैध उपायों और वैध प्रणाली का मार्ग ग्रहण करना पसंद नहीं करते। [illegible] हमारी इच्छा पूरी होनी चाहिये। जो लोग आजकल मुख्य हैं क्या वे लोग कभी लोकमत की परवाह करते हैं? पर आश्चर्य यह है कि जो लोग लोकमत की उपेक्षा कर उपयोग करते हैं वही हमारे आगा

करते हैं। हमको इन बातों पर गंभीर विचार करना चाहिये वरना आगे भी यही सुनते रहेंगे कि कुल में जीवन नहीं है।

कारण क्या है — कुल में जीवन-प्रवाह के शिथिल हो जाने के कारणों में सभाओं का भी शिथिल हो जाना है। सभायें जब शिथिल हुई हैं तभी जीवन प्रवाह मन्द हो गया है। सभाओं का जीवन शिथिल क्यों है यह सोचने के लिये कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं। सूचनायें निकल जाती हैं और खानापूरी हो जाती है और अधिवेशन नहीं होता न उल्लेखित कार्य होता है क्योंकि इन बातों को हम उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। हम सप्ताह में २,३ घंटे भी अपने सामाजिक जीवन को कायम रखने के लिये देने को उद्यत नहीं हैं। जब तक यह हालत है तब तक कुछ अधिक की आशा करनी व्यर्थ है।

आगामी निर्वाचन — दिवाली के बाद सभाओं के कार्यकर्ताओं और कुल मंत्री का चुनाव होने वाला है हम इस अवसर पर कुल बन्धुओं से कहना चाहते हैं सभाओं के कार्यकर्ताओं के चुनाव करते हुए यह ध्यान रखियेगा कि वे सज्जन दिलचस्पी लेते हैं या नहीं। केवल योग्यता काम नहीं देती। जो लोग रातदिन परिश्रम कर रातदिन जाग कर कार्य करते हैं वे लोग हमारे विचार मानपाने के अधिकारी हैं। हमारे हाथ में एक अपने भाई का सम्मान करने का केवल यही तरीका है। इस शक्ति को हमें खूब सोच विचार कर उपयोग करना चाहिये। कई ऐसे सज्जन कार्यकारिणी में पहुँच जाते हैं जो कभी साधारण अधिवेशन में दर्शन तक नहीं देते। कार्यकारिणी में भी कई बार बुलाने पर आते हैं। कई सज्जन अधिवेशन तक कार्य करते हैं असहयोग कर लेते हैं। इन सब बातों पर विचार कर के अपनी वोट का उपयोग करना चाहिये। यदि सचमुच जीवन के शैथिल्य को दूर करना चाहते हैं तो यह हमारे हाथ में है कि हम अपने वोट का उपयोग ठीक तौर से करें। हमें सभाओं के पुराने कार्यकर्ताओं से कहना है कि आप लोगों को अपने स्थान नये लोगों के लिये खुशी से छोड़ देने चाहिये। आपकी शोभा इसी में है कि आप अनुशासन का उत्तम आदर्श नये सदस्यों के सामने रखें। हमें विश्वास है कि ये बातें जिस भाव से लिखी गई हैं उसी भाव से ली जायगी।

२. **प्रस्ताव** — कुल मंत्री का चुनाव दिवाली के बाद होगा। कौन उम्मेदवार हैं और इन उम्मेदवारों में कौन वोट पाने के अधिकारी हैं इन बातों की चर्चा हम लोग नहीं चलाना चाहते कि कुल मंत्री का चुनाव करते समय 'रजत जयन्ती' को न भूलियेगा। हम जानते हैं कि जिस प्रकार से इस समय चुनाव होता है वह उपयुक्त नहीं है। हम चाहते हैं कि कुलमंत्री का चुनाव इस सिद्धान्त से हो कि इतने वोटों में से जो इतने वोट पावेगा वह कुल मंत्री-पद का अधिकारी होगा। चाहे वह संख्या कुल मतों की 1/2 हो या 1/3 हो या 3/4 हो। इससे यह लाभ होगा कि कोई ऐसा व्यक्ति कुल मंत्री न हो सकेगा जिसको कौंसिल का बहुमत नहीं चाहता। वर्तमान प्रणाली में यह संभव है कि ऐसा जैसा गतवर्ष हुआ था। कौंसिल के केवल 1/3 वोटों से कुलमंत्री चुना गया था अन्य उम्मेदवारों की अपेक्षा ज्यादा वोट जरूर थे पर कौंसिल का बहुमत उधर न था। इसके पीछे से कुलमंत्री को

गतांक से

जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है उनसे कुलभूमि बच जायगा और निवासी को असुविधा होने का मौका न मिलेगा।

दूसरा कारण यह है कि क्रीडाभूमि का चुनाव इसी समय दीवाली के बाद हुआ करे। इससे जहां क्रीड़ाभूमि इसलिये आराम कर सकेगा वहां आगे स्थल में होने वाले क्रीड़ाभूमि को सामान के अभाव का कुसमाविला न करना पड़ेगा। आशा है कि हमारे इन प्रस्तावों पर विचार किया जायगा

आवश्यकता है

१- वैजयन्ती के लिए चतुर कार्टूनकारों तथा स्केच कर्ताओं की, जो प्रतिदिन गुरुकुलीय खेलों के चित्र दे सकें॥

× × ×

२- सन्देश हरों तथा संवाद दाताओं की जो प्रतिदिन गुरुकुलीय खबरें शीघ्र पहुँचा सकें।

× × ×

३- आशु कवियों की जो गुरुकुलीय ओलिम्पस की खेलों की काव्य-मय मनोरंजक रिपोर्ट वैज-यन्ती में प्रतिदिन दे सकें। पुरस्कार की आयोजना है।

४- यात्रियों के अनुभव तथा अन्य प्रकार के बोधमय लेख छापने के लिए "वैजयन्ती" के कालम खुले हैं- जो भाई देना चाहें शीघ्र ही देवें।

प्रबन्धकर्ता
दैनिक "विजय की वैजयन्ती"

धीर दल

वा॰ । बॉल मे परियाला दल विजयी रहा ।

— गैरगी हॉकी सालुरवा की धूम —

—— क्रीडा क्षेत्र मे हॉकी का जग ——

दलो का अपूर्व उत्साह :: वाह वाह की धूम

हीरक दल विजयी हुआ !!!

दर्शकों की भीड़

एफ यू॰ सी पराजित हुई ॥

मु
कु
ट

और —

हीरक दल फाइनल में पहुंचा ::

५ नवम्बर शुक्रवार प्रातः काल को

फिर वारंगी मैच होगा ।

आईये !! आईये !!

गु० कु० चौरंगी सानुरव्य

राम ३७

कविता तथा विनोद

नाचत हियौ मेरो सुनि सुनि जय राम की ।

बाजति हैं सेहनाई, घर घर मङ्गल होति बधाई ।
सब मिलि बोलैं जय रघुराई, जय जय सुख धाम की ॥ नाचत हियौ०

दशकन्धर को मारि गिरायौ, पापताप से नाम मिटायौ
धर्म वैजयन्ती फहरायौ, जय जय जय पूरण काम की ॥ नाचत हियौ०

मुकुट धरौ जय का सिर ऊपर, रवि कुलकुमुद कमल शशि दिनकर
बिलसैं मुक्ता माल पहिर कर जय जय सीय ललाम की ॥ नाचत हियौ मेरो०

श्री पु. आनन्द

विशालता

जमीन और आसमान.

नीले आसमान को देखता हूं तो मुझे [illegible] यही सब बौना दिखाई देता है। इस विशाल गम्भीर नीले आसमान में तारों का [illegible] [illegible], न जाने कौन कौन से मधुर संगीत हरवक्त इस में से निकल कर दिग्दिगन्त में फैलते रहते हैं। मैं उन तानों को सुन कर मुग्ध हो जाता हूं। जब मैं इस की विशालता का अनुभव करता हूं तो मैं सोचने लग जाता हूं कि क्या संसार में भी कोई वस्तु इतनी विशाल है।

दूर इस ज़मीन को भी तो देखो, यह भी कितनी विशाल है। इसे इसी लिये पृथ्वी कहते हैं क्योंकि यह फैली हुई है। इस हरी हरी विशाल भूमि और इस नीले आसमान में कितनी समानता है। मैं जितनी दूर दृष्टि दौड़ाता हूं यह समता मुझे बराबर बढ़ती हुई सी नज़र आती है। वह देखो, वह दूर, अनन्त दूरी पर किस प्रकार ये दोनों एक दूसरे से मिलते हैं। मैं अब भूतल और स्वर्ग के इस दिग्दिगन्त में अपूर्व अनुपम मेल को देखता हूं और मेरी दृष्टि वहीं गड़ जाती है। प्रकृति की इस विशाल समता को मैं हृदय में नहीं समा सकता. क्यूं? अनुभव के लिये विशाल हृदय चाहिये, ओह! मेरा हृदय इतना विशाल नहीं.

मैं अपना धर्म देखना हथेली पर जान रखना है। बस तुम चले जाओ, नहीं तो —— "

मेरी आंखें उसके प्रकाश से चकरा गईं ; मैं बोलना चाहता था, लेकिन बोल न सका, चुपचाप हाथ जोड़े सामने खड़ा रह गया। —

उसने फिर कहा - " चले जाओ, नहीं तो आज की बार — "

मैं पत्थर की तरह अचल खड़ा था, कुछ भी न कर सका। उसने एक बार जोर से पुकारा [illegible] फिर मैंने डर के कहा, "क्या तुम नहीं जाओगे ? आज की बार तो अवश्य ही — " पर बातचीत में क्या रखा, डर के मारे मेरे कदम न आगे उठते थे न पीछे, आंखें न खुलना चाहती थीं, न बन्द हो सकती थीं। मैं ज्यों का त्यों खड़ा रहा.

उसके सामने सात रंग का मिला प्रकाश मुख पर पड़ने लगा। उसने झट से अपना हाथ किया कि उसके हाथ में मुझे एक पतली रस्सी सी दिखाई दी। उसने मुझे बांधना शुरू किया. अब तो गजब हो गया, असह्य पीड़ा मालूम हुआ। मेरे सब अंगों की एक एक मांस पेशी ऐसी मजबूत जकड़ गई, मानो सब अंग अभी टूट जावेंगे। उस हालत को आज याद करता [illegible] भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं, आंखों पर अंधेरा छा जाता है।

उसने अपना हाथ मेरी आंखों पर फेर दिया मुझे दिखना बन्द हो गया. फिर झट से उसने अपना एक पैर ज़मीन पर मारा। न जाने कहाँ किस रास्ते, ज़मीन के अन्दर होकर मुझे कहां उठा ले चला। अभी मुझे दिखता भी न था उसने मुझे एक लोहे के तख्त पर ला बिठाया मैं चुप रहा, बोलता तो जान का खतरा [illegible], बोलने की शक्ति [illegible] नहीं थी। तीन दिन इसी [illegible] रहा, न कुछ खाया न पीया.

चौथे दिन मुझे फिर वहीं पहुंचाया गया और उसी प्रकार फिर उसने मुझे कहा -
" अब तो चले जाओगे न ? "

मैं फिर अवाक् रह गया, पीछे मुड़ कर के देखा तो फौज ने [illegible] के [illegible] जमाये. उन लोगों ने इस जगह को दो तीन मील तक घेर रखा था। इस समय उस आदमी के साथ एक और भी भोली भाली शकल थी। उसने ताली बजाई; इस पर मेरे देखते ही देखते मिनट भर में सारी फौज उस तरफ में चली गयी। इसके बाद फौज की कोई घटना मुझे याद नहीं, अब कुछ उन लोगों के विषय में तथा अपनी हालत के बारे में कहूंगा ॥

—— शेष फिर.

मियां मौलाबख्श की सवारी

काश्मीर की अनुयात्रा के अन्दर मियां मौलाबख्श का वर्णन न हुआ तो काश्मीर की यात्रा ही क्या रही। निशात और शालामार के फव्वारों में वह सौन्दर्य नहीं, डल और मानस-बल की झीलों में वह अनूठा पन नहीं जो इस दो पैर के पुतले के अन्दर था। आपके पैर बाइसिकल की तरह सड़क पर रिड़कने वाले थे। इनका काम केवल जम्मू से श्रीनगर और श्रीनगर से रावलपिण्डी के पड़ाव देखना था। बटोत के दृश्य, पीर के स्वर्गीय झरने की अपेक्षा पड़ावों की बन्द काली कोठरियां इन्हें ज्यादा पसन्द आती थीं।

जिस समय मैं वैरीनाग के चश्मे पर बैठा हुआ अपने को भूल गया था, जब उस स्वर्गपुरी में बैठ दुनिया के झंझटों को भुला चुका था, जब आकाश से भी नीले, बर्फ से भी ठंडे चश्मे में मछलियों का रम्य कल्लोल देख रहा था उस समय इस हवाई खटोले ने हाथ पकड़ कर कहा 'चल, जल्दी चल श्रीनगर भी पहुंचना है कि नहीं?' मैंने आह भर कर कहा खुदा! ये तो बहिश्त में भी इन मियां से पिण्ड न छूटा। ये Mile stone गिनने वाले स्वर्ग में भी आ पहुंचे हैं।

जब बटोत की चोटी पर अवर्णनीय दृश्य को देख रहा था। जब सूर्योदय के समय रश्मियां ओस के बिन्दुओं पर अपना नाच कर रहीं थीं जब चोटी पर चीड़ के वृक्षों से धीमी २ बयार सांसां कर रही थी, ठंडे झरने स्थान २ पर बह रहे थे उस समय यह मियां पड़ाव की काली कोठरी देखने के लिये सबसे आगे आंखें मूंदे दौड़े जा रहे थे। पास प्रकृति के रम्य फूलों की फुलवारियां खिल रहीं थीं पर इन घुड़सवार को पगडण्डी के सिवाय कुछ नहीं दिखाता था।

जब मानसबल की शान्त, पर्वतमाला से घिरी हुई खूबसूरत झील को देखा था जी में आया था कि इस बहिश्त के नजारे को घड़ी भर देख लूं. मियां साहब ने भर कान पकड़ कर कहा अजी हमने आज ही श्रीनगर की गन्दी गलियों में पहुंचना है, इस पानी, कंकड़ पत्थर को कब तक देखते रहोगे। मैं भला क्या उड़ा हूँ। क्या मेरे नसीब ऐसे फूटे थे कि मैं इन नजारों को घड़ी भर भी न देख सकूंगा। मैं जी मार कर रह गया। दिल की आस दिल में ही रहेगी। बिस्तर बोरी उठा कर चल पड़ा।

और सुनिये। आपकी शेखी सबसे पहिले पड़ाव में पहुंचने में है। आपकी बहादुरी इसी बात में है कि औरों से पन्द्रह या बीस मिनट पहिले पहुंच जाय। जब एक बार पैर का पहिया छिड़का बस फिर क्या कहना। न बांये देखना न दांये। चश्मा आगे, सुन्दर दाढ़ी आगे पर यह अपनी नाक की सीध में quick march करते हुए अपने निश्चित लक्ष्य (पड़ाव) पहुंचते थे। यह हम्मो तथा भक्तों को अपने उद्देश्य सिद्धि में बाधक समझते थे।

इनसा संयमी, तपस्वी, व्रती भी शायद ढूंढे ही मिले। चाहे पेट भी खाली हो, पैर कंकड़ों के मारे छलनी हो गये हों इनकी बहादुरी यह है कि यह सबसे आगे रहते थे। जब साथी लड़कों से मील भर आगे मियां साहब हवा से बात करते हुए तेजी से पग बढ़ाते हुए चले जाते थे तो देखते ही बनता था। जब शेष ब्रह्मचारियों से आगे होकर मौलाना साहब हिरन की चौकड़ी भरते थे तो मारे हंसी के पेट में बल पड़ जाते थे। पर मियां साहब को इससे क्या कोई हंसे चाहे रोये पड़ाव पर यह सबसे पहिले। पिछले ब्रह्मचारी चाहे भाड़ों में जायें या रास्ता भटके मियां बरकत अलि को इससे क्या वे तो घुड़दौड़ में शामिल हुए हैं। यदि पहिले पहुंचने का सौभाग्य न मिला तो बात ही क्या रही

ले० आनन्दस्वरूप

विषय.

कांग्रेस में मैंने क्या देखा?

(ले० — श्रीमान् ०)

दिल्ली की विशेष कांग्रेस इस बार कई दृष्टियों से बहुत महत्व पूर्ण थी। हम लोगों को इस बार इसे पूरी तरह से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम लोगों ने अपने ब्रह्मचारियों का पूरा एक महीना शुद्धि कार्यार्थ श्री पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी की भेंट किया था। दिल्ली कांग्रेस के दिनों में श्री स्वामी जी के पास कोई विशेष कार्य न होने के कारण हम लोग कांग्रेस पण्डाल के अन्दर स्वयं सेवक का कार्य करते रहे थे। कांग्रेस में स्वयं सेवकों के दो विभाग किये गये थे। एक दल तो पण्डाल के अन्दर नियुक्त थे, इन्हें लाल रङ्ग का पट्टा पहिनने को दिया गया था. दूसरे बाह्य कार्यों के लिये नियुक्त थे. इन्हें पीले पट्टे दिये गये थे। दिल्ली में स्थानीय स्वयं-सेवकों की बहुत कमी थी; इस का क्या कारण था इसे मैं आगे बतलाने का यत्न करूंगा. पण्डाल के अन्दर अधिक-तर उपस्थित - प्राप्त स्वयं सेवकों की ही आवश्यकता थी. हमें भी पण्डाल के अन्दर ही जगह दी गयी। हम लोगों को नेताओं की सभा (Leaders' Conference) अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के प्रश्न पर विचार करने वाली उपसमिति एवं इसी प्रकार की अन्य समितियों व उपसमितियों में नियुक्त किया जाता रहा. इस प्रकार की प्रायः सब सभा समितियों का कार्यक्रम देखने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ. इन स्थानों पर हमें नियुक्त करने का एक कारण यह भी था कि इन सब की कार्यवाही गुप्त थी. गुरुकुल के ब्रह्मचारी होने के कारण हम से यह आशा की जा सकती थी कि हम इन कार्यवाहियों को गुप्त ही रखेंगे। कांग्रेस की कार्यवाही के समय हम लोगों को पत्र प्रतिनिधियों के साथ सब से आगे बिठा दिया जाता था. हमें एक प्रकार से सुरक्षित दल (Reserve) में रखा गया था कि किसी भी समय हमें किसी भी काम पर लगाया जा सकता था. पर ऐसा अवसर प्रायः कभी नहीं हो. अन्तरिक्ष समयों में हमें पण्डाल के दरवाज़ों की रक्षा का काम सौंपा जाता रहा. हमें २४ घंटे पण्डाल के घेरे में ही रहना होता था, और हमें किसी भी समय बुलाया जा सकता था. यहां तक कि भोजन भी हमें कांग्रेस की ओर से ही दिया जाता था. इन सब अवस्थाओं में कांग्रेस को बाह्य तथा आन्तरिक दोनों दृष्टि से देखने का हमारे पास बहुत अच्छा अवसर था जिसे हम न तो अपने हाथ से खोना ही चाहते थे और न हमने खोया ही। कांग्रेस के कार्यों में विशेष दिलचस्पी लेने वाले भाइयों के लिये मैं यहां कांग्रेस की मुख्य मुख्य बातों को वर्णन करने का यत्न करूंगा। कांग्रेस के प्रस्ताव तथा अन्य कार्यवाही पाठकों ने समाचार पत्रों में पढ़ ही ली हैं। अतएव उन्हें यहां देने की कुछ आवश्यकता नहीं। मैं केवल उन्हीं बातों का ज़िक्र करूंगा जो समाचार पत्रों में अब तक नहीं आ सकीं।

<u>नेताओं की सभा</u> — कांग्रेस के सामने इस बार दो ही प्रश्न मुख्य उपस्थित थे। पहिला कौंसिलों में प्रवेश का प्रश्न - इस सम्बन्ध में कांग्रेस के भावी कार्यक्रम का भी प्रश्न था। दूसरा प्रश्न हिन्दू मुसलिम ऐक्य का था. नेताओं की सभा वस्तुतः दोनों प्रश्नों को ठीक तौर से हल करने में प्रायः असमर्थ रही। क्यूं कि कौंसिल प्रवेश का प्रश्न तो वहां सर्वथा ही सुलझने से रह गया। इस सम्बन्ध में जो समझौता हुआ है

कांग्रेस में उपस्थित किये जाने वाले प्रस्तावों पर विचार करने समय यही विषय समिति या Subject committee कहलाती है। पहिले विषय समिति की बैठकें अत्यन्त गुप्त हुआ करती थीं, पर अब इसमें दर्शक आ सकते हैं, पर इस के लिये अनुमति देना समिति की इच्छा पर ही होता है। जहां पर कुछ अधिवेशनों में लोगों को नियुक्त किया जाता रहा. तथा शेष अधिवेशनों में हम स्वयं सेवक की हैसियत से आते रहे। पहिले ही दिन विषय समिति के सामने दो प्रश्न थे। पहिला प्रश्न था बंगाल के प्रतिनिधियों का निर्णय करना। बंगाल की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का विवाद पाठक समाचार पत्रों में पढ़ चुके हैं। पाठक जानते ही हैं कि वहां पर परिवर्तन वादियों तथा परिवर्तन विरोधियों की अलग अलग दो कांग्रेस कमेटियां बन चुकी थीं। दोनों ने ही अपने प्रतिनिधि बड़ी भारी संख्या में निर्वाचित कर के भेजे थे। दोनों कांग्रेस कमेटियां अपने को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी होने तथा कानूनी तौर से हकदार होने का दावा करती थीं। स कांग्रेस की स्वागत समिति के सामने प्रश्न था कि वह किस कांग्रेस कमेटी की सूची को स्वीकार करे। प्रतिनिधियों की सूची भेजने के नियम जो होते हैं, उन के अनुसार परिवर्तन वादी दल के प्रतिनिधियों की सूची अधिक नियमानुकूल थी। परन्तु इस तरह किसी एक दल को स्वीकृत कर एक ही दल के प्रतिनिधियों को आगे देना स्वागत समिति के लिये असम्भव था. इसमें बड़े भारी झगड़े की भी आशंका थी अतएव स्वागत समिति ने प्रधान के पास मामला भेज दिया. पहिले इस के लिये श्री मालवीय जी मिडिएटर बनाये गये, परन्तु उन्हों ने स्वराज्य दल के पक्ष में ही फैसला दिया. आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में पहिले इसी विषय पर झगड़ा हुआ. कुछ का कहना था कि श्री मालवीय जी कौंसिलों के पक्ष में और असहयोग के विरुद्ध हैं, अतएव उन का फैसला मान्य नहीं हो सकता वह निष्पक्ष फैसला नहीं दे सकते। कांग्रेस कमेटी को स्वयं इस का निर्णय करना चाहिये। बीच ही में पीछे से एक स्वराज्यदल के महाशय बोल उठे -

"असहयोगी तो तब प्रसन्न होंगे जब गांधी जी स्वयं फैसला कर अतएव मेरा प्रस्ताव है कि यह मामला गांधी जी के पास जेल में भेज दिया जावे।"

इस पर स्वराज्य दल के कुछ लोग हंस पड़े। इस से ही पता चलता है कि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में कुछ ऐसे लोग भी उपस्थित थे जो आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी या विषय समिति की गम्भीरता के महत्व को बहुत कम समझते थे। यह बात महात्मा गांधी जी के नाम पर मजाक ही एक मजाक था। अतएव यह बात महात्मा गांधी के अनन्य भक्त मौलाना मुहम्मद अली को बहुत बुरी लगी। उन्हों ने इस मज़ाक में हिस्सा लेने वालों को बहुत फटकारा। मौलाना मुहम्मद अली की इस फटकार का सभा पर अच्छा असर पड़ा। इस के बाद इस विषय पर कुछ विचार नहीं हुआ। तीन सज्जनों की एक उप-समिति बना कर उसी पर सारा निर्णय छोड़ दिया गया. इस उपसमिति ने भी स्वराज्यदल के पक्ष में ही फैसला दिया। इस के कारण बंगाल के स्वराज्य वादी बड़ी भारी मात्रा में कांग्रेस के अन्दर उपस्थित हुए। इस के कारण स्वराज्य दल को काफी सहारा मिल गया था। वस्तुतः वह निर्णय उपयुक्त निर्णय नहीं कहा जा सकता। बंगाल के असहयोगी दल का एक भी प्रतिनिधि कांग्रेस में उपस्थित न हो सका। यह न तो न्याय ही था और न समझौता ही।

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सामने दूसरा प्रश्न कौंसिल प्रवेश का था। कौंसिलों के सम्बन्ध में समझौता हुआ इस का वृत्तान्त हम कल प्रकाशित करेंगे।

(शेष कल के अङ्क में)

क्रीड़ा क्षेत्र

१६ अक्टूबर प्रथम दिन

आज विजय दशमी का प्रथम दिन था। [?] आज मध्यान्ह दो बजे कार्य वाही प्रारम्भ हुई. दो बजे टन न न न... घण्टी बजी. यह क्रीड़ा क्षेत्र खाली था. बड़ी देर की प्रतीक्षा के बाद फिर दुबारा घण्टी बजी. धीरे धीरे दर्शक जमा होने लगे। सभापति जी की ही प्रतीक्षा थी. थोड़ी देर बाद उन्हों ने कहला भेजा कि मैं न आ सकूंगा कार्यवाही प्रारम्भ कर दी जावे। कुल देवी की वन्दना प्रारम्भ होगई, पर वन्दना के लिये कोई मन्दिर न था. आज कुलदेवी इतनी निर्धन होगई है कि उसके पुजारियों के पास वन्दना के लिये कोई मन्दिर ही नहीं। खुले मैदान में वन्दना प्रारम्भ हुई। मन्दिर के अभाव के कारण पुजारी इतने कम प्रसन्न हुये थे कि जिस मातृवन्दना की आवाज किसी समय 'दिग् दिगन्त में माता की जय जयकार" पुकारती, आसमान को चीरती जाती थी, आज वह बड़ी ही मन्द होगई थी। पुजारियों के चेहरे पर उत्साह न था. 'विजया' के स्वागत के लिये उमङ्ग न थी। कोई उत्सुकता न थी।

जैसे कैसे वन्दना क्रम समाप्त हुई. अब तक भी कुलवासी बहुत कम इकट्ठे हुये थे। प्रारम्भ ही में यह अनुपस्थिति खटकती थी।

सब से प्रथम विद्यालय की कबड्डी हुई, [?] कोई विशेष दर्शनीय बात इस में न थी। छोटे ब्रह्मचारियों की कबड्डी मनोरञ्जक थी। २य और तृतीय श्रेणी का परस्पर सामुख्य था. छोटे ब्रह्मचारियों का कबड्डी-कबड्डी बोलते हुये एक दूसरे के पीछे भागना और बीच बीच में गिर पड़ना दर्शकों को बड़ा आनन्द दायक प्रतीत होता था. वे यह सोचने लगे कि गिरते हुये बालक की क्या दशा हुई होगी। इस सामुख्य में द्वितीय श्रेणी की विजय हुई।

इस के पश्चात् दो सामुख्य और हुये। विद्यालय का [illegible] परस्पर और महा विद्यालय के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों का [illegible] का सामुख्य। इन दोनों ही में दर्शक बहुत कम मात्रा में उपस्थित थे।

रात की लङ्का विजय

रात को छोटे ब्रह्मचारियों का लङ्का विजय था। तीन स्थानों पर झण्डियां लगाई गई थीं। एक के मुखिया थे श्री देव कुमार श्रेणी २य दूसरे के मुखिया [illegible] ५र्थ श्रेणी। खेल मनोरञ्जक हुई। आधा खेल तक दोनों दल बराबर रहे। दोनों दलों के लिये मिठाई भी छिपादी गई थी। दूसरी बार का मिला कर झंडे की दृष्टि से [illegible] का दल विजयी रहा।

१६ अक्टूबर द्वितीय दिन

आज प्रातः काल विद्यालय महाविद्यालय की कबड्डी का सामुख्य हुआ. महा विद्यालय दल दो बिन्दुओं से पराजित रहा. कबड्डी में बहुत उत्साह नहीं दिखलाया गया. आज भी दर्शक बहुत कम उपस्थित थे। इस के बाद विद्यालय दल तथा अध्यापक दल का क्रिकेट का सामुख्य हुआ। सामुख्य आधा ही हुआ परिणाम अभी कुछ नहीं कहा जा सकता. क्रीड़ा क्षेत्र में पहिले का सा उत्साह नहीं दिखाई देता। खेल प्रारम्भ होने में भी बड़ी देर हो जाती है। सारे कुलवासियों का उपस्थित न होना बहुत खटकता है।

निवेदन

'विजय वैजयन्ती' सप्ताहान्त की प्रतिलिपि गीता प्रेस में छपकर तैयार होगी। पाठक इसे गीता प्रेस से अथवा सम्पादक के पास पत्र भेज प्राप्त करें।

निवेदक

सम्पादक

राम पे

ओ३म्

विजय-वैजयन्ती

(अङ्क २)

सम्पादक – अद्भुत (भोपाल)

कृपया शीघ्र भेज से आते हुये सम्पादक को लौटाते जाइये।

इसे फाड़िये नहीं।

सम्पादक

विशालता

पहाड़ी नदी को देखो, चञ्चल तरङ्गें शिलाओं को टकराती हुई किनारों के उन्नत भागों को मानो पददलित करती हुई चली आ रही है। इस का [illegible] निर्मलता मानो फूट फूट कर बाहिर निकल रही है। धीरे धीरे इस का पाट चौड़ा होता जाता है। जल उतना स्वच्छ नहीं रहता, धार मन्द हो जाती है, मानो विशाल अनुभव के कारण उस का हृदय भी हृदय गम्भीर हो गया है। वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ती है, उस का हृदय अधिक विशाल और गम्भीर हो जाता है। विशाल हृदय, जो होते हैं, उन में स्वाभाविक गम्भीरता और विलक्षणता आजाती है। [illegible] साधारण हृदय चञ्चल तरङ्गों के समान चमकते और अधिक हैं, पर उन विशाल पर शान्त गम्भीर नदी के समान स्थिर प्रवाह धारण करते हैं। वे इतने स्वच्छ होते हैं कि उन में आकाश का प्रतिबिम्ब बड़ी जल्दी दिखाई देता है। विशाल अनुभव हृदय को भी विशाल बना देता है।

चन्द्रमा की सर्वप्रियता

बालकों को चन्द्रमा अच्छा लगता है, क्योंकि वह बहुत छोटा होता है, उस का छोटा सा प्रतिबिम्ब देख कर बच्चे खिलौना समझ कर उस पर हाथ बढ़ा देते हैं। युवकों को चन्द्रमा अच्छा लगता है क्योंकि उस का भी यौवन बड़ी शीघ्रता से बढ़ता है। पूर्णिमा के पूर्णवयस्क चन्द्रमा को देख कर युवक अपनी बढ़ती की याद करने लगते हैं। खटिया पर पड़े हुवे बूढ़े अमावस्या के घटते हुवे चांद को देख अपनी नींद रहित रातें काटा करते हैं, अतएव उन को भी यह बुढ़ापे का साथी [illegible]। तभी तो लोग कहा करते हैं कि चन्द्रमा किसे अच्छा नहीं लगता? उस की सर्वप्रियता का यही कारण है। सर्वप्रिय लोग जैसे आदमी को वैसे ही जान पड़ते हैं। इसी लिये तो गोस्वामी जी ने रामचन्द्र जी की सर्वप्रियता का वर्णन करते हुवे कहा है—

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरति देखी तिन तैसी.

[illegible]

काश्मीर के पुष्पों का गुच्छा

(प्रथम पुष्प)

काश्मीर के दर्शनीय दृश्यों में सबसे विचित्र क्षीरभवानी का नज़ारा है। मैं इसे हिन्दुसमाज का प्रतिबिम्ब समझता हूं। क्षीरभवानी एक तालाब का नाम है। चारों तरफ सुन्दर हरी भरी वनस्पति लहरा रही है। लतायें वृक्षों पर लिपटी हुई आलिंगन करती हैं। चारों तरफ छोटी २ जलप्रणालियां ~~नालियां~~ अपनी अपूर्व शोभा से बह रही हैं। मार्ग के चारों तरफ चिनार के पेड़ों की पंक्तियां खड़ी हैं। इस सुन्दर सुहावने नज़ारों के बीच क्षीरभवानी का गन्दा तालाब अपनी दुर्गन्ध से सारे नज़ारे को खराब बना रहा है। इस तालाब की विशेषता यह है कि इसमें भगवती ... देवी के प्रताप से कई बार पानी का रंग गिरगट की तरह बदलता है। मुझे बहुत ~~सोचने पर~~ ध्यान से देखने पर भी पानी का रंग बदलता हुआ नहीं दिखाई दिया। हां सिन्दूर के डालने से लाल, नीले रंग के डालने से नीला ज़रूर होजाता है। सालों से गन्दा पानी न निकलने के कारण तथा दूध, खीर, फूल वगैरः चढ़ने से ~~स्थान~~ इतना बदबूदार होगया है कि नाक पर कपड़ा रखे बिना खड़ा होना मुश्किल है। हरसाल महाराजा साहब पूजा पाठ के लिये आते हैं। ब्राह्मण देवता घण्टा घड़ियालों से भक्तों को मूंडा करते हैं। पोथी पत्रा देखने का state की पागलपन की [illegible] ढकोसला होता है।

हमारा हिन्दू समाज भी इसी गन्दे तालाब के समान है। एक तरफ हिमालय की उत्तुङ्ग शिखरायें, दूसरी तरफ हिन्दमहासागर, बीच में हम हिन्दू जाति का निवास है। पर हमने अपनी दुर्गन्ध से सारे नज़ारे को खराब बना दिया है। भगवान ने हमें सब कुछ दिया है। खानें हैं, अच्छी उपजाऊ भूमि है। पर हमारी जाति सालों से एक बन्द घेरे में जकड़ी हुई है। उसमें से नवीन पानी का संचार नहीं होता और न पुराना पानी निकलता है। समुद्रपार जाना हमारे लिये मना है। इससे धर्मभ्रष्ट होजाता है। बाहर की हवा लगजाने से हमारी बाबा आदम के वक्त की पवित्रता छुईमुई के समान

मुरझा जाती है। कहावत मशहूर है 'अटक के पार जाय सो गया'। आज से १० करोड़ वर्ष पूर्व श्रीकाक भुशुण्ड जी ने जो अपनी चोंच से लिख डाला उसमें अब अकल का दखल नहीं होसकता। वह निरुक्ति है पत्थर की लकीर है। यदि भुशुण्ड जी की भुजा लेखनी ने लिपिबद्ध को चोटी क पहुंचाने कोशिश बेकार की तारतम्य का उल्लंघन कर दिया तो उसमें ननु नच कैसी। महाशय रामनाथ जी चौबे बिल्कुल निरक्षर भट्टाचार्य हैं आपने जन्म भर रोटी सेंकने के अलावा कोई काम नहीं किया। आपकी दृढ़ धारणा यह है कि अकल और भैंस में भैंस ही श्रेष्ठ है। पर आप ब्राह्मण हैं, हिन्दुजाति के सिरमौर हैं। आपके ऊपर हिन्दुजाति अभिमान करती है। आपकी पूजा होती है। हम लोग हाथ उठा २ कर कहते हैं कि धर्म में बुद्धि का प्रवेश नहीं है आप न्याय के अन्दर अनन्त द्रुति तक तर्क करते चले जांय पर इससे किसी बात का फैसला नहीं होसकता। जो आज से अरब वर्ष पूर्व परमात्मा ने सांस के द्वारा चार वेद उगल दिये थे वे सत्य हैं, नहीं अन्तिम प्रमाण हैं। उनमें तर्क नहीं होसकता। मतलब यह है कि हम हिन्दू जाति अपने खीर भवानी के गन्दे तालाब से बाहर नहीं निकलना चाहते। करोड़ों अन्धे भक्तों से उसी में पड़े हुए सारे विश्व को दुर्गन्धित कर रहे हैं।

खीर भवानी की विशेषता यह है कि इसमें भिन्न रंगों का पानी है कहीं से लाल है तो कहीं इसी जगह नीला, नीला जगह पीला। हमारी जाति की भी यही विशेषता है। इसमें कबीर साहब ने रंग फेंका तो कुछ हिस्सा कबीर पन्थी होगया है, दूसरी जगह दादू जी ने रंग डाला तो दादू पन्थी होगया है। मतलब यह है कि शैव, वैष्णव, शाक्त, आदि रंगों से हमारी जाति रंगीली होगई है। कोई रुद्राक्ष की माला पहनता है, तो दूसरा माथे पर बिन्दी लगाता है तीसरा नया ही प्रकार का तिलक लगाता है। हम इसे देवी का प्रताप समझते हैं। अपने इस बहुरूपिया पन पर मारे खुशी के फूले नहीं समाते। यदि हम कभी इस मोहीनन्द तालाब से बाहर की स्वच्छ हवा ले सकें तो हमें मालूम पड़ेगा कि इन रंगों ने हमारी जाति रूपी तालाब को कितना दुर्गन्धित बना डाला है। इन मतभेदों और साम्प्रदायिक झगड़ों ने हमारी जाति को जर्जरित कर दिया है।

ले· आनन्दस्वरूप

'हिन्दू संगठन' इस युग का सीधा और उचित मार्ग है, इसे कोई इन्कार नहीं कर सकता। परन्तु फिर भी इसके सम्बन्ध में हमारा थोड़ासा वक्तव्य है। हमारी सम्मति में हिन्दू संगठन के नेताओं व जातीय महासभा के उद्देश्यों में कोई अन्तर नहीं है। दोनों का ही उद्देश्य जाति को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाना है। क्योंकि इसके बिना जाति का कल्याण नहीं है, मतभेद सिर्फ कार्य करने की रीति में है। हिन्दू नेता मुसलमान जाति का विचार छोड़कर हिन्दुओं को ही प्रबल बनाना चाहते हैं, वे जानते हैं कि मुसलमान जाति देर से संगठित है और वह मुकाबला करने के लिए तय्यार है, हमारी सम्मति यदि केवल इतने ही भाव होते तो भारत की दो बड़ी जातियों में जो वैमनस्य पैदा होगया है वह पैदा न होता। फिर हम सभी जानते हैं कि बात कुछ और थी। भारत में आज अनेक 'जय चन्द' हैं, यह सारा काम उन्हीं का है। विदेशी सरकार से कुछ वैयक्तिक लाभ की सम्भावना से उन लोगों ने यह वैमनस्य पैदा कराने का प्रयत्न उठाया है। एक व्यक्ति भी यदि अपने दिल में कुभाव रखता है तो सारी जाति को उस का फल भोगना पड़ता है विशेषतः तब, जब कि वह उसके प्रकट करने में कहीं सफल हो जाय। इसी दुर्भाव से प्रेरित मनुष्य जब हिन्दू संगठन का पक्ष करते हैं तो शिक्षित मुसलमान भी इस संगठन के विरोध में आवाज उठाते हैं। अतः केवल इस एक बात को ध्यान में रख कर हमारा केवल यही वक्तव्य है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर ऐसा यत्न करें जिससे यह भाव समूल नष्ट हो जावे और भारतीय प्रसिद्ध जयचन्दों को अपने काम का अवसर न मिले।

हिन्दू नेताओं से हम यह प्रार्थना केवल इस लिए करते हैं कि हिन्दुओं की वीर वृद्धि में सहारनपुर इत्यादि की घटनायें साधक नहीं हैं। यह ठीक है कि इन घटनाओं को देखकर हिन्दुओं को भी अपनी असामर्थ्य का पता लग गया है- पर हमारी सम्मति में इतना ही पर्याप्त है। हिन्दुओं का एक मात्र साधन यह भी यदि नष्ट होगया तो डर है, कि निर्बल, निर्धन तथा निस्साधन हिन्दू जाति विदेशी सरकार के शरण में पड़ी रहने को बाधित हो जाय। हम जो कह रहे हैं, वह अशुद्ध और असम्भव नहीं है। जिन स्थानों पर हिन्दू अधिकार थे वहां पर झगड़े नहीं हुए, इसका एक मात्र कारण यही था कि वहां की हिन्दू जनता अपनी "सिंधिया" सरकार की शरण में गई और वहां उसे प्रश्रय मिली। डर है कि कहीं इसी विश्वास से हिन्दू पुनः उस शरण को ही अच्छा न समझने लगें, जयचन्द सफल न हो जावें और 'विजय-दशमी' मनाने का असली दिन हमसे और दूर न हो जावे।

अच्छा तो फिर इस का क्या उपाय है? हमारी सम्मति में देहली की जातीय महासभा के अधिवेशन का निश्चय इस प्रश्न का समुचित हल है। जातीय महासभा ने हिन्दू संगठन और शुद्धि का विरोध नहीं किया, हां उसके भीतर संभवनीय अशुद्ध और हानिकर भावों को तिरोभाव और नाश करने का यत्न किया है। 'संगठन करो' किन्तु केवल हिन्दुओं का नहीं, पर भारतीयों का। राजा रामचन्द्र की विकृत सन्तान को इस ही मार्ग से पुनः 'विजयोत्सव' के द्वारा अपने वक्षःस्थल सुशोभित करने का अवसर मिलेगा।

"राष्ट्र-भक्त"

कांग्रेस में मैंने क्या देखा

(गतांक से आगे)

कौंसिल प्रवेश का समझौता

कैसे हो सका?

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का महत्वपूर्ण वर्णन.

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में इस दिन दूसरा प्रश्न कौंसिल प्रवेश का था। नेताओं की सभा इस विषय में असफल हो चुकी थी, अतएव कांग्रेस कमेटी की इस कार्यवाही में बहुत दिलचस्पी ली जानी स्वाभाविक थी। सारा निर्णय यहीं पर था. कुछ देर बाद दर्शकों को वहां से भेज दिया गया. बड़ी देर तक कौंसिलों के प्रश्न पर विचार होता रहा. दोनों ओर के नेताओं तथा प्रतिनिधियों में काफी देर तक खैंच रही। इस खैंचा खैंची के समय महात्मा गांधी तथा कांग्रेस का एक अनन्य भक्त एक जगह पर न आने क्या लिख कर एक एक नेता के पास जाता, उस से न जाने क्या बातचीत करता, अन्त में अक्सर नेता स्वीकृति सूचक सिर हिला देता तब वह फिर दूसरे के पास जाता। इस प्रकार दोनों दलों के सब मिलाकर ८-१० नेताओं से बातचीत करने के बाद मौलाना मुहम्मद अली खड़े हुए और अपने कागज़ से समझौते का प्रस्ताव उर्दू तथा अंग्रेज़ी दोनों में पढ़ कर सुना दिया। मौलाना मुहम्मद अली के मुंह से इस प्रस्ताव को सुन कर जो उन्हें न जानते थे उन्हें आश्चर्य हुआ, पर जो उन के स्वभाव से भली भांति परिचित थे उन्हें और भी अधिक आश्चर्य हुआ। महात्मा गांधी के अनन्य भक्त से कौंसिलों के सम्बन्ध में समझौते की बात सुन ने की किसी ने कल्पना भी न की थी। आप ने अपने प्रस्ताव के समर्थन में बड़ा ही प्रभावशाली भाषण दिया। जिस में आप ने एकता के नाम पर लोगों को समझौता करने को कहा। इस भाषण का प्रायः सम्पूर्ण अंश पत्रों में प्रकाशित हो चुका है अतएव भाषण के सम्बन्ध में हम विशेष कुछ न लिखेंगे। इस प्रस्ताव का समर्थन कई एक नेताओं ने किया.

इसी समय असहयोगी दल के एक सज्जन एक दम उठ कर बाहिर गये। कोई एक घंटे के बाद वह एक तार लेकर वापिस आये। उस तार को कई असहयोगी नेताओं ने देखा। जिस के देखने बाद मौलाना मुहम्मद अली के प्रस्ताव पर सहमत होगये। असहयोगी नेता इस समय विशेष सन्तोष अनुभव कर रहे थे। यह तार श्रीयुत राजगोपालाचारी जी का था. जिस में आपने समझौते से अपनी सहमति प्रकाशित की थी। श्री राजगोपालाचारी अपने त्याग और तपस्या के कारण तथा महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी होने से असहयोगियों के दिलों में विशेष स्थान रखते हैं। इसी लिये उन से सलाह ले लेना आवश्यक समझा गया। समझौते का प्रस्ताव सम्मति लेने पर स्वीकृत होगया। मौलाना मुहम्मद अली ने कांग्रेस को विभक्त होने से बचा लिया जो काम नेताओं की सभा न कर सकी आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी ने उसे पूरा कर लिया. आज की कार्यवाही यहीं समाप्त हुई।

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की और भी बैठकें हुईं। और भी कई प्रस्तावों पर खूब गर्मा गर्म बहस हुई। डा० किचलू के सत्याग्रह सम्बन्धी प्रस्ताव पर दूसरे दिन बहुत अधिक विवाद हुआ। पञ्जाब के प्रतिनिधि विशेष रूप से इस का विरोध कर रहे थे। ब्रिटिश माल के बहिष्कार तथा डेलिगेटों के निर्वाचन सम्बन्धी प्रस्तावों पर तथा इन के संशोधनों पर बड़ा विवाद हुआ। डेलिगेट सम्बन्धी प्रस्ताव पर तो धड़ाधड़ संशोधन पेश होगये

संशोधन के गिर जाने पर भी सभी संशोधक पुनः कांग्रेस में सम्मत होजाते थे। अन्त में प्रधान को कई संशोधनों को प्रस्ताव से असम्बद्ध करार देकर रोक देना पड़ा। और सब बातें समाचार पत्रों में पाठक पढ़ चुके हैं इस लिये हम उस का वर्णन नहीं करना चाहते।

हिन्दू मुस्लिम ऐक्य - उपसमिति -

यह Hindu Muslim Unity sub Committee में सात हिन्दू तथा सात मुसलमान सदस्य थे। पहिले पहिल इस उपसमिति में हिन्दू और मुसलमान दोनों के भाव बहुत उत्तेजित थे। नेताओं की सभा में तो अवश्य उत्कल के मन्त्री मौ. अहमद सईद साहिब के भाव कितने उत्तेजित थे और किस प्रकार उन्होंने सब के सामने भी पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी पर सरकार से पक्ष लेने के अभियोग लगाये थे, और किस प्रकार मालवीय जी को देश शत्रु कहा गया था इस का वृत्तान्त पाठक अर्जुन में पढ़ ही चुके होंगे। वैसे भी वे बातें इतनी अप्रिय और गन्दी थीं कि उन्हें यहां लिखना मैं उचित भी नहीं समझता. इतना यहां कहना आवश्यक मालूम होता है कि पीछे से यह भाव बहुत बदल गया था। मौलाना अहमद सईद साहिब भी पीछे से नर्म हो गये थे, उन्हों ने अपने झूठे अभियोगों के लिये श्री स्वामी जी से माफ़ी भी मांग ली थी। इस उपसमिति में शुद्धि और संगठन विशेष विचार के विषय थे। कांग्रेस के नेता बीच बीच में इस उपसमिति की बैठकों में आ बैठते और उत्तेजितों को किसी निर्णय पर पहुंचने के लिये भी सहायता देते थे। आखिर पीछे से इस उपसमिति के सदस्यों का भी यही भाव होगया था कि किसी प्रकार एक ऐसा निर्णय करके ही उठना चाहिये, जिस से हम लोगों के सामने अपनी असफलता की घोषणा करने से बच जावें और समझा सकें कि हम सफल हुवे हैं; जिस से जनता में हिन्दू मुसलमानों के सम्बन्ध में अच्छे भाव फैला सकें।

इस का श्रेय मौ. मुहम्मद अली श्री मौ. अबुलकलाम आज़ाद तथा श्री मालवीय जी को है। शुद्धि के झगड़े पर जब कोई निर्णय होता हुवा न देखा गया तो अन्त में असफल कहने के बदले एक कमेटी बना कर यह दिया गया कि निर्णय होगा. यह कमेटी यह निरीक्षण करेगी कि कहीं शुद्धि वा तबलीग़ के मामले में ज्यादतियां तो नहीं की जातीं, संगठन के विषय पर भी मौ. मुहम्मद अली ने जो प्रस्ताव रखा वह अवश्य ही स्वीकार योग्य है। वह आप की राष्ट्र-भक्ति का अच्छा परिचायक है। आप ने कह भी दिया था - कि "मैं तो न खिलाफ़त के वालण्टियरों को पसन्द करता हूं न हिन्दू सभा के वालण्टियरों को, न खिलाफ़त सभाएं चाहता हूं, न हिन्दू सभाओं को पसन्द करता हूं। मैं तो एक बात मानता हूं, और वह कांग्रेस। यह सारा संगठन कांग्रेस की ओर से फ़िर्कों के हित के लिहाज़ से नहीं पर राष्ट्र हित की दृष्टि से होना चाहिये।" आप का यह प्रस्ताव स्वीकृत हुवा.

प्रेस की ओर से जो समाचार पत्रों व अन्य विज्ञापनों द्वारा विष फैलाया जाता है, उस के लिये पत्रों के अधिकार के सम्बन्ध में भी प्रस्ताव पास किया गया जो प्रकाशित हो चुका है। किसी भी सम्प्रदाय की जनता के अन्दर असन्तोष और अशान्ति फैलाने वाले साहित्य को रोकने का अधिकार है - इसी सिद्धान्त के ऊपर इस प्रस्ताव की रचना की गई थी। इसी प्रकार जो घोषणा एक सौ नेताओं के हस्ताक्षरों सहित मन्दिरों और धार्मिक स्थानों की सुरक्षा के सम्बन्ध में की गई है, वह भी इसी उपसमिति का परिणाम था. प्रस्ताव का अन्तिम भाग कि "ज़ुल्म करने वाले के विरुद्ध सहायता, ज़ुल्म करने वाले के सम धर्मी (हम मज़हब) को भी करनी चाहिये" मौलाना मुहम्मद अली की ओर से जोड़ा गया था.

इस उपसमिति में सब से बुरा भाव नादिरशाही और अहमदिये लोगों का था. अहमदिये तो अन्त भी नाचे थे पर कादियानी अन्त तक डटे। यदि वह न होता तो शुद्धि पर कमेटी बिठा देने की भी आवश्यकता न रहती।

और भी कई कमेटियां और सभायें हुईं। जिन का वर्णन न कर हम केवल मुख्य कांग्रेस का परिचय तथा नेताओं का साधारण परिचय देने का यत्न करेंगे।

कांग्रेस में मैंने क्या देखा

(लगातार लेख)

नेताओं का संक्षिप्त परिचय

[illegible]

गया कांग्रेस की बैठक बड़े पण्डाल में होती थी। पण्डाल खूब सजा हुआ था उसका ढांचा हमारे उत्सव के पण्डाल से मिलता जुलता था. पर वह अधिक शानदार मालूम होता था शायद इस लिये कि वह हमारे लिये नया था। पण्डाल के चारों ओर एक और बड़ा घेरा था. इस घेरे के अन्दर दो बड़े दरवाजे थे। दरवाजों पर बढ़िया चित्रकारी हुई थी। एक दरवाजे पर महात्मा गांधी का चित्र था. यह दुःख की बात है कि इन दरवाजों पर भारतीय चित्रकला को स्थान न देकर रोमन चित्रकला को स्थान दिया गया था। यही एक मुख्य भारी थी. परन्तु एक दरवाजा केवल नेताओं के और आने के लिये ही रखा गया था। दूसरे दरवाजे से अन्य व्यक्ति आते जाते थे। स्थान स्थान पर स्वयं सेवक खड़े किये गये थे। इस प्रकार स्वयं सेवकों के [illegible] पर इस काम पर अनभ्यस्त थे। वे कांग्रेस देखने के जितने उत्सुक थे उतने कार्य पूरी तरह निभाने को वैसे उत्सुक न थे। उन की बोली और व्यवहार में शिष्टता न थी, इसी लिये कई कांग्रेस के प्रतिनिधियों व अन्य दर्शकों को उनके व्यवहार से बहुत शिकायत थी। खद्दर की पोशाक के लिये भी उन्हें बहुत बाधित नहीं किया गया. जीन की भरी सिपाहियों जैसी पोशाक कांग्रेस के पण्डाल में अजीब सी मालूम होती थी। मैंने अनुभव किया कि अभी हमारे देश में राष्ट्रीय सिपाहियों की बड़ी जरूरत है। इस ओर हमारे देश के नेताओं का अभी तक ध्यान नहीं गया। कर्तव्य परायणता और नियन्त्रण जब तक हमारे जातीय गुण नहीं बन जाते तब तक हम स्वराज्य की लड़ाई लड़ने में असफल होते रहेंगे। पण्डाल का स्थान लाल किले के पास ही था। जिस समय सामने लाल किले के दरवाजे पर पहरे पर खड़े हुये अंग्रेज सैनिकों और फिर पास ही खड़े हुये अपने स्वयं सेवकों की तुलना करता तब उन में बड़ा भारी अन्तर प्रतीत होता था। इस समय हमें राष्ट्रीय सैनिकों की सब से बड़ी आवश्यकता है। इसी लिये महात्मा गांधी ने भी स्वयंसेवकों की शिक्षा पर जोर दिया था। गुरुकुल में रहते हुये हमें भी अपने जीवन को सैनिक जीवन बनाने तथा नियन्त्रण का अभ्यास कर गुण बना लेने का प्रयत्न करना चाहिये; तभी हम देश की सच्ची सेवा कर सकेंगे।

पण्डाल के अन्दर भी खद्दर का अभाव था। स्वागत समिति के मन्त्री श्री युत आसफ अली ने अन्त में इसका जवाब देते हुये कहा कि "बहुत यत्न करने पर भी हम इतनी शीघ्र खद्दर प्राप्त न कर सके" यह कारण ठीक हो सकता है, पर क्या यह देश का दुर्भाग्य नहीं? जब कांग्रेस के लिये ही खद्दर नहीं मिल सकता तो देश की सर्वसाधारण जनता को हम किस मुंह से खद्दर पहनने को कहें? कांग्रेस के प्रतिनिधियों में भी खद्दर धारियों की संख्या सन्तोषजनक न थी। विदेशी वस्त्र धारी प्रतिनिधि स्थान स्थान पर [illegible] दिखते थे।

मौलाना स्वयं वादी हैं। समझौता करने के विषय में [illegible] थे कि महात्मा गांधी जो किसी के चित्त के बरतर हैं उनके सामने भी साफ़ बात करने में मैं नहीं हिचकिचाता। साफ़ बात कर देना ही दिल्ली कल्चर का उसूल है। पर साथ ही आप अपनी भूल मानने को भी तैयार रहते हैं। इसी लिये भरी सभा में आप ने एक बार श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी से [illegible] पर माफ़ी मांगी थी। उस का ज़िक्र आगे करेंगा.

कुरान के आप अच्छे पण्डित हैं। अन्य धर्मों का भी आपने अध्ययन किया हुआ है। आप कहते थे कि मैंने महात्मा जी के कहने से ही बाइबल पढ़ी थी; गीता और उपनिषदों पर भी आप की श्रद्धा है।

आप में एक बड़ी कमी भी है, जो राजनैतिक जीवन में आप के लिये हानिकर हुई है, जिस के कारण आप लोगों को स्थिर रूप से अपने पीछे नहीं चला सकते। आप के विचार अभी पूरी तरह से परिपक्व नहीं। समय की धारा में आप भी बह जाते हैं, आप लोगों को उभार सकते हैं, उन में नवीन जोश भर सकते, पर उन का संचालन नहीं कर सकते. देश की वास्तविक परिस्थितियों और अवस्थाओं के सम्बन्ध में आप के विचार अभी कच्चे हैं, सच्ची घटनाओं और उन का यथार्थ ज्ञान आप को कम रहता है, इसलिये कई बार आप गलती कर जाते हैं, आप को अपने विचार कई बार बदलने पड़ते हैं। परन्तु भूल पता लगने पर आप मान भी लेते हैं। दिल साफ़ है, उस पर जैसा प्रतिबिम्ब पड़ जाये पड़ सकता है। हिन्दू मुस्लिम कमेटी में आप [illegible] के विचार में कभी हिन्दू अधिक दोषी जचते कभी मुसलमान. अन्त में जब कुछ निर्णय न कर सके, तो आप ने कहा - "जाने दो अभी आन्दोलन [illegible] कर लो, पुराने को पछताओ।" अत: इसी लिये उन्हें कई बार चुप भी हो जाना पड़ता था.

<u>श्री युत दास</u> —: श्री युत दास अच्छे वक्ता हैं। हिन्दी समझ सकते हैं, पर बोल नहीं सकते। आप अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं, पर देखने में बहुत सादे प्रतीत होते हैं। आप को देख कर किसी ने कहा था कि यदि भारत स्वतन्त्र होता तो यह उस के प्रधान होने योग्य थे। असहयोग की लहर चालू न होने तक वकालत कर देने में आप की वार्षिक आमदनी लाखों की थी। पुराने नेता होने के कारण आप के स्वभाव में आमूल परिवर्तन के स्थान पर अपनी बात मनवाने का [illegible] है। युक्ति तर्क और प्रमाणों से अपने पक्ष की वकालत करने में आप सिद्ध हस्त हैं। यदि कांग्रेस में समझौता न होता तो आप कांग्रेस से अलग हो जाते। [illegible] शुरू से ही ऐसी सम्भावना न थी, कि आप का दल निर्बल होगा। असहयोग की नीति छोड़ चुके थे। आप राजनीति में सब कुछ किया जा सकता है इस सिद्धान्त को क्रियात्मक रूप से मानने वाले थे। कानून और अदालत के पण्डित होने के कारण कानूनी झगड़ों और पेचीदगियों को आप बड़ी सफलता से हल करते हैं, और प्रधान के आसन पर बैठे हुये ऐसे झगड़ों के उठने पर कुछ आनन्द अनुभव करते हैं।

<u>श्री मालवीय जी</u> —: आप के भाषण में जादू का असर होता है; पर जब आप दलील नहीं कर रहे होते पर दिल के अन्दर से ही बोलते हैं तब तो आप की बात लोगों के दिलों में असर किये बिना नहीं रह सकती। बड़ी ओजस्वी भाषा का प्रयोग करते हुये, बड़े ही प्रभाव शाली शब्दों को चुन चुन कर रखते हुये भी आप एक एक शब्द सोच समझ कर रखते हैं। अपने आप को काबू में रखते हैं; यह आप के भाषण की विशेषता है जो और किसी में नहीं, विरोधी की [illegible] कि [illegible] पर एक भी [illegible] शब्द न कहेंगे जिस पर [illegible] सके।

आप में एक कमज़ोरी भी है। आप का स्वभाव इतना नर्म है, कि आप सदा समझौते के लिये तैयार रहते हैं; और इस समझौते में अपने विरोधी की ऐसी बातें भी मान लेते हैं, जिन से [illegible] अनुचित [illegible] है। परन्तु आप के अन्दर वास्तव में यह कमज़ोरी है या नहीं इसमें सन्देह है। विशेष कांग्रेस पर हिन्दू मुस्लिम नेताओं [illegible] शुद्धि आन्दोलन पर आप समझौते के प्रस्ताव मानने को [illegible] पर ज्यों ही आप के संगठन के विषय पर विवाद हुआ

कर्तव्य की परिपाटी :-

आज से दीपावलि का पवित्र त्यौहार प्रारम्भ होता है। स्मरण रहे इस त्यौहार के साथ महाराज रामचन्द्र, स्वामी दयानन्द और स्वामी रामतीर्थ आदि महापुरुषों की स्मृति चिर काल से जुड़ी हुई है। सब से बढ़ कर प्राचीन भारतीय गौरव - जिसका कि यह त्यौहार चिह्न मात्र है - इस समारोह से कभी किसी के लिए पृथक् नहीं हो सकता। इस के महत्व को समझते हुए 'विजय-वैजयन्ती' के पाठक इस त्यौहार के अवसर पर अधिक से अधिक अपना कर्तव्य निभाएंगे; परिपाटी भी यही है।

बलि-वेदी.

ये प्रचण्ड रिपु गर्जन करते आगे बढ़ते आते हैं,
लिये हाथ में बर्छी भाला चमचम करते आते हैं।
देख इन्हें मत घबरा बेटा! उठ हो सज्जित शस्त्रों से,
रण में जाकर धूम मचा दे अपने पैने अस्त्रों से॥

(2)

दूध पिया क्षत्राणी का अब सफल बनाकर दिखलाना,
बिना किये संहार शत्रु का रण में पीठ न दिखलाना।
एक एक की बलिवेदी पर भेंट चढ़ाकर घर आना,
नहीं तो अपना शीश भेंट कर इसे तृप्त करते जाना॥

(3)

जा उठ बेटा! समराङ्गण में रणचण्डी तुझे बुलाती है,
बादल, बिजली तीर उज्ज्वल यशोगान को गाती है।
शस्त्रों की झंकार मधुर, रिपु दल को धड़काती है,
सब विस्मित हो देखें तुझको आशायें मन भाती हैं॥

(4)

केसरिया बाना धारण कर केसरि बन दिखला देना,
अरि-मुण्डों की माल पिन्हाकर कालिके दी सजा देना।
खेल नहीं लड़ना प्रिय! तुमसे प्रकट आज दिखला देना,
निज जननी को बंधमुक्त कर काला मुख उज्ज्वल करना॥

'स'

कायर

कायर पहिले मौत से मरे अनेकों बार,
चखें वीरवर मौत का स्वाद एक ही बार॥

हैरानी इससे बड़ी मुझे न होय प्रतीत,
मौत सामने देखकर नर होवे भयभीत॥

क्या डरना तब मौत से जब है निश्चित अन्त।
आनी है आ जायगी कर जायेगी अन्त॥

(Shakespeare की ~~एक~~ कविता का अनुवाद)

'ह्र'

जागो!!!

सब जागो भारतवासी थारी भारत खूब लूटे हैं

यूरोप में छिड़ि लड़ाई, तब बन रंगरूट सिपाही।
तब उनकी करी सहाई, थारी ग्यारह में भड़ खड़े हैं॥

सो में इनाम ऐसी दीन्ही, थारी वर्दी तक भी छीनी।
थारी सेती ऐसी कीन्ही सुन सुन हिया फटे हैं॥

जलियाँ वाले बाग में आई, डायर ने गोली चलाई,
खूनों की नदी बहाई, तोपों पर तोप छूटे हैं॥

तुम अरे गुज जाओ, स्वदेशी माल धारो।
विदेशी आगि में डारो जो भी अपने धर्म पै डटे हैं॥

(संकलित)

विजय वैजयन्ती

६ नवम्बर १९२८.

घटना चक्र में

आज पुरानी परिपाटी के अनुसार, दीपावली के अवसर पर हमारे पाठक नवीन उत्साह एवं जोश के साथ इस जातीय उत्सव को मनाने के लिए उपस्थित हैं। वे नवयुवक हैं। उनमें नई उमंगें हैं, नया जोश है एवं नई अभिलाषाएं हैं। नवयुवकों का हृदय अपने जातीय उत्सवों को देखकर नई भावना से उल्लासित हो उठता है। आज हम एक वर्ष के बाद उसी उत्साह से, उसी उल्लास से और उसी उमंग से उनका स्वागत करते हैं।

× × × × × ×

नए खिलाड़ी इस रंगमंच पर अपना पार्ट खेलने के लिए उतरे हैं। इस समय भारतवर्ष का सिंहावलोकन करना अनुचित न होगा। इससे लाभ की ही आशा करनी चाहिए।

× × × × ×

जिस समय 'विजयवैजयन्ती' युगयुगीन रंगमंच पर अपनी छवि दिखाकर अवतरित हुई थी, उसी समय से एक नई वस्तु की आशंका हो रही थी। भारत परतन्त्र है। इसमें विश्वासघातकता नहीं होती। हां विदेशियों की चरणधूलि से इसको मातृभूमि अवश्य ही किया जाता है। इसे स्वराज्य के लिए योग्य बनाने का ठेका ईश्वर की ओर से ब्रिटेन को मिला है। भारत ब्रिटेन की थाती है, वह इसे धीरे धीरे स्वराज्य के योग्य बना रहा है। हमारी परीक्षा ली जाती है। हम पास हों या फेल – उन्नति या अवनति का अधिकार ब्रिटिश सरकार पर ही। १९१९ में हमें सुधार मिले थे। १९३० में कमीशन के आने का शोर मचा हुआ था। जिन लोगों ने सरकार की खिदमत की थी, उसके आगे सिर झुकाया था, प्रजा को कष्ट पहुंचाने वाले कानून बनाकर सरकारपरस्ती का परिचय दिया था, आत्मसम्मान खो बैठे थे वे आशा लगाए बैठे थे कि शायद गौवरनमेंट भक्तवत्सल होगी, वह अपनी खिदमत का बदला देगी, उन्हें कमीशन का सदस्य बनने की आशा थी। पर सब बेकार। ब्रिटिश सरकार ने सात गोरों का कमीशन नियुक्त कर दिया। लिबरलों में निराशा छा गई।

अपनी सेवा का पुरस्कार न पाकर वे लोग बेतरह बिगड़ उठे। बहुत कोशिश की गई, पर कुछ बन न पड़ा। उन्हें समझाया गया, पुचकारा गया। वे तो रूठे थे - बुरी तरह रूठे थे। किसी तरह मनाई न मानते थे। कांग्रेसवाले तो आत्मनिर्णय के सिद्धान्त पर अड़े थे। वे किसी भी कमीशन को - जो इंग्लैण्ड द्वारा नियुक्त किया गया हो, चाहे उसमें सारे ही भारतीय क्यों न हों - मानने के लिए तय्यार न थे। वायसराय ने नेताओं को बुलाया - कोई हल ढूंढने का प्रयत्न होने लगा। मामला बहुत टेढ़ा था। कुछ बन न सका। सरकार ने सोचा था कि भारतवासी आपस में लड़े हैं। इनकी फूट से अपना काम बना या जा सकेगा। पर लेने के देने पड़ गए। हिन्दू और मुस्लिम झगड़े बन्द होगए। सर्वत्र एकता का नारा दीखने लगा। नागरिकता का श्रृंगार मच गया। सब सम्प्रदायवादी और राष्ट्रवादी सभी भारतमाता के कलंक को दूर करने के लिए एक झंडे के नीचे आगए।

× × × ×

इस समय राष्ट्रिय महासभा (कांग्रेस) के सभापति श्री श्रीनिवास आयंगर थे। वे अपने कार्यकाल में कुछ कार नहीं लाना चाहते थे। उन्होंने एकता के लिए शाश्वत प्रयत्न किए। एक एकता-परिषद के बाद दूसरी एकता परिषद होती रही थी। तांता बंधा हुआ था। हिन्दु मुसलमानों के झगड़ों से दूषित हुए हुए वायुमण्डल में भी एकता का प्रदीप जल रहा था। वह किसी की परवाह न करता हुआ आगे बढ़ा जा रहा था। श्री आयंगर सफल हुए। बम्बई में वे पास हुए। सब दलवालों ने अपने आपसी झगड़ों की समस्या को हल किया। यदि गोरा कमीशन भारत की जांच पड़ताल के लिए नियुक्त न होता तो दूषित वायुमण्डल में से एकता के प्रदीप के संदर्शन की सम्भावना असम्भव थी। ब्रिटिश सरकार ने सोचा कुछ और था, हो कुछ और ही गया। मेरे मन कुछ और है विधना के कछु और वाली कहावत चरितार्थ हुई।

× × × × ×

भारतवर्ष की तीसरी महत्वपूर्ण घटना सर्वदल सम्मेलन है। जो हाल ही कांग्रेस में यह प्रस्ताव पास हुआ था कि भारत का एक शासन विधान बनाना चाहिए। मद्रास कांग्रेस ने कांग्रेस की कार्यकारिणी को यह आदेश कर दिया था कि वह भारत के विभिन्न दलों को आमन्त्रित कर शासन विधान

बनाए। सब प्रमुख दलों को बुलाया गया। सर्वदलसम्मेलन के दिल्ली, बम्बई और लखनऊ में अधिवेशन होते रहे। दिल्ली में भारतीय शासनविधान का आदर्श उत्तरदायित्वपूर्ण स्वतन्त्रता को मान लिया गया। विभिन्न दलों की सन्तुष्टि के लिए इस गोलमाल शब्द का प्रयोग किया गया था। बम्बई में शासनविधान के आधारभूत सिद्धान्तों को निश्चित करने के लिए एक कमेटी बनाई गई। पं. मोतीलाल नेहरू इसके अध्यक्ष थे। इसने अपनी रिपोर्ट तय्यार की। लखनऊ में सर्वदलसम्मेलन किया गया। यह रिपोर्ट पेश की गई। लखनऊ भारत के शासनविधानसम्बन्धी इतिहास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। १९१६ में इसी स्थान पर मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने मिलकर पृथक् निर्वाचन को स्वीकृत किया था। इस सिद्धान्त में विचित्र चमत्कार था। सब दलों वाले अपनी विजय के लिए खुश थे। पर वायुमण्डल शान्त था। प्रतिनिधियों के दिमाग भी शान्त होगए। बड़े दिल से निपटारा हुआ। सिन्ध, सीमाप्रान्त, बंगाल और पंजाब के झगड़े शान्त होगए। राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा होगई।

× × × × × ×

चौथी महत्वपूर्ण घटना यह है कि मद्रास कांग्रेस ने पूर्णस्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास कर दिया। अब तक कांग्रेस का ध्येय था कि यदि सम्भव हो सके तो ब्रिटिश छत्रछाया में रहते हुए स्वराज्य प्राप्त करना, नहीं तो इससे सम्बन्ध तोड़ देना। पर मद्रास कांग्रेस ने स्पष्ट शब्दों में उद्घोषित कर दिया कि राष्ट्रीय भारत का दावा पूर्णस्वतन्त्रता का है। इससे पूर्व भी पूर्णस्वतन्त्रता के प्रस्ताव कांग्रेस के सम्मुख पेश किए जाते रहे। युवकभावना ब्रिटिश सम्बन्ध को सहन न कर सकती थी। पर बूढ़ों के प्रयत्न से प्रस्ताव फेल हो जाता था। पर पुरानी पद्धतियों को नवीन पद्धतियों के आगे झुकना पड़ा। युवकभावना के मूर्तस्वरूप का भारत में अवतरण हुआ। पं. जवाहरलाल ने इसमें पूर्णस्वतन्त्रता की दुन्दुभि बजा दी। राष्ट्र ने इसका स्वागत किया। प्राचीनता को नवीनता के आगे सिर झुकाना पड़ा। सर्वदलसम्मेलन का ध्येय औपनिवेशिक स्वतन्त्रता ही समझा जाने लगा था कि इससे कांग्रेस के ध्येय को धक्का लगेगा, पर कांग्रेस की कार्यसमिति ने स्पष्टतौर पर घोषित कर दिया है कि कांग्रेस का ध्येय पूर्णस्वतन्त्रता ही। इस शब्द का कहीं दुरुपयोग न होने लग जाय, इसलिए इसका भाष्य भी कर दिया गया है। भाष्य यह है कि ब्रिटिश सम्बन्ध छोड़े बिना भारत स्वतन्त्र हो ही नहीं सकता। इस ध्येय की पवित्रता को बनाए रखने के लिए स्वतन्त्रता

[विजय वैजयन्ती]

वह मुसोलिनी की नाराजगी की वजह थी क्योंकि, अफ्रीका और भूमध्यसागर पर इसकी आंखें लगी हुई थीं। वह भूमध्यसागर का स्वामी बनना चाहता था। बहुत दिनों से इटली की महत्वाकांक्षा थी कि वह ट्यूनिस पर अपना अधिकार करे। पर इसकी सुनवाई न होती थी। वह लगातार प्रयत्न करता रहा। इसका परिणाम यह हुआ है कि ब्रिटेन, फ्रांस और स्पेन के साथ इटली को भी टैंजियर के शासन का अधिकार मिल गया। यह मुसोलिनी की पहली विजय थी।

× × × ×

मध्य यूरोप बहुत अधिक बुरी अवस्था में थे। आस्ट्रिया और हंगरी की अवस्था खराब थी। उनके पास कोई बन्दरगाह नहीं थे। व्यापार के अभाव से जीवन और व्यापार का स्रोत बन्द हो रहा था। न रहा तो अवस्था बुरी होती जा रही थी। उनकी मुक्ति जर्मनी के साथ थी। वह जर्मनी से मिलने के लिए छटपटा रहे थे। दोनों की इच्छा ही वास्तविकता थी पर सन्धियों में स्पष्ट तौर पर लिख दिया गया था कि आस्ट्रिया और जर्मनी कभी मिल नहीं सकते। आस्ट्रिया की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। इससे यूरोप को भी हानि थी। हंगरी में अशान्ति थी। वहाँ राज्य पलटने का डर बना रहता था। कोई न कोई प्रिटेण्डर निकल आता था।

पोलैण्ड सैनिक देश था। फ्रांस और पोलैण्ड की सैनिक सन्धि थी। वह रूस के आक्रमण से रक्षा करता था। पोलैण्ड का शासक पिलसुडस्की था। वह स्वेच्छाचारी था और अपनी इच्छानुसार शासन करता था। लिथुआनिया और पोलैण्ड में आए दिन झगड़े होते रहते हैं।

× × × × ×

बाल्कन प्रायद्वीप की स्थिति तो और भी अधिक शोचनीय थी। गत महायुद्ध का प्रादुर्भाव यहीं से हुआ था। अब भी आशंका की जाती है कि यहीं से आग की चिनगारी निकलेगी जो सारे यूरोप को ही नहीं अपितु सारे संसार को व्याप्त कर लेगी। बाल्कन प्रायद्वीप में फ्रांस और इटली अपना प्रभुत्व जमाना चाहते थे। फ्रांस का दोस्त जुगोस्लाविया था। उसका कहना है कि बाल्कन बाल्कन वालों के लिए है। यह उपद्रव की भावना नहीं थी। इसके साथ ही जुगोस्लाविया चाहता है कि वह सारे बाल्कन में प्रभुत्व पैदा करे। इटली इसमें बाधक थी। उसने जुगोस्लाविया का फ्यूम नामक बन्दरगाह छीना हुआ था। इससे वह इटली से डरता था। अल्बानिया का राजा इटली की कृपा पर निर्भर था। इसलिए सारे एड्रियाटिक पर इटली का प्रभुत्व था। जुगोस्लाविया का नहीं। वह इन मामलों से इटली को निकाल कर ही स्थापित किया जा सकता था। उसकी हार्दिक सलो निकाल के

अद्भुत सान्मुख्य

अनन्य दल और उपाध्याय औ+ स्नातकों में

दर्शनीय Foot ball का प्रशंसनीय सान्मुख्य.

देखें, किसको विजयश्री मिलती है.

आज सायंकाल ३ ½ बजे अनन्य दल और उपाध्याय+स्नातकों में Foot ball का match होगा. इस दर्शनीय सान्मुख्य के अभिनेतागण निम्न हैं।

अनन्य दल.	उपाध्याय + स्नातक
श्री रणजीत जी (मुखिया)	श्री पं. विश्वनाथ जी.
" केशवदेव जी	श्री पं. कामेश्वर जी (मुखिया)
" चन्द्रकान्त जी	श्री पं. सत्यकेतु जी
" विद्याचन्द्र जी	श्री पं. जगन्नाथ जी
" विद्याव्रत जी	श्री. नन्दलाल जी
" श्वेतकेतु जी	श्री पं. सुरेन्द्र शर्मा जी
" दिलीप चन्द्र जी	श्री. धर्मदेव जी
" रामप्रसाद जी	श्री जीतसिंह जी
श्री पूर्णचन्द्र जी १८४१	श्री दलजीत सिंह जी
श्री सर्वजित जी	श्री डा. रामदयाल जी.
श्री शत्रुघ्न जी	श्री पं. सत्यदेव जी.

कुल-समाचार

आज सायंकाल $3\frac{3}{4}$ बजे अनन्तदल और अध्यापक लोगों में Football का मुकाबला होगा।

छोटे ~~[illegible]~~ ब्रह्मचारियों के कुल में उपस्थित होजाने के कारण कुल की शोभा दुगनी बढ़ गई है।

सुना जाता है कि '[illegible]' इसके सहयोगी पत्रों की संख्या इस बढ़ाने में आगामी 'पुष्पमाला' कल से ~~प्र~~ प्रकाशित होना शुरू होगा।

निश्चित तौर पर पता लगा है कि श्री देवदत्त जी अपने अवकाश से लौट आए हैं।

और स्त्रियों के स्वातंत्र्यप्रेम के आगे कई बार झुकना पड़ा है। इस प्रकार में यही एक गौरव की बात है, यही उत्साह-प्रद स्थली है। परतंत्रता की चक्की में पिसने वालों के लिये यही एक आशा का स्थान है।

× × × ×

राष्ट्र संघ की शक्ति की परीक्षा कई बार हो चुकी है। हर साल कोई न कोई मौका आजाता है जब संसार की कोई न कोई शक्ति राष्ट्र संघ की शक्ति आजमाने की कोशिश करती है। राष्ट्र संघ की हालत उस आदमी की तरह है जिसकी कई स्त्रियां हो और सबको खुश करने का यत्न किया करता हो और वह आदमी अन्त: पुर के षड़यंत्रों का मुकाबला न कर उनके सामने सिर झुका देता हो। जर्मनी की तरफ साम्राज्यवादियों और श्रमजीवि॰ दोनों की आँखें लगी हुई थी। दोनों ने अपने हाथ आगे बढ़ाये जर्मनी ने किसी को नाखुश नहीं किया। एक ओर दिल दिया है तो दूसरी ओर अपने आपको। श्री चेम्बरलेन का लोकॅर्नो में सेया गया बच्चा फल फूल रहा है। जेनेवा में राष्ट्र संघ की प्रबंधकारिणी में प्रवेश का समाचार सुनकर स्पेन, ब्राजिल, पोलेण्ड 'अब्रह्मण्यम्' 'अब्रह्मण्यम्' चिल्ला उठे और उससे अलग भी होगये। श्री चेम्बरलेन और श्री ब्रियांद की खुशामदें भी उन को न मना सकीं। इधर जर्मनी भी मचल गया। राष्ट्र संघ ने जर्मनी को अपने पतियों से वरण करना स्वीकार किया को का उत्तर अभी युद्ध होगा

× × × ×

जर्मनी के राष्ट्र संघ में प्रवेश ने नई २ समस्याओं को जन्म दिया है अब जर्मनी भी दूसरे देशों का शासनादेश मांगने लग गया है। जाति अपने पुराने गौरव पर पहुंचने के लिये व्याकुल है। श्री चेम्बरलेन और श्री मुसोलिनी का समुद्र में सम्मिलन और इटली ब्रिटेन की संधियां, फ्रांस जर्मनी के बीच मैत्री की स्थापना, रूस से फ्रांस की गलबांही, ये सबके सब अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में नई हेर फेर करने वाले हैं। रूस के श्रमजीवि प्रतिनिधि का ब्रिटेन की पवित्र भूमि पर पॉव न धरने देना ये सब एक घटना चक्र के ही अंग हैं। फ्रांस का ब्रिटेन का स्थान स्थान पर नीचा दिखाना, रहस्य से खाली नहीं है।

× × × × ×

इंगलेण्ड के श्रमजीवियों और पूंजीपतियों में तीस सप्ताह से युद्ध ठना हुआ है। साम्राज्यवादी गवर्नमेंट की सहायता के बावजूद पूंजीपति झुकने का नाम नहीं लेरहे। सहानुभूति और मनुष्यता को तलाक देदिया है। मजदूर भी अपनी संगठन शक्ति, दृढ़ निश्चय और संसार की सहानुभूति का आश्रय पाकर पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों की सम्मिलित शक्ति के सामने घुटने टेकने को तयार नहीं। भूखे रहने को तयार हैं, अपने बच्चे को बिलखता देखना पसन्द है, पर अपने सिद्धान्त को छोड़ने के लिये तैयार नहीं अपना राष्ट्रीय दावा—जिसकी सफलता में उन्हें पूर्ण विश्वास है—मनवा कर छोड़ेंगे या मर मिटेंगे। ब्रिटेन का कोयले और लोहे का व्यवसाय एक प्रकार से बंद है। कपड़े की मिलें भी इने गिने घंटे काम नहीं कर रही हैं। ब्रिटेन का आपार

बढ़ रहा है और निर्यात तेज़ी से घट रहा है। पर इसके साथ ही फासिस्ट दल का जन्म हो रहा है। अभी यह दल भी युद्ध को गायब करने में विफल हुआ है। विशेष कानूनों से काम लिया जा रहा है। ब्रिटेन के ही नहीं अपितु संसार के इतिहास में मई का प्रथम सप्ताह स्मरणीय दिवस समझा जायगा। सारे कारोबार सारे दे-श, सब यातायात के साधन, सारे काम काज और निश्चय बन्द हो गये। संसार के आगे इतिहास में नया प्रभाव, नई धारा बहाने वाली शक्ति का विराट रूप प्रगट हुआ। जागरित मजदूरों में क्या शक्ति है यह सारे संसार ने विस्मय से देखा। पूंजी पतियों और साम्राज्य वादियों की आंखें खोलने के लिये उनका पाठ ही पर्याप्त होगा।

× × × ×

सुदूर पूर्व में अशान्ति का ज्वाला मुखी फटा नहीं है कभी कभी छोटी मोटी आवाज कर देता है। कभी २ धुंआ उठता दिखाई देता है इसके साथ २ कभी २ आग की लपटें निकलती नज़र आती हैं और चिनगारियां दूर २ तक बिखर जाती हैं। जहाज लंगर डाल देते हैं, तोपें खामोश हो जाती हैं। बारकों में आराम से सिपाही वर्दी पहिन लेते हैं सब देशों के डूबते तारे दौड़ाने आ-रम्भ कर देते हैं सिपाहियों की टुकड़ि-यां भी स्थल पर उतर पड़ती हैं। संगीनें आकाश में चमचमाई जाती हैं। एक दो बार बन्दूक की फायर कर दी जाती है और धुंआ चारों ओर फैल जाता है। यह स्थिति कब तक रहेगा यह बताना कठिन है। सिंगापुर का अड्डा बनने तक या उसके बाद भी यह नहीं कहा जा सकता। पर अब सोलह आने ठीक है कि ज्वालामुखी फटेगा। इसकी लपटों की के प्रकाश में एशिया अपनी स्वतंत्रता के मार्ग को ढूंढेगा। पराधीन सम्पत्ता अपने घर से भी विदाई लेगी। कब होगा? इसके लिये भी अभी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अभी योरोप की शक्तियां पूर्णतया लाचार नहीं हुई हैं। उनके शस्त्रागार अभी भरे नहीं हैं। उनकी शासित प्रजा की आहों में वह बल और शक्ति नहीं आई है जो उन्हें भस्म कर दें। अत्याचार पीड़ितों के कंठ में इतनी शक्ति और साहस नहीं कि वे ज़ोर से बोल सकें। उनके हृदय में इत-नी सामर्थ्य नहीं आई है कि छाती पर बैठ ने वाले को मुंह के बल पटक दें। इसके लिये प्रतीक्षा करनी होगी।

× × × ×

जागृति का, और नूतन युग का सन्देश मुस्लिम देशों में पहुंच गया है। राष्ट्रीयता की प्रबल धारा ने ईरान के शासन को उलट दिया है। टर्की ने अपने रंग में फारस, अरब हिजाज़ और अफ़गानिस्तान को रंग दिया है। आज उन देशों में स्वतंत्रता की बयार स्वच्छंदता से बह रही है। पर इन सब से महत्व पूर्ण घटना एशिया के इतिहास में 'एशिया संघ' की स्था-पना है। यह भारत जैसे गुलाम देशों के गले में पड़ी गुलामी का पट्टा खोलने के यत्न में सहायक होगा। सम्पूर्ण एशिया में बंधुत्व का प्रचार करेगा एशिया की असंगठित शक्तियों को

संघठित करेगा। रशिया संघ संसार के सामने नूतन संदेश को लेकर खड़ा हुआ है। शान्ति और प्रेम की पवित्र धारा का उद्गम स्थान रशिया होगा। क्या रशिया संघ का ब्रिटिश साम्राज्य का मुकुट मणि हृदय बनने का यत्न करेगा? क्या उपनिषदों और गीता के पवित्र तथा कल्याणकारी संदेशों को लेकर भारत आगे बढ़ेगा? पर दुनिया में खड़े होने से पहिले भारत को गुलामी का पट्टा उतारना पड़ेगा।

× × × ×

हम लोग एक दूसरे की पगड़ी उछालने में ही लगे रहे। एक दूसरे को नीचा दिखाने में ही हमारी योग्यता और शक्ति का प्रदर्शन हुआ। आज वह जोरों पर है। [illegible] का मध्यप्रदेश की कार्यकारिणी कौंसिल की सदस्यता स्वीकार करना था कि आपस में जूती पैजार होने लगी। अवस्था यहां तक पहुंच गई है कि आज हम अपने आश्रयवृक्ष को उखाड़ते भी नहीं शर्माते। संप्रदायिकता की विषैली हवाओं से चल रही हैं। गालियों का बाजार गर्म है। सद्भाव और स्नेह की धारा सूख गई है। कलकत्ता आज अशान्ति की भट्ठी बनी हुई है। यहां से भारत में अशान्ति की चिनगारियें उड़ उड़ कर पहुंच रही हैं। नये वायसराय लार्ड अरविन का स्वागत इन्हीं चिनगारियों की माला से

से किया गया था। शिमला शैल से उनके उतरने की सूचना लाहौर के बम के धड़ाके ने दी। राष्ट्रीयता का प्रबल प्रवाह मन्द होगया है। [illegible] की असहयोग और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की आंधी में आज हमें कुछ नहीं दीख रहा है। राष्ट्रीयता की पताका को जिन हाथों ने इस समय ऊंचा उठा रखा है।

× × × ×

कुल का यह वर्ष 'नवरस सम्मेलन' था। कुल माता की 'प्रथम पचीसी के महोत्सव' की सूचना ही ने नई उमंगे, नया उत्साह और नवीन स्फूर्ति कुल पुत्रों में भर दिया है। आज नूतन प्रेरणा प्रेरित कर रही है, नूतन भावनायें काम कर रही हैं। कुल के जन्मोत्सव ने नया रंग रूप धारण किया है। समाज के आन्दोलनों का यदि इसे स्रोत बनाने का यत्न किया जावे तो सफलता निश्चित है। पार्लियामेंट के लिये उत्साह अपूर्व था सबसे बढ़कर बात यह कि कुल पुत्रों ने कुल के प्रति अपने उत्तरदायित्व और अपने कर्तव्य का अनुभव किया है। उन्होंने अपने कार्य से साबित कर दिया है कि यदि उन पर विश्वास किया जावे तो उसमें वे पूरे उतरेंगे। कसौटी पर कसे जाने से खरे उतरेंगे और परीक्षा में सफल उतरेंगे पर इन सब के होते हुए भी कुल का जीवन-प्रवाह मन्थर-गति से बहता रहा। न उसमें चंचलता थी न वेग में वेग था.

समाप्त

(ले श्री उपाध्याय देवराज जी सेठी M A)

आश्रम की स्थिति   महात्मा जी के चरणो मे कुछ दिन निरन्तर बैठ कर शिक्षा लेने की लालसा मेरे मन मे बहुत दिनो से बनी हुई थी। महात्मा जी के संसार-प्रसिद्ध आश्रम को अपने आंखो से देखने की इच्छा प्रतिदिन मेरे मन मे तीव्र हो रही थी। बिहार प्रान्त मे पाच सप्ताह तक भिक्षा कार्य से उकताया हुआ चित्त की शान्ति के लिए जगप्रसिद्ध सत्याग्रह आश्रम मे २३ सितम्बर को पहुचा। आश्रम अहमदाबाद स्टेशन से ६ मील और साबरमती स्टेशन से २० मि० का रास्ता है। साबरमती के दाहिने तट पर यह आश्रम स्थित है। स्वामी जी के चरणो से पूत रजकणों को अपने शीश पर धारण करने के लिए गंगा की तरंगें आपस मे जिस प्रकार होड करती हैं उसी प्रकार साबरमती की चंचल तरंगमाला विश्वविभूति के चरणो से पूत रजकणो को शीश पर धारण करने के लिए निरन्तर होड करती रहती है। सड़क के दोनो ओर १½ फर्लांग तक आश्रम के पक्के मकान बने हुए हैं। सोमनाथ छात्रावास को छोड कर सब छात्रावास छोटे छोटे हैं और प्रत्येक के सामने एक एक छोटा रम्य बगीचा लगा हुआ है। सड़को और पगडण्डियों को छोड कर शेष आश्रम की भूमि पर कपास ही के पौदे उग रहे हैं। सोमनाथ छात्रावास (जो कि दो मंजिली इमारत है और इस मे लगभग १०० कमरे हैं) के आगन मे भी 'देवकपास'[1] के ऊंचे ऊंचे पौदे खड़े हैं। इस के पीछे श्री सेठ जमनालाल जी बजाज की कुटिया है, जहा उन का परिवार रहता है। आश्रम एक छोटा सा सब धर्मों और विचारो के रहने वाले आदमियो का छोटा सा कस्बा है। आश्रम मे स्थिर रूप से रहने वाले हिन्दू परिवारो के साथ इमाम साहब, कुरैशी साहब तथा एक दो और मुसलमान खानदान भी रहते हैं जो भारत की भावी राष्ट्रीयता और हिन्दू मुसलिम ऐक्य का एक उज्वल चित्र दर्शकों के सामने उपस्थित करते है।

१ यह कपास बारहो महीने रहती है। इस के बीज उपाध्याय जी के पास है। जो भाई चाहे उन से ले कर खेती कर सकते है।

सम्पादक

विजय वैजयन्ती.

मिस स्लेड (मीरा बहिन) और एक जर्मन महिला भी आश्रम का एक आवश्यक अंग बन गई हैं जो आश्रम की सार्वभौमता को प्रकट करता है। आश्रम में स्त्री पुरुष और बच्चे सब मिला कर लगभग १३० होंगे।

बापूजी का बैठक खाना — आश्रम में पहुंचते ही सीधा बापूजी के चरणों में उपस्थित हुआ। निगाह को चारों ओर दौड़ाया पर संसार के सब से बड़े आदमी के कमरे की शोभा और भूषा को बढ़ाने वाली - एक डैस्क, चर्खा, बैठने का आसन, कुछ पुस्तकें और एक चटाई के सिवाय कुछ न पाया। कुछ प्रारम्भिक बात चीत के बाद मेरे और बापूजी के बीच में निम्न प्रश्नोत्तर हुआ —

मैं - आश्रम में मुझे क्या काम करना होगा?

बापूजी - (तुरन्त उत्तर दिया) काम तो है, पर करोगे?

मैं - (आहिस्ते से) जी हां,

बापूजी - प्रतिदिन प्रातः आठ से नौ तक आश्रम के एक हिस्से की टट्टियां साफ़ करनी होंगी।

मैंने सहर्ष इस आज्ञा के सामने सिर झुका दिया। अपनी रवानगी के अन्तिम दिन तक सफ़ाई का काम करता रहा। इस के अतिरिक्त धुनना, सूत को पान लगाना तथा कातने इत्यादि में पर्याप्त समय देता रहा। मेरे भोजन छादन के लिए बापूजी ने अपने घर में ही प्रबन्ध करने की कृपा की।

आश्रम की दिनचर्या यहां गुरुकुल में सब से पहली घंटी चार बजे बजती है। इसका हमको बड़ा नाज है। पर आश्रम हम से आगे बढ़ा हुआ है। सत्याग्रह आश्रम पहली घंटी हम से भी १५ मि. पहले अर्थात् ३॥ बजे बजती है। और आठ नौ मिनट तक घूम घूम कर बजाई जाती है। सवा चार बजे सब आश्रमवासी साबरमती के किनारे इकट्ठे होते हैं। श्री शंकराचार्य के निम्न श्लोकों से प्रार्थना शुरू होती है —

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वम्
सच्चित् सुखं परम हंस गतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्न जागर सुषुप्तमवैति नित्यम्.
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूत संघः॥

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो,
वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः॥

× × ×

बापू जी के चरणों मे—

प्रार्थना के पश्चात् राम नाम का मिल कर ऊंचे स्वर मे जाप किया जाता है। तदु-
परान्त एक दो भजन और तदनन्तर बापूजी पांच बजे तक भगवद् गीता की कथा
करते है। उन दिनो पन्द्रहवां अध्याय चल रहा था। ५½ बजे दूसरी घंटी पर विभि-
न्नि‍ प्रकार व्यायाम इत्यादि मे लग जाते है। ६ बजे से ६½ तक प्रातराश करते है।
६½ बजे महात्मा जी के कमरे मे आश्रम की सब देवियां इकट्ठी होती है। बापूजी
इस समय तुलसी रामायण की कथा करते हैं। इसी समय बच्चो की विद्यालय मे प्रा-
र्थना इत्यादि होती है।

सात बजे से १०½ बजे तक प्रत्येक अपने काम पर रहता है। जिस का जो काम है
उसी पर चला जाता है। कोई धुनने मे, कोई बुनने मे कोई खेती मे और कोई दफ्तर मे
काम करते है। १०½ से १२ तक का समय भोजन पकाने खाने और विश्राम करने के
लिए रखा हुआ है। १२ बजे फिर काम पर जाने की घंटी बजती है और सब अपने
निश्चित कामो पर चले जाते है और ४ ४० तक अपने अपने कार्यों मे लगे रहते है।
सायंकालीन प्रार्थना के लिए सब आश्रम वासी जमा हो जाते है। भगवद् गीता के
अन्तिम श्लोको के पाठ से (जिन मे स्थितप्रज्ञ के लक्षण दिए हुए है) प्रार्थना प्रारम्भ
होती है। तदुपरान्त रामनाम का जाप और दो एक सन्तों की वाणियां मिलकर
गाई जाती है। इस के बाद उपस्थिति होती है जिस के उत्तर मे प्रत्येक व्यक्ति उस दिन
के काते हुए सूत का अपना ब्यौरा लिखाता है। प्रतिदिन सारे आश्रम का १८ हजार
गज के लगभग सूत होता है। उपस्थिति के पश्चात बापू जी आठ बजे तुलसी
रामायण की कथा करते है। लगभग ९ बजे सभी सो जाते हैं।

बापूजी की दिनचर्या— आम लोगो का ख्याल है कि बापू जी आश्रम मे
बैठे हुए आराम से दिन काट रहे है, पर यह सर्वथा भ्रम है। प्रात 3-४५ से लेकर
रात ९ बजे तक शायद ही कोई ऐसा क्षण हो जो उन को आराम लेने का समय
मिलता हो। कम से कम मैने तीन सप्ताह के निवास मे उन्हे बहुत ही
शायद नादर ही खाली पाया है। प्राय उन के पास उन के सहकारी कार्यकर्ता
भिन्न भिन्न विषयो पर निर्देश लेने के लिए चारो और जमा रहते है। बापूजी
अपना पर्याप्त समय लेख इत्यादि के लिखने मे लगाते है। अब कुछ समय
स्वाध्याय मे भी देने लगे है। विशेष कर आज कल Indian Chamber
of Commerce की प्रार्थना पर मुद्रापद्धति के प्रश्न का विशेषत अनु-
शीलन कर रहे है। अलग कोने मे रहते हुए भी भिन्न भिन्न प्रान्तो से आए
हुए दर्शक उन के बहुमूल्य समय पर एक खासा टैक्स है। आश्रमवाले
भी उन से केवल व्यावहारिक बातो तक परिमित नही रहते। एक आकर
कहता है- बापू जी आज पेट मे दर्द है। कोई कहता है कल बुखार हो
गया था। गोया कि हर कोई अपनी सब प्रकार की शिकायतें

और जरूरियात बापू जी के पास लाते हैं। बापू जी इन की कभी उपेक्षा नहीं करते। उपेक्षा करना इन्होंने कभी सीखा ही नहीं। वे भी हरेक काम में खूब दिलचस्पी लेते हैं। किसी को उपवास कराते हैं, किसी को लुई कोनी का स्नान कराते हैं, किसी को अनीमा देते हैं और किसी को अपने घर से फल का रस पिलाते हैं।

वे ६ बजे के हल्का सा प्रातराश कराते हैं। १०½ से ११ तक स्नान इत्यादि। मेरे होते हुए उन्होंने कुछ दिन से साबरमती में बच्चों के साथ तैरना भी शुरू कर दिया था। ११ बजे भोजन करते हैं। भोजन में बकरी का दूध, मुनक्का, दो हलकी हलकी करारी सूखी रोटियां, और फल होते हैं। खाना खाते हुए भी कोई न कोई उन के पास डटा रहता है। किसी दिन कोई न आए तो अखवार भी देखते हैं। १२ बजे से ५ बजे तक विविध प्रकार के कामों में लगे रहते हैं। लोगों को मिलने का समय ४ से ५ तक का देते हैं। यही उन का चरखा चलाने का समय है। ५½ बजे सायंकाल का भोजन करते हैं। जिस में प्रायः वेही चीज़ें होती हैं। १९१५ में जब बापू जी कुम्भ पर आए थे तब उन्होंने दो प्रतिज्ञाएं की थी। एक तो रात्री में भोजन न करने की। दूसरी यह कि दिन भर के भोजन में ५ से अधिक पदार्थ न खाऊंगा।

(धारवाहिक)

गुरुकुलीय ओलिम्पस

वॉली बॉल

सान्मुख्य

४ नवम्बर १९२६

चतुरंगी हॉकी सान्मुख्य

क्राउन टीम
रॉयल टीम } A

डायमण्ड क्लब
एफ़. यू. सी. } B.
F. U. C.

सच्चा न्याय

(श्री पूर्णानन्द जी)

इधर राजकुमार शिवदत्त सिंह ने यौवनावस्था में पग बढ़ाया उधर राजाधिराज जयसिंह को उनके विवाह की फिक्र सताने लगी। उन्होंने बहुत ही तलाश किया पर उनके आँखों में किसी की सूरत न उतरी, हताश होकर बैठ गए। एक दिन थके मांदे विश्राम गृह में पहुंचे और चिल्लाने लगे.

पति की आवाज़ सुनकर महारानी कलावती उनके सामने आकर खड़ी होगई। तब जयसिंह ने ठंडी आह भर कर कहा – प्यारी! बहुत सोचा और परन्तु कोई भी सुयोग्य एवं सुन्दरी राजकुमारी नहीं मिली।

कलावती ने कहा–नाथ! आप इतने बेचैन क्यों हो रहे हैं? विजय गढ़ के राजा रामसिंह की कन्या से ही इसकी शादी कर लीजिये।

जयसिंह ने लम्बी सांस लेकर आँखें मूंद ली और सोचते सोचते जब बारह बजे गये तो ज़ोर से चिल्लाने लगे कि मैं अपने प्रियपुत्र की शादी अवश्य ही लीलावती से करूंगा, उसको मेरे लड़के के लिये ही ब्रह्मा ने रचा है।

सवेरे उठते ही राजा रानी के कमरे में गए और रानी का हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे २ बोले– प्रियतमे? तुमने ठीक ही मुझे सुझाया मैं अवश्यमेव शिवदत्त की शादी विजय गढ़ के राजा रामसिंह की कन्या लीलावती से करूंगा। सो अब शगुन करना चाहिये और उन्हें यह संदेश भेजना चाहिये। उसके अनुसार संदेश भेजा गया और दोनों पक्ष की अनुमति से शादी बड़ी धूमधाम से होगई।

(२)

शिवदत्त सिंह न जाने आज रात को किसी किस की खोज में घूम रहे थे। उनके चेहरे से ऐसा मालूम होता है कि वह किसी गहरी चिन्ता में निमग्न है और उसके मारे सूखे जारहे हैं। वह कभी सड़क पर घूमते हैं और कभी निराशामय गहरी चिन्ता में बैठ कर कुछ शोक पूर्ण आँखों से इधर उधर नज़रें दौड़ा लेते हैं। इस प्रकार की क्रियायें करते २ जब १२ बज गये तब इनका ध्यान अपनी कलाई पर बंधी हुई घड़ी पर गया और वह ~~चिल्लाकर~~ चौंक कर चिल्ला उठे कि हैं मैं कहां!

शिवदत्त सिंह ने चारों तरफ देखा कि मैं अब पूर्ण सुनसान जगह में हूं। कोई मुझे देख तो नहीं रहा ? जब उसे पूर्ण यकीन हो गया कि मुझे कोई नहीं देख रहा है तो उसने एक आलीशान मकान पर कमन्द लगाई और उसके सहारे ऊपर चढ़ गया। ज्योंही उसने बारी में पैर रखा त्योंही उसे एक बालक के रोने की आवाज आई। उस आवाज को सुनकर एक दफा इसका कलेजा कांप गया। जब रोना बंद होगया तो यह कहने लगा हे परमात्मन ? क्या मुझे यह पाप करना ही पड़ेगा। कई बार उसका मन उसको इस बुराई से मना कर रहा था परन्तु लीला का नाम याद आते ही इसका दिल भर आता था। अन्त में दिल को काबू करके इसने धीरे २ आगे बढ़ना शुरू किया। बड़ी कठिनता से यह एक पलंग के पास पहुंचा और बहुत ही सावधानी से अन्धकार में किसी चीज को टटोलने लगा। जब पूर्ण निश्चय होगया कि जिस चीज को मैं ढूंढ रहा हूं वह यही है तब उसने अपनी जेब से एक शीशी निकाल उस देह को सुंघाई और धीरे से उसके गले में सोने का हार निकाल लिया। इसके कुछ बाद उसने इस हार को चूमा और बहुत ही खुश होने लगा। परन्तु फिर एक दम उसके मुख का भाव बदल गया और उस का शरीर थरथर कांपने लगा। इतने में वहां खटका हुआ। खटके की आवाज से चौंक कर घबराकर एक दीवार के साथ सट कर खड़ा होगया परन्तु जब उसने वहां पूर्ण शान्ति पाई तो वह वहां से हटा और उसी बारी के पास लौट आया पर ज्योंही वह कमन्द लगा कर कमन्द लगाकर नीचे उतरना चाहता था उसे पहरेदार की आवाज आई "खबरदार जागते रहो"। अब तो उसके प्राण पखेरू उड़ने लगे। इसने झट कमन्द को उतार दिया और छिप कर उसके गुजरने की इन्तजार करने लगा। इतने ही उसे एक और काम याद आया। उसने बारी से हाथ निकाल कर [illegible] देखा तो [illegible] फिर आया था वह उसी पलंग के पास पहुंचा और नाक के आगे हाथ रख कर देखने लगा कि वह अभागिनी स्त्री जीवित है या नहीं। जब उसे पूर्ण निश्चय होगया कि वह अभी जीवित है तो उसने उसके पेट में कटार चुभो दी। इतने में ही उसे किसी के आने की आहट सुनाई दी। आवाज सुनते ही यह भागा और झट उसी बारी पर आया इतने में पहरेदार भी वहां से जा चुका था। उसने झट कमंद लगाया और झट नीचे उतर आया और अपने को बचाता हुआ अपने घर में पहुंचा और वह उस हार को अपनी स्त्री के गले में डाल प्रसन्न होने लगा। जब उसने सोने के लिये अपने वस्त्र उतारे तो एक दम कटार की आस्तीन पर हाथ जाने से चौंक पड़ा और उसको खाली पाकर बेहोश होगया।

(२)

पौ फटते ही देवी सिंह के मकान में रोना धोना शुरू हुआ। सब आश्चर्य में थे कि यह क्या होगया। सब आकर सेठ साहिब से सहानुभूति प्रकट करते थे। जब सेठ साहिब अपनी लड़की कमला की लाश को देखने अन्दर गये तो उनकी

नज़र एक कटार पर पड़ी जो कि इसके पेट में घुसी हुई थी। उन्होंने वह कटार एक दम निकाल ली और आश्चर्य से देखने लगे। जब उन्होंने उस पर लिखे नाम को पढ़ा तो वह स्तब्ध हो गये उनकी सब चेष्टायें रुक गई। आखिर सेठ जी घुरा लेकर राजदर्बार में पहुंचे और राजा जयसिंह के सामने खड़े होकर इस प्रकार कहने लगे - श्री राजाधिराज जयसिंह की जय हो! आज रात को न जाने मेरे घर में किसी ने घुस कर उसका मारा, मुझे कुछ भी पता न था। जब मैं सवेरे उठा तो मैं अपनी कन्या कमला को देखने गया। मैंने जो दृश्य देखा वह बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य था। मेरी लड़की के पेट में एक कटार घुसी हुई थी जिसके ऊपर राजकुमार — इतना कह कर सेठ साहिब रुक गये और घबरा कर रोने लगे। राजा जयसिंह बोले - कहिये सेठ जी रुक क्यों गये। अन्त में सेठ जी ने डरते हुए धीरे से कहा - "शिवदत्त सिंह का नाम खुदा हुआ था। न जाने राजकुमार को मेरे से क्या दुश्मनी थी जो यकायक उन्होंने यह काम कर दिया।" राजाधिराज जयसिंह इस बात को सुन घबरा गये, उनके मुंह पर हवाईयां उड़ने लगी और मूर्छित होकर सिंहासन पर गिर पड़े। रानी को जब पता लगा तब वह भी बेहोश हो गई। प्रजा तथा दरबारी लोगों में भी इस विषय की चर्चा होने लगी।

(५)

आज का दर्बार एक विचित्र ढंग का ही दर्बार है, लोगों में तरह तरह की बातें होने लगी। देखें राजा साहिब अपने लड़के के बारे में क्या न्याय करते हैं। आज शिवदत्त सिंह हाथ पांव में बेड़ी डाले राजा के सामने सिर झुकाये खड़े हैं। सारी प्रजा तथा दर्बारी उनकी सूरत को देख कर घबरा रहे हैं। सेठ साहिब भी गालों पर हाथ धरे एक टक बन्दी को देख रहे हैं। इतने में राजा ने सभा की निस्तब्धता को भंग करते हुए बोलना आरंभ किया - "हे मेरे प्राणों से प्यारे, एक मात्र मेरे सहारे प्यारे राजकुमार क्या मैं जो कुछ तेरे विषय में सुन रहा हूं, वह वास्तव में ठीक है या झूठ बात। जल्दी सत्य कहो और मेरे दग्ध हृदय को शान्त करो।"

राजकुमार चुप चाप खड़े रहे। ५ मिनट तक दर्बार में पूर्ण शान्ति रही। इसके बाद राजकुमार ने सिर ऊंचा किया और जनता के सामने सिर नवाकर तथा राजाधिराज के आगे सिर झुका कर अपना अपराध स्वीकार किया।

फिर राजा ने कहा - क्या यह कटार भी तुम्हारी है?

उत्तर में राजकुमार ने सिर झुका दिया।

तब राजा ने कहा कि यह तुमने क्यों किया?

राजकुमार ने हाथ जोड़ कर कहा - महाराज सुनिये " एक बार मैं अपनी स्त्री के साथ घूमने सायंकाल ठंडी सड़क पर गया। मैं और मेरी स्त्री एक फिटन पर सवार थी इतने में मैंने देखा एक मोटर चली आ रही है उस पर सेठ जी और उनके सब घर वाले बैठे थे। मोटर बहुत धीरे धीरे जा रही थी। एक उसमें कमला नाम की लड़की थी

जिसके गले में एक सोने का हार था और वह बहुत ही खूब सूरत थी, उसको जब मेरी रानी को देखा तो वह नाक भौं सिकोड़ कर बोली कि "यह कौन सी रानी है क्या यह भी इसकी तरह सुख का जीवन बिता सकती है।" उसकी इस ढिठाई को देखकर मेरी रानी जल गई और रोने लगी और कहने लगी कि जब तक तुम इसे मार मुझे यह सोने का हार न ला दोगे तब तक मैं तुम्हारा मुख न देखूंगी नहीं तो ज़हर खाकर मर जाऊंगी।" अब मुझे मजबूर होकर यह काम करना पड़ा। उसके इस कथन को सुनकर सब हैरान हो गये। राजाधिराज भी सोच में पड़ गये। कुछ देर बाद सेठजी से पूछा- क्यों सेठजी यह बात ठीक है कि आप मोटर पर परिवार सहित आप सैर करने गये थे।

सेठजी ने— श्रीमान्! ठीक है। राजा— क्या तुम्हें पता था कि तुम्हारी कन्या ने ऐसा किया।
सेठजी — मुझे भी पता न था- मुझे पता होता तो मैं उसे डांटता और माफी मांगता।
तब राजा कुछ चुप रहे और कुछ सोचकर इस प्रकार बोले - हे मेरे प्यारे पुत्र! क्या तुम्हें पता है कि तुम्हें इस अपराध का क्या दंड मिलेगा? । राजकुमार ने कहा महाराज! जो कुछ आप मुझे दंड देंगे वो मैं सहर्ष सहने को तय्यार हूं। मैं अभागा आपके घर में इसीलिये पैदा हुआ था। मुझ पापी को वही दण्ड दो जो मेरे लिये उपयुक्त हो। यह कहकर उसने सिर झुका लिया और अपने नयनों के आंसुओं से अपनी वेदना को दूर करने लगा।

सारी प्रजा ध्यान से देख रही थी कि देखें राजा साहिब क्या हुक्म देते हैं।

राजा साहिब —(दिल में) जुर्म तो बहुत बड़ा है, मैं अपने राज्य में ऐसा अधर्म नहीं देख सकता हूं। यद्यपि यह मेरा इकलौता प्यारा पुत्र है तथापि मैं धर्म से एक कदम भी पीछे नहीं हट सकता। मुझको इसके लिये दंड की आज्ञा देनी पड़ेगी। फिर स्पष्ट शब्दों में बोले - मैं इसको कतल की आज्ञा देता हूं। अब दरबार बरखास्त किया जाता है। कल ७ बजे प्रात काल ही इसका कतल किया जायगा।

(४)

आज प्रात काल ६ बजे ही सारा दरबार भर गया और इस अजीब नज़ारे को देखने के लिये प्रजा उमड़ आई। ठीक ६½ बजे राजकुमार शिवदत्त राजकुमार दरबार में हथकड़ियां तथा बेड़ियां डाले हाज़िर किये गये। सारे दरबार में सन्नाटा छाया हुआ था। सब जगह शान्ति विराजमान थी परन्तु सबके चेहरों पर उदासी थी पर राजकुमार के चेहरे पर अजब मुसकान थी।

ठीक ८ बजे राजाधिराज ने जल्लादों को हुक्म दिया कि इसकी गर्दन काट दो परन्तु किसी को भी हिम्मत न पड़ी कि वह उसको छू भी सके। जब कोई भी जल्लाद इस काम को करने के लिये तय्यार न हुआ तो राजा ने कहा - अच्छा मैं ही इसको तलवार के घाट उतार दूं। परन्तु वहां तो पूर्ण सन्नाटा था कौन उत्तर प्राप्त करता। अन्त में राजाधिराज स्वयं उठे और हाथ में तलवार ले

अञ्चल में

बंगाली रंग मंच.

यह सर्व विदित है कि सबसे पहिला बंगाली ड्रामा श्याम बाजार में बाबू नवीन के बोस के यहां किया गया था परन्तु वहां कोई स्थिर रंगमंच न था अतः प्रत्येक मनुष्य खेल देखने की उत्सुकता से इधर उधर मारे फिरते थे। रामनारायण तर्कालंकार के द्वारा लिखा गया 'कुलीन कुल सर्वस्व' नामक ड्रामा जो कि १८५६ में चरकडांगा में बाबू रामजय बसाक के यहां खेला गया था उसकी भी हालत पूर्व ड्रामे के समान हुई जो कलकत्ते में खेला गया था।

यह खेल लेबेडेफ (Lebedeff) नाम के एक रूसी ने बाबू गोलक नाथ दास की सहायता से किया था। इससे अधिक बात यह थी कि बाबू गोलक नाथ दास ने स्त्रियों का नाटक खेला था इस नाटक का नाम 'छद्मवेश' था। यह अंग्रेजी नाटक Disguise का अनुवाद था जो कि बाबू गोलक नाथ दास ने किया था इसमें इन्हीं महाशय ने स्त्रियों को भी सम्मिलित कर लिया था। यद्यपि हम यह देखते हैं कि 'मनीपुर ड्रामा' में और 'विद्यासुन्दर' में भिखारियों ने स्त्रियों का भाग खेला था परन्तु इन ४० वर्षों के भीतर किसी ने भी स्त्री का पार्ट नहीं किया था।

<u>बंगाली नाटक मंडली</u> — १८६७ में एक बंगाली नाटक स्थापित हुई जिसमें स्त्रियों का भाग Female Artists ने ही खेला था और उसी समय ही Oriental Theatre और National Lyceum नामके और भी दो खेल हुए उसमें भी स्त्रियों का भाग female Artists के द्वारा ही हुआ है। बंगाली नाटक मंडली की स्थापना से पूर्व पूर्वोक्त दोनों नाटक मण्डलियां कभी कभी खेला करती थी इस कारण बंगाली नाटक मण्डली रंगमंच में पदार्पण नहीं के प्रवेश करने में आती है।

<u>श्री W C बनर्जी नाटक बोस में</u> — यह पहिले ही कहा जा चुका है 'कुलीन कुल-सर्वस्व' बाबू राम जय बसाक के यहां खेला गया था। बाबू बिहारी लाल चटर्जी भी एक Artist था जिसने कि स्त्रियों का भाग पूर्ण सफलता से किया था। सम्भवतः रामनारायण तर्कालंकार के द्वारा लिखित 'वेणी-संहार' नामक खेल भी उसी वर्ष बाबू काली प्रसन्न सिंह के मकान पर खेला गया था। इसमें भी बाबू बिहारी लाल ने स्त्रियों का भाग खेला था। अन्य Artists में जिन्होंने कि खेल में भाग लिया था वे काली प्रसन्न सिंह और मि. W.C बनर्जी भी थे।

<u>शकुन्तला</u> — उसी वर्ष बाबू आशुतोष देव के मकान पर 'शकुन्तला' खेला गया था इसमें भाग लेने वालों में प्रिय माधव वसु मल्लिक के बड़े लड़के शरत्चन्द्र घोष और बिहारी बाबू थे। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार बंगाली नाटक के ने नेतागण शरत्चन्द्र घोष के साथ बाबू बिहारी लाल चटर्जी भी मिल गये।

चन्द्र' का योगेन्द्रनाथ मित्र ने 'बाबू नादरचन्द्र' का, बाबू राधा माधव कर ने 'विनोद बालिनी' का बाबू सुरेशचन्द्र मित्र ने 'लीलावती' का और बाबू अर्धेन्दु शेखर ने 'हर विलास' का बाबू महेन्द्रनाथ बोस और मोतीलाल सूर ने भी इस खेल में भाग लिया था

पहिला और दूसरा अंक नं २ पर बाबू श्यामबन पाल के मकान पर खेला गया था। तीसरा खेल श्यामबाजार घोष की गली में हुआ था और भी अन्य बहुत से खेल दीनानाथ चन्द्र मित्र के द्वारा लिखे गये थे।

इस कम्पनी का मुख्य व्यवस्थापक बाबू अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी, महेन्द्र लाल बोस मोतीलाल सूर, नागेन्द्र नाथ बनर्जी, कितेचन्द्र बनर्जी, राधामाधव कर, राधागोविन्द कर, भवदास सूर और अमृत लाल बोस थे।

कम्पनी का द्वितीय खेल नवीन तपस्विनी' था जिसमें कि अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी ने 'जलधर' बने थे। कम्पनी के तृतीय खेल — माइकेल का कृष्णा कुमारी था जिसमें कि बाबू गिरीश चन्द्र ने 'भीमसिंह' का पार्ट लिया था।

राष्ट्रीय नाटक मंडली नीलदर्पण — इन सज्जनों ने अपनी शक्तियों को स्थिर रंगमंच बनाने की ओर लगाया और जोरासांको के यहां 'सान्याल घर' नामक आंगन ४ मास के ठेके पर लिया। बाबू भुवन मोहन नियोगी के स्थान पर रिहर्सल किया गया। राष्ट्रीय नाटक मंडली का प्रथम खेल १८७२ की ७वीं दिसम्बर को हुआ और यह ही तिथि कलकत्ता में बंगाली नाटक का जन्म दिन माना जाता है। 'नील दर्पण' खेलने के लिये चुना गया। बाबू गिरिश चन्द्र घोष ने इसमें भाग न लिया क्योंकि वे चाहते थे कि यह नाटक बिल्कुल मुफ्त में और टिकिट बिना बेचे किया जाय।

राजा राधाकान्त देव — सान्याल घर का ठेका समाप्त हो जाने के बाद नाटक मंडली का स्थान राजा जी के शोभाबाजार के बहादुर राधाकान्त देव के मकान में बदल दिया गया। गिरिश चन्द्र घोष की उपस्थिति में मेयो होस्पिटल के साथ टाउन हाल में नील दर्पण खेला गया और हल्दई हौल में भी इसी समय पर खेल की व्यवस्था की गई। 'नीलदर्पण' नामक खेल १८७२ को ७वीं दिसम्बर को खेला गया जिसमें टिकिट भी लगाये गये पहिले धनी और भद्र पुरुष जिनको कि मुफ्त टिकिट मिलते थे वही देख पाते थे परन्तु टिकिट के बेचे जाने पर सर्व साधारण जनता ने भी इस बंगाली नाटक का अवलोकन किया इसीलिये राष्ट्रीय नाटक मंडली को प्रथम बंगालीय नाटक मंडली कहा जाता है। और १८७२ की ७वीं दिसम्बर को कलकत्ते के बंगाली नाटकों का जन्म दिन कहा जाता है। (अनूदित)

(असमाप्त)

तरुण भारत की विचार दिशा.

तरुण भारत क्या सोचता है इस विषय पर श्रीमान आर्थर मेयन ने डेली ग्राफ में लिखा है कि मैंने यूरोपियन नेताओं, शासकों, लेजिस्लेटिव कौंसिल के सभ्यों, विद्यार्थियों और हिन्दू मुसलिम नेताओं से इस विषय पर पूछा है पर १० लाख वर्गमील के लगभग क्षेत्र से आवृत, ३० करोड़ जनों से आकीर्ण भारतीयों के इस विषय पर खोजना सरल काम नहीं। मैंने भारतीय शिक्षित युवकों की नाड़ी परीक्षा की के लिये अनेक विद्वानों से पूछ कर यह निश्चित किया है कि शिक्षित जन समुदाय ३ प्रकार का है, आंग्ल, आंग्ल भारतीय, भारतीय। ये ३ विभागों में विभक्त हैं। पहिले विभाग में ६० हजार के लगभग सैनिक हैं। दूसरे आई. सी. एस आदि M.S पदवियों से सुसज्जित हैं। तीसरे बैंकों में आगाज का काम करते हैं और की फुटकर वस्तुएं बेच कर कि जीवननिर्वाह किया करते हैं।

यूरेशियन लोगों की हालत बुरी है। भारतीय शासन विभाग को भारतीय करण की नीति के कारण उसको स्पर्धा में भारतीयों ने गिरा रखा है। भारतीय लोग क्लर्क बनने में बड़े प्रवीण हैं पर ये लोग अंग्रेजी धाराप्रवाह पढ़ते हैं। यूनिवर्सिटी परीक्षा नहीं देते तथा उनकी गणित की भी योग्यता भारतीयों से न्यून है B.A फेल से भी कम है। मद्रास में हमारे प्रतिनिधि ने ६ हजार बेकार आंग्ल यूरेशियनों की अवस्था को अपनी आंखों से देखा है। उनमें से [illegible] शासक आंग्ल जाति और के आदेशों अनुसार पर होने पर भी भारतीयों के साथ प्रतियोगिता में पीछे पड़ गये हैं। वे लोग अपनी प्रान्तीय भाषाओं से सर्वथा अपरिचित हैं।

भारतीय प्रजा के दो विभाग हैं एक शिक्षित दूसरा अशिक्षित। सारे भारत में केवल २ करोड़ २० लाख आदमी पढ़ या लिख सकते हैं। इनमें से २५ लाख मनुष्य अंग्रेजी लिख या पढ़ सकते हैं।

<u>शिक्षा की मांग</u> – मैंने एक [illegible] कालेज के मुख्य व्यक्ति से बात की। उनका कहना था कि स्वराजिस्ट लोग मुख्य हमला कालेजों पर करते हैं। वे लोग कहते हैं कि इनके त्याग से एक वर्ष में स्वराज्य हासिल हो सकेगा। तदनुसार बहुतों ने कालेज छोड़े और फिर छोड़ कर आ भी गये। पर आज! वे कालेज बेशुमार भर रहे हैं। बम्बई के विल्सन कालेज में बाइबिल पढ़ाये जाने पर भी विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जाती है। आगरे के सेंट जोन्स कालेज में भी बाइबिल सम्बन्धी[illegible]

विजय वैजयन्ती.

विजय होने पर भी इन्हीं में ही हिन्दु मुसलमान और ईसाई विद्यार्थी पढ़ते हैं। भारतीय शिक्षाशास्त्री एक मत है कि इंग्लैण्ड की यूनिवर्सिटियों में चुने भारतीय विद्यार्थियों को जाकर स्नातक होना चाहिये। यह बात अंग्रेजों की दृष्टि में उत्तम है। भारत में १५ यूनिवर्सिटी हैं। भारतीय विद्यार्थी law पढ़ते हैं क्योंकि सरकार की नौकरी और पेन्शन के लिये। भारतीय विद्यार्थी अब व्यावसायिक विद्या की तरफ झुक रहे हैं।

इनका दूसरा काम भिन्न जाति तथा भिन्न धर्मों के मनुष्यों को समाज सेवा के लिये एकत्रित करना है। कलकत्ता में एक सप्ताह सामाजिक काम यह किया था कि फिजी से आने वाले कुली जो भारतीय भाई थे वहाँ रहते थे, उनको सन्तोष तथा आराम दिया। बम्बई में इनके एक होस्टल में मैंने कोलम्बो, त्रावनकोर, बंगलोर, हैदराबाद, पंजाब आदि के हिन्दु मुसलमान तथा क्रिश्चियन विद्यार्थी Y.M.C.A की शुभ छाया में विराजमान देखे। मैंने जाकर देखा उनका काम उत्साह पूर्ण था। [illegible] इर्विन ने कलकत्ते में एक डिनर पार्टी दी जिसमें भिन्न धर्मावलम्बी भी उपस्थित थे। बंगाल के मुसलमान नेता इण्डियन क्रिश्चियन एसोसियेशन के प्रधान के पास बैठे थे। श्री एस.के. सेन भी वहाँ विराजमान थे। उन्होंने उस एसोसियेशन के कल्याण की कामना की। इसमें बंगाल तथा भारतीय न्यायाधीशों ने भी भाग लिया था। ~~Y.M.C.A~~ Y.M.C.A द्वारा सब अतिथि सादर सत्कृत हुए थे। यह काम एक एकता का आश्चर्यजनक एवं प्रशंसनीय काम था.

सकाप्र.

यात्रा के अनुभव.

(श्री॰ श्वेतकेतु जी द्वारा)

वास्तव में इस दुनिया को मैंने इन्हीं छुट्टियों के दिनों में ही परखा। इस दुनिया में भले के साथ कहीं भलाई नहीं की जाती। हरेक मनुष्य दिनरात लूटने की फ़िक्र में रहता है। हम लोग चार दीवारों में रहते हुए कभी इस बात को नहीं जान सकते। इन छुट्टियों में पहिला अनुभव जम्मू स्टेशन से उतरते ही हुआ जो इस प्रकार है। बिस्तर बगल में दबाये मैं पक्की सड़क पर से शहर में जा रहा था कि सामने से आते हुए मनुष्य ने झुक कर पूछा क्या अभी उतरे हैं। मैंने कहा हां इसी गाड़ी से उतरा हूं। वह बोला - किधर से आगमन हुआ। मैंने कहा - हरिद्वार से आ रहा हूं। ओ हो धन्य हो तुम्हारे जैसे, तुम तो मुझे अवतार उतरे प्रतीत होते हो। सच, भगवान के अवतार उतर आये। कृपा कर २ मिनिट बात करने दीजिये। मैंने कहा - कीजिये। झट सड़क से नीचे उतर कर पास वाले पुल के नीचे जा बैठा - और उसने भी मुझको उचित आसन दिया - फिर लगा स्तुति पाठ करने और चरण छूने। मैंने कहा - कि नहीं - चरण न छूजिये। खैर बहुत इधर उधर हिलाने के बाद कहा कि लगभग २ महिने हुए मेरी एक स्त्री रह गई है, मैं तथा मेरी लड़की और ५ वर्ष का छोटा लड़का, इकले रह गए। तब से हम हाय २ करते हुए इधर उधर भटकते फिरते हैं। बड़ी कृपा होगी " २, ३ सेर आटा ही ले लूंगा। आप बिलकुल ईश्वर जैसे लगते हो, दयालु हो"। खैर, मैंने उससे स्त्री का नाम पूंछा वो बोला राधे। मैंने कहा - "मैं जम्मू आर्य समाज में सूचना दे दूंगा। शीघ्र ही राधे मिल जायगी। शोक न करो"। बिल्कुल रोने जैसा चेहरा बना कर वह बोला - "आप समझे नहीं, अच्छा - १, २ आने ही दे दीजिये, आटा ले लूंगा, भूखा हूं"। मैंने कहा "शोक न करो शीघ्र ही राधे मिल जायगी। मैं भी मंगता हूं इसलिये कुछ नहीं दे सकता।" मैं उठ कर चल दिया पीछे एक मनुष्य आता दिखाई दिया उसने राधे के पति से पूछा - "क्यों कुछ मिला" वह बोला - "नहीं।" मैं रुक गया मैंने उस शख्स से सारा हाल पूंछा :- वह बोला "मुझे भी ३ मास हुए यह मिला था मैं भी इसे ईश्वर अच्छा लगता था, खैर, मुझ से भी इसने १, २ आने मांगे। मैंने नहीं दिये बोला - भाई साहब यह तो ऐसे ही ठगता फिरता है। मैंने कहा - हां

राधे को भेज दिया होगा।

एक कुल के ब्रह्मचारी कुटुम्ब के साथ दुष्ट व्यवहार करेंगे तभी सफल होंगे नहीं तो नहीं

दूसरा मेरा अनुभव यह है कि धनी लोगों पर कभी आश्रित होओ। मैं २ धनियों के पास गया पहिले ने ११) दिये दूसरे के महल में मैं २ दिन रहा क्या देखा !!! एक तरफ गौ शाला देखी दूसरी तरफ अश्वशाला देखी अलग भोजनालय देखा किसी बात का दुःख नहीं। केवल २ आदमी इस महल में रहते थे। मुझको भी २ दिन तक इस महल का सुख, गौओं का दूध, भोजनालय का सद्भोजन चखना पड़ा। सोने के लिये मोटे २ गद्दे के पलंग सबसे ऊपरले मंजिल में बिछाये गये। सोचो जरा – कि यदि ये १० हजार भी देना चाहता तो बड़ी बात नहीं जब दान का समय आया तो २) ही दिये। बड़े आश्चर्य से मैंने कहा शाह जी! आपसे तो लोग २००) की आशा दिलाते थे। वे अकड़ कर बोले – वे मूर्ख हैं, उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आता। उन्हें नाराज जान, वही ये २) भीख लेकर मैं वहां से रफूचक्कर हुआ। पीछे पता लगा कि यही शाह जुए में १०, हजार तक हार जाते हैं चोर लूट ले जाते हैं। पर इसकी आत्मा पुण्य-कार्य करने के लिये नहीं झुकती। तीसरे शाह ने भी अच्छा खिलाया, सुलाया और २ स्नान कराया। दिये ५) ही। बात यह है ज्यों २ धन आता जाता है त्यों २ आदमी कंजूस होता जाता है। परमेश्वर! कभी इतना धनी मत बनाना कि वे अपनी रोटी देना भी बन्द कर दें। दूसरी तरफ साधारण मनुष्य के पास गया उसने शीघ्र ही १५) दे दिये जो कि मेरी इस यात्रा की सबसे भारी रकम थी।

तृतीय मेरा अनुभव यह है कि योग्यता बिना दान मिलना बड़ा कठिन है 'अकबर' की बात है एक डाक्टर साहब से दान लेने गया – उन्होंने उचित आसन देने के बाद ३ प्रश्न किये – (१) संध्या में गायत्री मन्त्र एक बार या उससे भी अधिक बार पढ़ना चाहिये (२) वेद मंत्रों की टीकायें क्यों हैं (३) एक वेद का मंत्र दूसरे वेद में क्यों है। क्या ईश्वर को याद नहीं रहा कि पहिले ये मंत्र लिख चुका हूं। डाक्टर साहब के कठोर प्रश्नों का जवाब बड़ी प्रबलता से दिया, वे बड़े सन्तुष्ट हुए। शायद आप में से बहुत से वैसे जवाब न दे सकते हों अतः संक्षेप में उत्तर लिख देता हूं।

(१) संध्या में गायत्री मंत्र एक बार ही पढ़ना चाहिये। अगर अधिक बार पढ़ना चाहते हो तो सब मंत्रों का भी उतने ही बार पाठ करें। पर इतना संध्या करते को उनके पास समय न था।

(२) वेद की टीकायें व्याकरण में काम आती हैं। आपको शायद व्याकरण का अच्छा ज्ञान नहीं – बोले – मैं व्याकरण नहीं पढ़ा हुआ हूं। मैंने मुस्करा कर कहा – तभी शंका हुई है।

(शेष ४८ पृष्ठ १८)

फूल तथा पंखड़ियाँ

मुझे बुलाले अपने पास — टेक —

भेज रहा मैं सन्देशों को, पा न सका हूँ तुझ को मैं,
दिल में मेरे लगा हुआ है, तेरे मिलने का विश्वास ॥१॥

सोचा करता हूँ कि तू है, जीवन-नद के परले पार,
सुना हुआ है कवियों की तू, मुग्ध वाणी में करता वास ॥२॥

दुखिया होकर अंधेरे में, खोज रहा हूँ तुझ को नाथ!
हाथ बढ़ाले मुझे बिठाले, मेरे जीवन के तू आस ॥३॥

प्यासा मैं हूं बना बटोही, राज राज तू सब का है,
मेद मिटा कर जल्द बुझादे, मरुस्थली की मेरी प्यास ॥४॥

जैसा हूँ मैं हूँ बस तेरा, मुझे बुलाने में क्यों बेला,
आ पहुँचूंगा बिना बुलाए, बन कर तेरा विरला दास ॥५॥

परिवर्तन के पट में नटखट। रंग जमाया करता है,
कहीं रुलाकर, कहीं हँसाता मेरा अविरल उच्छ्वास ॥६॥

"अप्रबुद्ध"

अज्ञेय

विदित है हम को कहते कई,
विदित है उन को कुछ भी नहीं।
कुछ नहीं हम जान सके उसे,
सुजन वे, उनको उस का पता ॥१॥

× × ×

भटकते जन हैं इस में सदा
सकल सार यही निगमान्त का ॥२॥

"घन

अर्पण

तज मन मातृभूमि हित प्राणा।
जो कुछ जीवन का सुख पाना॥

जग जीवन के जाल भवर मे।
भूला फिरे मसताना॥

लूट मची है चरण सुधा की।
सोवत है नादाना॥

फिर पछताये हाथ न ऐ है।
बिरथा है आसू बहाना॥

मत डर मूरख मौत के मुह से।
इक दिन है मर जाना॥

जिस जननी ने जन्म दिया रे।
गुन नित उस के गाना॥

भक्ति भाव से झुक कर प्रेमी।
चरणन सीस नवाना॥

प्रेमी

डि॰ भास्कर

हे गोल मोल! तुम कितने नीरस हो हे जड तुम कितने निष्ठुर हो, तुम्हें शर्म नहीं आती। पानी मे घण्टो बैठ कर भी तुम सरस न बन पाये। धन्य तुम्हारी जडता॥

हे रसिक! ओ भावुको के सरताज, अरे रसिक-मूर्धन्य ठहर तुझे सरसता सिखाऊँ- अभी उछल पड़ तो सब भावुक छिटक पडे॥

नन्द

गगनाङ्गण में

नव वर्ष — विजय वैजयन्ती आज सातवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। विगत छः वर्षों की आलोचना करना हमारा विषय नहीं है। विजय वैजयन्ती ने जो व्रत लिया था उसको निबाहने में कोई कसर नहीं की गई। सफलता कहाँ तक मिली इसका निर्णय भावी के कार्यकर्ता और आप पुरुष करेंगे पर हम कहना चाहते हैं कि महाविद्यालय दैनिक को विजय वैजयन्ती में सम्मिलित करने का सौभाग्य हमें ही प्राप्त है। वह सम्मिलित स्थायी नहीं था यह केवल महाविद्यालय नागवर्धिनी के कार्यकर्ताओं का विनोद था। वह सम्मिलन दो वर्षों तक रहा। इस वर्ष से वह सम्मिलन का अन्त होगया। अब सर्वथा स्वतंत्र है। इसका उत्तरदायित्व केवल अब हमारे सिर पर है। अच्छा या बुरा जो कुछ है वह आपके आगे है। नवीन वर्ष में पग रखते हुए हम इस अवसर पर निकलने वाले सहयोगियों का विशेषतः अपने पुराने साथी महाविद्यालय दैनिक का स्वागत करते हैं।

स्वागत — हमारे सौभाग्य की बात है कि विजय वैजयन्ती के संस्थापक श्री पं जयदेव जी विद्यालंकार गुरुकुल के इस उत्सव पर पधारे हुए हैं। इस पुण्य अवसर पर कुल बन्धुओं की ओर से तथा विशेषतः विजय-वैजयन्ती के वर्तमान कार्यकर्ताओं की ओर से हम पण्डित जी का हार्दिक स्वागत करते हैं। हमें विश्वास है कि पण्डित जी का आगमन विजय वैजयन्ती के साथ उनके पुराने सम्बन्ध को नया कर और अधिक दृढ़ कर देगा।

नवी — कुल में एक नवीन परिषद् का जन्म हुआ है इसका नाम होगा अर्थशास्त्र परिषद्। सम्भवतः यह परिषद् विद्यालय की सभा होगी। अभी परिषद् परिषद् के सभापति महोदय की कापी पर ही है। पर हम उसके प्रगट होने से पूर्व एक बात कहना चाहते हैं कि जो काम इस परिषद् से लिया जारहा है यदि उसी काम को विज्ञान परिषद् के नीचे अर्थशास्त्र उपसमिति बनाकर लिया जाय तो विज्ञान परिषद् में भी जान आजायेगी वरना रही सही जान भी खतरे में पड़ जायगी। आयुर्वेद परिषद् पहले विद्यालय की थी पर उसने आश्रम में प्रवेश किया फल कुछ विशेष न हुआ। विज्ञान परिषद् को जहां धक्का लगा वहां आयुर्वेद परिषद् भी साल में दो तीन अधिवेशन करने के सिवाय कुछ नहीं कर रही। यदि आयुर्वेद परिषद् के सम्मिलक विज्ञान परिषद् के अन्दर रह कर ही काम करते रहते तो दोनों संस्था भी जीवित

रहती और आयुर्वेद परिषद् का कार्य सब की सहानुभूति भी पाता। आज विज्ञानपरिषद् की जो अवस्था है उस को नज़र में रखते हुए भी हम कहना चाहते हैं कि अर्थशास्त्री भाई यदि विज्ञान परिषद् के अन्दर रह कर अपने क्षेत्र में काम करें तो उन का गौरव घटेगा नहीं बढ़ेगा ही। चीज बनानी है पर बनी चीज को स्थिर करना और सुचारु रूप से चलाना अधिक कठिन है।

श्रम जीवी दल — कुल में श्रमजीवी दल का प्रारम्भ हुआ है इस के अध्यक्ष भी क्रीड़ा विभाग के अध्यक्ष हैं। अभी यह केवल भण्डार के लिए लकड़ी लाने का काम कर रहा है। लकड़ी लाने का ठेका लेना इस लिए कि क्रीड़ा विभाग को आमदनी होगी खिलाड़ी भाइयों को खींच सकेगा। पर जिस भाव की जरूरत है वह इस से नहीं आ सकेगा। हम चाहते हैं कि यह व्यावहारिक शिक्षा का कार्य निरन्तर जारी रहे। बेकारी की समस्या प्रतिदिन अधिकाधिक चिन्ताजनक होती जा रही है। शिक्षित बेकारों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है यदि गुरुकुल के स्नातक भी इस की संख्या बढ़ाने में सहायक हों तो गुरुकुल के लिए शोभाजनक न होगा। जब अन्य राष्ट्रीय विद्यालयों ने इस समस्या को हल करने की ओर पग बढ़ाया है और सफलता लाभ कर रहे हैं तब हमारा पीछे रहना हानिकर होगा। लकड़ी ढोने और पानी भरने से यह समस्या हल न होगी। यदि इस के साथ दस्तकारी का काम प्रारम्भ कर दिया जाय तो जहां यह शिक्षा होगी वहां यह एक आकर्षक काम होगा। तथा यह विभिन्नता भी रहेगी और प्रसन्नता पूर्वक सब काम करेंगे। खेल को उन्नत बनाने के साथ यदि इस समस्या की ओर ध्यान दिया जाय तो स्नातक अपने जीवन में जहां स्वतंत्र होंगे वहां समाज के लिए भी ज्यादा उपयोगी होंगे।

हमारे मान्य अतिथि — श्रीमती लैस्टर और उन के भतीजे श्री हौग सत्याग्रहाश्रम से आज या कल कुल में पधार रहे हैं। म. गान्धी के आश्रम में आप कुछ महीनों से निवास कर रही हैं। महात्मा जी के चरणों में विदेश से आने वाली महिलाओं में आप का दूसरा नम्बर है। भगवान् करें कि श्रीमती का आगमन हमारे कुल का सत्याग्रहाश्रम से सम्बन्ध दृढ़ करने में सहायक हो।

इन के बाद कल या परसों नाभा के भूतपूर्व महाराज श्री रिपुदमन सिंह जी भी पधार रहे हैं। आप पर अभी दूसरा प्रहार हुआ है। आप रियासत की प्रजा होने के कारण प्रान्तीय कौंसिल और भारतीय व्यवस्थापिका परिषद् की उम्मेदवारी के अयोग्य ठहराए गए हैं। आपका स्वातंत्र्य प्रेम प्रगट है। महाराज का आगमन कुल के लिए तथा महाराज के लिए शुभ हो। नवीन सम्बन्ध प्रतिदिन बढ़ता रहे। हम मान्य अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

स्नातक भाई अफ्रीका में — स्नातक कृष्णचन्द्र जी विद्यालंकार गत वर्ष से अफ्रीका में हैं। आप अपने समय में यहां क्रिकेट दल के उत्तम रत्न थे। आप को शताब्दी की पराजय से जो धक्का लगा था उस की वेदना उन के पत्र के प्रत्येक शब्द से सुनाई देती है। वेदना में जादू है वह उस पत्र में मौजूद है। आपने अपने पत्र में वर्तमान खिलाड़ियों को एक सन्देश भेजा है। हमें विश्वास है कि यह सन्देश वर्तमान समय में उठी छोटी २ असन्तोष लहरों को शान्त कर सकेगा और सब एक भाव से कार्य करने में अग्रसर होंगे।

महान् भारत — श्री यदुनाथ सरकार की अध्यक्षता में महान् भारत संघ की स्थापना हुई है। इस के संरक्षकों में महामना मालवीय जी और बिड़ला सदृश महानुभाव हैं। इस संघ का उद्देश्य प्राचीन महान् भारतीय सभ्यता को ढूंढना है। तुर्किस्तान, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, अनाम, मैक्सिको और पेरु में प्राचीन समय में भारतीय जाकर बसे थे। उन्हों ने जिस महान् भारत की रचना की थी उस के भग्नावशेष विद्यमान हैं। यह संघ उसी महान् भारत की खोज करेगा जिस को अब तक यूरोपियन विद्वान् करते रहे हैं। यह संघ प्रतिवर्ष भिन्न २ देशों में विद्वानों को भेजेगा। प्रत्येक देश में एक ब्यूरो स्थापित किया जायेगा। यह तत्सम्बन्धी सर्व सामग्री को विद्वानों के लिए उपस्थित करेगा। इस संघ ने यूरोप में स्थित भारतीय विद्वानों और वहां के विद्वानों को सम्मिलित कर लिया है। प्रो. विनय कुमार सरकार इस संघ के एक प्रमुख कार्यकर्ता हैं अतः इस की सफलता में सन्देह करने का कोई अवसर नहीं।

उल्लेखनीय — यूनाइटेड किंगडम का प्रत्येक आदमी प्रतिवर्ष १०० सेब ७० सन्तरे ३० केले खाता है। अंगूर आम और मेवा इस के अलावा हैं। जिस देश के लोग इतना खाएं उन की जीवन शक्ति हम से दुगनी हो तो क्या आश्चर्य है।

इधर भारत में ६० करोड़ आदमी एक समय भी भरपेट भोजन नहीं पाते। जीवन शक्ति प्रति दिन क्षीण होती जा रही है। जब कि हमारा देश संसार को भोजन देने वाला है। यूनाइटेड किंगडम जिसके पास तीन महीने भर का भी खाने का अपनी भूमि में नहीं पैदा होता वहाँ के निवासी प्रति तीसरे दिन एक सेब खा रहे हैं। गुलामी और स्वतंत्रता में यह भेद है।